# दर्दे-दिल

[ उर्दू के प्रसिद्ध कवियों की, दिल तड़पाने वाली, दिल पर चुनी हुई कविताओं का लाजवाब संग्रह ]

सम्पादक—

श्री सुखदेव प्रसाद सिनहा 'बिस्मिल' इलाहाबादी

प्रकाशक—

सरस्वती-सदन

दारागंज प्रयाग

प्रथम बार ] अगस्त, १९३५ [ मूल्य २) दो रुपया

प्रकाशक—
श्री हर्षवर्द्धन सुक्कुल
व्यवस्थापक, सरस्वती सदन,
दारागंज, प्रयाग।

मुद्रक—
रघुनाथ प्रसाद वर्मा
नागरी प्रेस, दारागंज, प्रयाग।

# दिल की बात

'दिल' एक अजीब चीज़ है—'दिल' की बात ही निराली है। 'दिल' की मर्यादा बहुत बड़ी है। 'दिल' ऐसी वैसी चीज़ नहीं। 'दिल' वाले 'दिल' की क़द्र करते हैं। 'दिल' नहीं तो कुछ नहीं। 'दिल' मनुष्य के जीवन की कसौटी है। 'दिल' ईश्वर से मिलाता है। 'दिल' सब कुछ कर सकता है। 'दिल' ही का संसार में सारा खेल है। 'दिल' ही का प्रेम की दुनिया में महत्व है। 'दिल' ही पर दुनिया की नज़र रहती है। 'दिल' न होता तो संसार का आनन्द न मिलता। 'दिल' से बड़े बड़े तमाशे देखने को मिलते हैं 'दिल' ही वह आइना है जिस में मुहब्बत की जीती जागती तस्वीर नज़र आती है। 'दिल' की आन-बान का क्या कहना। 'दिल' का जाँचना और परखना सहल काम नहीं है। 'दिल' ही जीवन का रहस्य है। 'दिल' पर सौ रंग से, हज़ार ढंग से, लाखों उमङ्गों से कविताएँ की गई हैं। मैंने इस कारण 'दिल' पर नज़र डालते हुए, 'दिल' पर जो अच्छे-अच्छे उर्दू के कवि हैं उन्हीं की कविताओं का, जहाँ तक मुझे मिल सकी, 'दिल' से संग्रह किया है। इसी से इस का नाम 'दर्दे-दिल' रक्खा है। यह संग्रह कैसा है, मैं क्या बताऊँ, कविता के पारखी इसको बता सकते, और परख सकते हैं—'दिल' की दुनिया में विचर कर तरह तरह

के 'दिल' चुनकर पाठकों के सामने रखता हूँ—किस 'दिल' से मैंने संग्रह किया है यह मेरा ही 'दिल' जानता है।

हिन्दी-संसार में जिस तरह मेरी रचनाओं और संग्रह का आदर हुआ है उसी तरह आशा है कि इस संग्रह का भी स्वागत होगा—'दिल' भी यही 'दिल' से कहता है।

मेरे परम मित्र श्री० पं० विद्याभास्कर जी सुकुल के बार बार अनुरोध से और 'दिल' से आग्रह करने पर यह संग्रह मैंने तैयार किया है। इसका श्रेय उन्हीं को है, मुझे नहीं है। और उन्हीं के बार बार तक़ाजे से मैं और अच्छे अच्छे उर्दू कवियों की कविताओं का संग्रह बहुत जल्द करने वाला हूँ जो पुस्तक के रूप में पाठकों के समाने आएगा—यह सब जिन्दगी के हाथ में है—

अंत में मैं अपने पुराने मित्र पं० माताप्रसाद जी दुबे को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनकी सहायता से उर्दू लिपि से यह संग्रह हिन्दी लिपि में हुआ है—अब मैं अपना एक पद कह कर बिदा मांगता हूँ

दिल में तरह तरह की तमन्ना लिए हुए,
बैठा हूँ शौक़े शौक़ की दुनिया लिए हुए।

सुख-निवास
नागपंचमी
प्रयाग
४—८—३५

कविता प्रेमियों का दास—
'बिस्मिल' इलाहाबादी

सस्नेह भेंट ——

# दर्दे-दिल



बुताने माहवश[1] उजड़ी हुई मंज़िल में रहते हैं,
कि जिसकी जान जाती है उसी के दिल में रहते हैं।
हज़ारों हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकतीं,
बहुत अरमान ऐसे हैं कि दिल के दिल में रहते हैं।
ख़ुदा रक्खे मुहब्बत ने किए आबाद दोनों घर,
मैं उनके दिल में रहता हूँ, वह मेरे दिल में रहते हैं।
कोई नामों निशां पूछे तो ऐ क़ासिद बता देना,
तख़ल्लुस[2] "दाग़" है और आशिकों के दिल में रहते हैं।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

---

१—चन्द्रमुखी, २—उपनाम।

मुझे सब न्यामतें[1] दुनिया की मिल जायें तो मिल जायें,
तेरी जादू भरी आंखें मेरे हसरत भरे दिल से।
खुदाई[2] भर का ज़िम्मा तो यह बन्दा ले नहीं सकता,
कोई चाहे न चाहे, आपको चाहूँगा मैं दिल से।
वह फ़रमाते थे यह अरमां तेरा निकलेगा मुश्किल से,
जब आँखों से लड़ी आंखें, तो दिल खुद मिल गया दिल से।

—'नूह' नारवी

× × ×

क्या कहूँ जब वह कहें बाहें गले में डाल कर,
चाहते हो या नहीं तुम चाहते दिल से मुझे।
मैंने जिस पर जान दी थी वह भी उस पर मर मिटा,
एक रूहानी[3] ताल्लुक हो गया दिल से मुझे।
दो तरह का इश्क़ है लेकिन वही है एक इश्क़,
मेरे दिल से हो तुझे या तेरे दिल से हो मुझे।
खाक हूँगा खाक होकर खाक में मिल जाऊँगा,
क्यों गिराते हैं नज़र से आप क्यों दिल से मुझे।

× × ×

खून रो देता है यकसर खूने हसरत देखकर,
पूछते क्या हो तुम अपने ग़मज़दे के दिल का रंग।

---

१—अच्छी अच्छी चीज़ें, २—संसार, ३—आन्तरिक।

एक सूरत एक पहलू पर कभी रहता नहीं,
आज कुछ है और कल कुछ है हमारे दिल का रंग।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

छूटती है आदमी से "दाग़" कब हुब्बे[1]-वतन,
गो नहीं हूँ मैं, मगर हरदम मेरा दिल घर में है।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

जिस तरफ़ उट्ठी निगाहें उस तरफ़ मंज़र नया,
एक तुम्हारी शक्ल सौ शक्लों से मेरे दिल में है।

—'नूह' नारवी

× × ×

उसका नूर[2], उसका ज़हूर, उसका क़याम, उसका मुक़ाम,
कौन से घर में नहीं, या कौन से दिल में नहीं।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

लेते हैं लोग अपनी दिली बात के मज़े,
मेरा मज़ा यह है कि मेरे दिल में कुछ नहीं।

—'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

---

१—देश-प्रेम, २—ज्योति।

नाम पाते हैं मुहब्बत में जो मिट जाते हैं,
जिसके होने का गुमां भी न रहे दिल है वही।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

दूर से आँखें लड़ाने का नतीजा कुछ नहीं,
दिल तुम्हारे पास हो, तुम हो हमारे दिल के पास।
हम रहें महफ़िल में क्यों, हम जायं क्यों महफ़िल के पास,
दिल हमारे पास है, वह हैं हमारे दिल के पास।

× × ×

इश्क़ में तक़दीर ने डाला यह कैसा तफ़्रक़ा[1],
दिल हुआ मुझसे जुदा, मैं होगया दिल से अलग।

× × ×

रख दिया बहरे-तसल्ली[2] आपने दिल पर जो हाथ,
तो यह मैं समझा कि पैदा दूसरा दिल होगया।

—'नूह' नारवी

× × ×

यह दोआयें मांगता था, आज एक ईज़ा तलब,
दर्द भी दिल में रहे, बेदर्द भी दिल में रहे!

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

---

१—वियोग, २—आराम के लिए।

और क्या जाने कोई दर्दे मोहब्बत का मज़ा,
दिल तुझे जिसने दिया, इसको उसी के दिल से पूछ।
दिल मेरा सब कुछ बताने के लिए मौजूद है,
पूछना क्या चाहिए, तुझको यह अपने दिल से पूछ।
पहले मेरा हाल सुन, फिर सुनके मेरा हाल देख,
देख कर फिर ग़ौर कर, फिर ग़ौर करके दिल से पूछ।
इस तरह शायद बता दे यह कुछ अपना राज़े इश्क़,
बैठ कर पहलू में दिल का हाल मेरे दिल से पूछ।
हाय यह उठती जवानी, उफ़ यह आग़ाज़े शबाब,[1]
देख आंखों से मेरी, अपने को मेरे दिल से पूछ।

—'नूह' नारवी

× × ×

हुस्न में और इश्क़ में गर है तो मुश्किल एक है,
उस तरफ़ सारी ख़ुदाई है, इधर दिल एक है।

—'अज़ीज़' लखनवी

× × ×

तेरी छोटी बड़ी तस्वीरें सब में देख कर समझा,
कि जितने आइने हैं साफ़ मेरे दिल के टुकड़े हैं।

१—जवानी का उभार।

जो पत्थर से सिवा है इन हसीनों का कलेजा है,
जो शीशे से भी नाज़ुक है वह मेरे दिल के टुकड़े हैं।

—'शफ़क़' अमादपुरी

× × ×

मेरी तक़दीर का लड़ना है बस आंखों के लड़ने पर,
कभी नज़रें जो मिलती हैं, तो दिल भी दिल से मिलता है।

—'नूह' नारवी

× × ×

अदायें उनकी नश्तर हैं, निगाहें उनकी खंजर हैं,
हिफ़ाज़त[1] कर नहीं सकता हसीनों से कोई दिल की।
न जाना आज तक हमने, कि राज़े[2] इश्क़ क्या शै है,
कहानी हम न समझे आज तक हसरत भरे दिल की।

× × ×

तुम निकालो उसको दिल से यह तुम्हारा काम है,
यह नहीं मुमकिन करे तुमको 'शफ़क़' दिल से अलग।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

क्या उठायें फ़ायदा और उल्फ़ते कामिल से हम,
उसके दिल की बात, सुन लेते हैं अपने दिल से हम।

---

१—बचाव, २—प्रेम का भेद।

सैकड़ों जुल्मों सितम ढाते हो मेरी जान पर,
और फिर कहते हो, तुझको चाहते हैं दिल से हम।

× × ×

दर्द-उल्फ़त[1] के जो दो हिस्से हों तो आए मज़ा,
एक मेरे दिल में रहे, एक आपके दिल में रहे।
आरज़ू है सिर्फ इतनी ऐ ख्याले हुस्न यार,
हर घड़ी, हर वक्त, हर दम तू मेरे दिल में रहे।

× × ×

यही अरमान है दिल का, यही आंखों को हसरत है,
बसो आकर मेरी आंखों में ठहरो तुम मेरे दिल में।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

शेख अगर क़ाबे में खुश, हैं बरहमन बुतखाने में,
अपने अपने तौर पर हर शख्श बहलाता है दिल।
क़स्द करता हूँ जो उठने का तो फ़रमाते हैं वह,
और बैठो दो घड़ी साहब कि घबराता है दिल।
यह नहीं कहते यहीं रह जाओ अब तुम रात को,
बस इन्हीं बातों से "अकबर" मेरा जल जाता है दिल।

—'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

---

1—प्रेम की पीड़ा।

निगाहे नाज़ क़ातिल में भी हो अन्दाज़ क़ातिल के,
उधर आँखें फिरीं, और इस तरफ़ टुकड़े हुए दिल के।
जिन्हें तुम आते जाते राह में पामाल[1] करते हो,
वह टुकड़े हैं कलेजे के, वह टुकड़े हैं मेरे दिल के।

× × ×

तुम न थे पहलू में तो पहलू में कोई भी न था।
तुम जो हो पहलू में तो पहलू में मेरा दिल भी है,
शौक़ से ले जाइये, ले जाइये, ले जाइये।
आप ही की जान भी है, आप ही का दिल भी है,
उसको दे दूं मैं किसे, इसको निकालूं किस तरह।
दिल भी है पहलू में, दिल में मुद्दआये[2] दिल भी है,

× × ×

वह लिये जाते हैं दिल को अपने साथ,
देखता जाता है, मेरा दिल मुझे
—'नूह' नारवी

× × ×

यह उनसे कह गया एक मिलने वाला खाक में मिल के,
तुम्हारे काम आयेंगे, यही ज़र्रे मेरे दिल के।
किसी को अपनी बज़्मे नाज़ की रौनक बढ़ानी थी,
नुमाइश में, वहाँ रक्खे गये, टुकड़े मेरे दिल के।

---

१—पाँव से रगड़ना, २—मतलब।

जो आये हो, तो हाथों को उठाकर फ़ातिहा पढ़ लो,
यह है 'बिस्मिल' की तुरबत[1] दफ़्न हैं टुकड़े यहीं दिल के।

× × ×

कहने सुनने के लिए यों तो हैं दिल वाले बहुत,
डाल दे जो दिल में दिल ऐसा किसी का दिल भी है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

मुझे तारों भरी रातों को जब तुम याद आते हो,
बैठा देता है मुझको दर्द उठ उठ कर मेरे दिल में।
कभी जब भूलने वालों को मैं दिल से भुलाता हूँ,
इज़ाफ़ा[2] और हो जाता है इस बेताबिये[3] दिल में।

—'अरशद' जालन्धरी

× × ×

इसको कहते हैं मोहब्बत, इसका उल्फ़त नाम है,
दिलरुबा होकर रहा करते हो मेरे दिल से दूर।

× × ×

न पूछो, हम[4] नशीनो, बस यही हालत है मेरी भी,
कभी देखा है उठना दर्द का, और बैठना दिल का।

—'खुरशीद' लखनवी

× × ×

हमारे दिल को लेकर शौक़ से महफ़िल में तुम रक्खो,
मगर जो कुछ हो दिल की बात उसको दिल में तुम रक्खो।

---

१—क़ब्र, २—बढ़ती, ३—बेचैनी, ४—साथी।

यह घर हाज़िर है क्यों ग़ैरों को उस मुशकिल में तुम रक्खो,
निकालो अपने तरकश से हमारे दिल में तुम रक्खो।
अभी यह जांचता हूँ मैं जफ़ा क्या है वफ़ा क्या है,
तुम्हें दिल दूंगा इत्मीनान अपने दिल में तुम रक्खो।
मुझे इज़हारे ग़म से इस तरह उस शोख़ ने रोका,
यह दिल का राज़ है दिल में छुपावो दिल में तुम रक्खो।
यह मिट जायेगा ख़ुद मिट कर सफ़ाई अपनी कर लेगा,
मेरे दिल की तरफ़ से क्यों कुदूरत दिल में तुम रक्खो।
बहुत अच्छी यही तदबीर है रफ़ये[1] कुदूरत[2] की,
न अपने दिल में हम रक्खें न अपने दिल में तुम रक्खो।
मोहब्बत के लिये हाजत नहीं ज़िक्रे मुहब्बत की,
ज़ुबां से क्यों निकालो इसको अपने दिल में तुम रक्खो।
अगर क़िस्मत है यावर तो वह दिन भी आये जाते हैं,
अदावत की जगह मेरी मोहब्बत दिल में तुम रक्खो।
तुम्हें दिल दे रहा हूँ मैं तो मतलब क्या है और इसका,
यह मतलब है कि मेरी याद अपने दिल में तुम रक्खो।
ज़रूरत ऐसे क़ैदी की लिये क्या क़ैदख़ाने की,
गिरफ़्तारे मोहब्बत को बस अपने दिल में तुम रक्खो।

—'नूह' नारवी

× × ×

१—दूर करना, २—मैल।

अरज़े[1] नयाज़े इश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा,
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वह दिल नहीं रहा।

× × ×

देखना तक़रीर[2] की लज़्ज़त[3] कि जो उसने कहा,
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है।

—'ग़ालिब' देहलवी

× × ×

अच्छी सूरत पे ग़ज़ब टूट के आना दिल का,
याद आता है हमें हाय ज़माना दिल का।

× × ×

पूरी मेंहदी भी लगानी नहीं आती अब तक,
क्यों कर आया तुझे ग़ैरों से लगाना दिल का।
निगहे शर्म को बेताब[4] किया, काम किया,
रंग लाया तेरी आँखों में समाना दिल का।
हूर की शक्ल हो तुम, नूर[5] के पुतले हो तुम,
और इस पर तुम्हें आता है जलाना दिल का।
बेदिली का जो कहा हाल तो फ़रमाते हैं,
कर लिया तूने कहीं और ठिकाना दिल का।

---

१—नम्र निवेदन, २—बातचीत, ३—स्वाद, ४—बेचैन, ५—ज्योति।

बाद मुद्दत के यह ऐ 'दाग़' समझ में आया,
वही दाना[1] है, कहा जिसने न माना दिल का।
—'दाग़' देहलवी

× × ×

इन शोख़[2] हसीनों पे जो मायल[3] नहीं होता,
कुछ और बला होती है, वह दिल नहीं होता।
बिस्मिल[4] तो हुए सैकड़ों ही सर्द तड़प कर,
ठंडा मेरे क़ातिल का मगर दिल नहीं होता।
दिल मुझसे लिया है तो ज़रा बोलिये हँसिये,
चुटकी में मसलने के लिये दिल नहीं होता।
कहते हैं हम आइने में हुस्न अपना न देखें,
अच्छी कही, माशूकों के क्या दिल नहीं होता ?
आशिक़ के बहल जाने को इतना भी है काफ़ी,
ग़म दिल का तो देखा है, अगर दिल नहीं होता।
फ़रियाद करूँ दिल के सताने की उसी से,
राज़ी मगर इस पर भी मेरा दिल नहीं होता।
कहते हैं कि दिल दे के तड़पते हैं जो आशिक़,
होता है कहाँ दर्द, अगर दिल नहीं होता।
राहत[5] का निकलता नहीं इसकी कोई पहलू,
मायूस[6] भी कम्बख़्त मेरा दिल नहीं होता।

1—बुद्धिमान, 2—चंचल, 3—ध्यान देना, 4—विकल, 5—आराम, 6—निराश।

तीर उसने लगाया वह पड़ा आके जिगर पर,
बचपन है वह क्या जाने इधर दिल नहीं होता।
जब दर्दे-मुहब्बत में यह लज़्ज़त है तो यारब,[1]
हर अज़्वे[2] में, हर जोड़ में क्यों दिल नहीं होता।
तुम और कोई काम 'अमीर' इसको सिखा दो,
तड़पाने, तड़पने के लिए दिल नहीं होता।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

ऐशो-इशरत[3] में उधर है तो मुसीबत है इधर
एक होकर कभी उनका है कभी दिल अपना।
बाग़ में फ़सले[4] ख़िज़ां और नशेमन[5] वीरान,[6]
बाग़ से छूटते ही छूट गया दिल अपना।
ख़ाक में उसको मिलाएँगे, न देंगे हरगिज़,
आपका इसमें इजारा तो नहीं दिल अपना।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

बोले वह सीने पे मेरे रख के हाथ,
कहिए अब तो इज़्तराबे[7] दिल गया।

---

१—ईश्वर, २—बदन का हिस्सा, ३—आनन्द, ४—पतझड़ का ज़माना, ५—घोंसला, ६—उजड़ा हुआ, ७—बेक़रारी।

## दर्दे-दिल

जमा हैं सीने में पैकाँ तीर के,
सैकड़ों दिल हैं अगर एक दिल गया।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

क्या दिलावर है कोई उसका कलेजा देखे,
जिसने बेताब मुहब्बत में मेरा दिल देखा।
उसने जब हुक्म दिया था तुझे मर जाना था,
'दाग़' तू दे न सका जान तेरा दिल देखा।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

नावके[1] नाज़ से मुश्किल है बचाना दिल का,
दर्द उठ उठ के बताता है ठिकाना दिल का।
कहते हैं क्या मैं कहूँ सुन के फ़साना[2] दिल का,
कहीं झगड़ा कहीं दुखड़ा है पुराना दिल का।
हाय वह पहली मुलाक़ात में मेरा रुकना,
और उसका वह लगावट से बढ़ाना दिल का।
सीना छलनी किये देती हैं निगाहें उनकी,
ढूंढ़ते फिरते हैं यह तीर ठिकाना दिल का।
जी लगे आपका ऐसा, कि कभी जी न भरे,
दिल लगा कर जो सुनें आप फ़साना दिल का।

1—तीर 2—कहानी।

दिल मेरा लेके दिखा दी मुझे मुट्ठी खाली,
फिर कहा देख लिया हाथ से जाना दिल का।
तीर पर तीर लगा कर वह कहा करते हैं,
क्यों जी तुम खेल समझते थे लगाना दिल का।

'अमीर' लखनवी

× × ×

जुबां हिलाओ तो होजाय फ़ैसला दिल का,
अब आ चुका है लबों पर मोआमला दिल का।
किसी से क्या हो तपिश[1] में मुक़ाबिला दिल का,
जिगर को आँख दिखाता है, आबला[2] दिल का।
खुदा के वास्ते कर लो मोआमला दिल का,
कि घर के घर ही में हो जाय फ़ैसला दिल का।
तुम अपने साथ ही तसवीर अपनी ले जाओ,
निकाल लेंगे कोई और मशग़ला[3] दिल का।
न जाने देते बन आये, न जिन्दा रहते बने,
बिगड़ गया है यह कैसा मोआमला दिल का।
मिली भी है कभी आशिक़ की दाद दुनिया में,
हुआ भी है कभी कम्बख्त फ़ैसला दिल का।
निगाहे मस्त को तुम होशियार कर देना,
यह कोई खेल नहीं है मुक़ाबिला दिल का।

---

१—जलन। २—फफोला ३—ज़रिया

हमारी आंख में भी अश्क[1] गर्म ऐसे हैं
कि जिनके आगे भरे पानी आबला दिल का।
कुछ और भी तुझे ऐ 'दाग़' बात आती है,
वही बुतों की शिकायत, वही गिला दिल का।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

उठो गले से लगा लो मिटे गिला दिल का,
ज़रा सी बात में होता है फ़ैसला दिल का,
दम आके आंखों में अटके तो कुछ नहीं खटका,
अटक न जाय इलाही मोआमला दिल का।
तुम अपनी उठती जवानी की शोख़ियां देखो,
उभर उभर के बढ़ाती है वलवला दिल का।
बदल के यार ने चितवन, मिटा दिये झगड़े,
न मैं रहा, न रहा दिल, न वह गिला दिल का।
लगा के यार की तसवीर अपने सीने से,
निकाल लेते हैं फ़ुरक़त[2] में हौसला दिल का।
यह ज़ुल्फ़ के कहती हैं कानों में बिजलियां उनकी,
तड़प में होगा न हमसे मुक़ाबिला दिल का।

1—आँसू, 2—विरह।

'अमीर' भूलभुलइयाँ है कूचये गेसू[१],
तबाह क्यों न फिरे इसमें क़ाफ़िला दिलका।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

वह मैं इस बज़्मे-हस्ती[२] में, अज़ीज़े अहले महफ़िल हूँ,
हज़ारों जान की एक जान, लाखों दिल का एक दिल हूँ।
मज़ा है तुममें क्या ऐ सोज़े-उलफ़त[३] वाह क़ायल हूँ,
जिगर भी लोटता है इस तमन्ना[४] में कि मैं दिल हूँ।
छुपाया था बहुत कम्बख़्त को दुज़[५] दीदा नज़रों से,
पुकार उट्ठा मेरे पहलू में, लो हाज़िर हूँ, मैं दिल हूँ।
ज़माना क्या सतायेगा, फ़लक़[६] आज़ार[७] क्या देगा,
मुसीबत इससे बढ़ कर और क्या होगी कि बेदिल हूँ।
ज़रा से ज़ब्ते ग़म पर यह शिकायत होने लगती है,
मुझे जिस तरह चाहे रख तेरा क़ैदी, तेरा दिला हूँ ?
न रोके से रुके वह चलते चलते कह गये यह भी,
ठहर जाऊँ जो ठहराने से, क्या मैं आपका दिल हूँ।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

ठंडक पड़ी उस शोख़ का पहलू से जब पहलू मिला,
गोया किसी ने रख दिया संदल का फाहा दिल के पास।

---

१—बाल, केश २—संसार की सभा, ३—प्रेम की आग ४—ख़्वाहिश, ५—चुराई हुई आँख, ६—आकाश, ७—तकलीफ़।

मैंने कहा बेकस[1] हूँ मैं, बोले हमें देते हो दम,
हसरत हमारी है अभी बाक़ी, तुम्हारे दिल के पास।
तीरे निगाहे नाज़ ने ताका कभी दिल को अगर,
जाने 'अमीरे' नातवां,[2] पहुँची तड़प कर दिल के पास।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

एक तेरे ही न रहने से रहा क्या क्या कुछ,
कोई हसरत न रही, अब से रहा तू दिल में।
साथ हर सांस के आजाती है फूलों की महक,
बस गई है गुले[3] आरिज़ की जो ख़ुशबू दिल में।
ज़ोफ़[4] इस दरजा बढ़ा है, कि इलाही[5] तोबा,
दर्द भी अब तो बदलता नहीं पहलू दिल में।
तीर की तरह से चलती हैं निगाहें दिल पर,
तेग़[6] की तरह उतर आते हैं अबरू[7] दिल में।
अब वह आते हैं, निकलने के लिए हो तैयार,
आरज़ू बैठ रही छुपके कहाँ तू दिल में।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

अर्लाड़ियाँ तेरी हैं नज़रों में मेरी तू दिल में,
सैर है, आंखों में परियां हैं परीरू[8] दिल में।

---

1—लाचार, 2—कमज़ोर, 3—फूलों की तरह मुखड़ा, 4—कम ज़ोर, 5—ईश्वर, 6—तलवार, 7—भौं, 8—परी की तरह मुखड़ा।

जोफ़ ऐसा है कि आया मुझे ग़श जब आया,
कोई पहलू के बदलने का भी पहलू दिल में।
हिज्र में होश नहीं, सब्र नहीं, ताब नहीं,
उठ भी ऐ दर्दे दिल, अब क्यों है पड़ा तू दिल में।
कहते हैं तीरो कमाँ दोनों हैं मेरे, मेरे पास,
झूठी बातें हैं न मिज़गां[1] हैं न अबरू दिल में।
आँख इस आंख से देखो न मुक़ाबिल हो "अमीर",
इसी खिड़की से उतर आता है जादू दिल में।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

नहीं एक दिलो, सख़्त मुश्किल यही है,
कि वह दिल वही और यह दिल यही है।
छुपाते हो मुट्ठी में क्यों देख पाया,
यही है, यही है, मेरा दिल यही है।
तड़पने से जिसके तसल्ली हो तुमको,
मेरी जान इस काम का दिल यही है।

—'दाग़' देलहवी

× × ×

झूठे मोती जो समझता है इन्हें तू दिल में,
और इस ग़म से घुले जाते हैं आंसू दिल में।

---

[1]—बरौनी।

हो चुका हस्रतो अरमां का तो ख़ून ऐ क़ातिल,
किस पर अब खींचे हैं छुरियां तेरे अबरू दिल में

—'अमीर' लखनवी

× × ×

नाज़े आदा[1] उठेगा मुश्किल से,
दिल बदल लीजिए मेरे दिल से।
होगई आस[2] अह्दे-बातिल[3] से,
हमको जीना पड़ा मरे दिल से।
मेरी तसवीर भी वह देखते हैं,
किस बुरी आंख, किस बुरे दिल से।
अब ज़ुबां से वह फिर नहीं सकतीं,
जो दुआएं निकल गईं दिल से।
बढ़ गया रुतबए[4] तमाशायी[5];
आँख मिलती है पेशतर दिल से।
अब इधर रुख़ करे तो मैं जानूँ,
तीर तेरा खटक गया दिल से।
मिट गये हम तो जब यह उसने कहा,
तुमने शिकवे किए थे किस दिल से।

1—दुश्मन, २—आशा, ३—झूठे वादे, ४—दरजा, ५—दर्शक।

आतिशे[1] इश्क में मज़ा क्या है,
पूछिए उसको "दाग़" के दिल से।
—'दाग़' देलहवी

× × ×

कैसे उलफ़त में पड़े जान के लाले दिल को,
इस मुसीबत से अब अल्लाह निकाले दिल को।
हूँ मैं बेकस, कोई हम दम[2] है न ग़मख्वार मेरा,
दर्द ही उठके सम्हाले तो सम्हाले दिल को।
टूट कर आबले नासूर हुए जाते हैं,
हाय छलनी किये देते हैं यह छाले दिल को।
कोई पामाल[3] भी करने को नहीं लेता है,
मुझको दूभर है, करूँ किसके हवाले दिल को।
हो गया सर्द तड़प कर तो वह बोले है है,
क्या हुआ आज मेरे चाहने वाले दिल को।
दिल किया नज्र जो मैंने, तो कहा ठुकरा कर,
जान अपनी जिसे दूभर हो वह पाले दिल को।
अपने मतलब की इन्हें आती हैं क्या क्या घातें,
नाज़ से मांगते हैं, नाज़ों के पाले दिल को।
चख चुका ख़ूब, मुहब्बत के मज़े दिल देकर,
लाओ, जाऊं मैं, करो मेरे हवाले दिल को।

१—आग, २—साथी, ३—कुचलना।

सख़्त नादां है कि मलता है वह पाँवों के तले,
कुछ भी समझे तो कलेजे से लगा ले दिल को।
कहते हैं शौक़ से आयें मेरी महफ़िल में 'अमीर',
साथ लाएं न मगर लोटने वाले दिल को।

—'अमीर' लखन

× × ×

वह हम नहीं, तो रहा कौन से हिसाब में दिल
कहां से लायें जो था आलमे[1] शबाब में दिल
हमारे शौक़े शहादत[2] की यों खिंचे तसवी
इधर जवाब में खंजर उधर जवाब में दिल
उठे जो सुबह को सीने पे हाथ रक्खे तु
तड़पता लोटता देखा है कोई ख्वाब में दिल
उसे वही वह दिल-आज़ार[3] पाक करता
जो देख लेता है लिक्खा किसी किताब में दिल
वह बज़्में नाज़ है, जाना वहां संभल कर 'दा
वगर-न[4] हाथ से जायेगा इज़तराब[5] में दिल

—'दाग़' देहल

× × ×

हसरत आई यह उन्हें देख के बिस्मिल मुझको,
चुलबुला ऐसा ही मिल जाय कोई दिल मुझको।

---

१—जवानी का ज़माना, २—क़त्ल होना, ३—दिल दुखानेवाला।
४—नहीं तो, ५—बेचैनी।

तू हो कुछ दर्द से आगाह[1], मैं बेदर्दी से,
दिल मेरा तुझको मिले और तेरा दिल मुझको।
चुटकियां लेता है पहलू में मेरे आठ पहर,
दिलरुबा[2] बन के सताता है मेरा दिल मुझको।
फिर मज़ा तुझको चखा दूँ मैं दिल आज़ारी का,
चार दिन को भी जो मिल जाय तेरा दिल मुझको।
शबे ग़म कौन तरस खाके है रोने वाला,
कभी रो लेता हूं मैं दिल को कभी दिल मुझको।
कुछ खबर मुझको नहीं है कि कहां जाता हूँ,
कहीं खैंचे लिये जाता है मेरा दिल मुझको।
बन सँवर कर जो निकलते हैं इधर से वह कभी,
गुदगुदा देता है अरमान भरा दिल मुझको।
वह निगाह कहती है किस घर में नहीं मेरी जगह,
निकली मैं आँख से बाहर तो मिला दिल मुझको।
याद उस शोख़ की तड़पाती है इसको जो 'अमीर'
चैन लेने नहीं देता है मेरा दिल मुझको।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

निकालूँ किस तरह खारे तमन्ना सख्त मुश्किल है,
वह इस डर से नहीं छूते कि यह कांटों भरा दिल है।

---

१—होशियार, २—दिल ले जानेवाला।

क़रीने से अजब आरास्ता क़ातिल की महफ़िल है,
जहां सर चाहिए सर है, जहां दिल चाहिए दिल है।
मुझे तुमसे रुकावट, और तू ग़ैरों पे मायल है,
मेरा दिल अब तेरा दिल है तेरा दिल अब मेरा दिल है।
यह क्यों तेरी अदा से मुज़तरिब[1] मानिन्द बिस्मिल है,
इलाही क्या कलेजे के भी अन्दर दूसरा दिल है।
भला देखें तो बाज़ी कौन ले जाये मुहब्बत में,
तुम अपने नाम के दिलबर, यह अपने नाम का दिल है।
यह ए सैयाद[2] एक पहलू निकल आया रिहाई का,
असीरों[3] में तेरे जो छूट जाये वह मेरा दिल है।
जबरदस्ती तो देखो हाथ रख कर मेरे सीने पर,
वह किस दावे से कहते हैं हमारा ही तो यह दिल है।
कभी कहता है उसकी सी कभी कहता है मेरी सी,
यह उसका है मेरे पहलू में यारब या मेरा दिल है।
मेरे शौक़े शहादत पर ज़रा तू रहम कर क़ातिल,
तेरी तलवार में दम है तेरे पैकान[4] में दिल है।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

यों आके बैठो आशिक़े कामिल के सामने
आंख आंख के हो सामने, दिल दिल के सामने।

---

1—बेचैन, २—बहेलिया, ३—क़ैदियों, ४—तीर का सिरा।

तीरे निगाहे नाज़ जब आया है इस तरफ़,
दीवार हो गया है जिगर[1] दिल के सामने।
देखो तो सैर माहिए बेआब[2] की तरह,
रख कर मेरे तड़पते हुए दिल के सामने।
पाई है जुर्मे इश्क़ की अन्जाम[3] को सज़ा,
आया है उम्र भर का किया दिल के सामने।
कम्बख़्त मानता ही नहीं इसको क्या करूँ,
मैं हाथ जोड़ता हूँ बहुत दिल के सामने।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

हैं इशारे यह तेग़[4] क़ातिल के,
आओ अरमाँ निकाल दूँ दिल के।
हाले दिल दरदो दाग़ से पूछो,
यह बड़े राज़दार[5] हैं दिल के।
तीर आते ही दिल को ले निकले।
अच्छे आये यह मुद्दई[6] दिल के,

—'अमीर' लखनवी

× × ×

तुम भी नाराज़, ख़फ़ा हम भी हैं, क्या मुश्किल है,
न हमारा न तुम्हारा तो यह किसका दिल है।

---

१—कलेजा, २—मछली बिना पानी के, ३—अन्त, ४—तलवार, ५—भेदिया, ६—दावा करनेवाला।

जान दिल में तो हुआ करती है सब के, लेकिन—
तू जो है जान मेरी, जान में मेरा दिल है।
बे-क़रारी ने किया है तहोबाला[1] ऐसा,
कि कभी दिल पै जिगर है, तो जिगर पर दिल है।
उसने बाज़ारे मुहब्बत में जो रक्खा है क़दम,
यही आवाज़ चली आती है दिल है, दिल है।
वह इस अन्दाज़ से पहलू में मेरे आ बैठा,
मैं न समझा उसे दिलबर[2] है कि मेरा दिल है।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

न घबरा तू है खंजरे इश्क़ दम से,
मज़े का तो वक़्त इसमें ऐ दिल यही है।
कली फूल की मल के चुटकी से उसने-
कहा मुझसे क्यों आपका दिल यही है?
मेरे दिल को ठुकरा के मुझसे वह बोले,
बड़ी धूम जिसकी थी वह दिल यही है।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

मिन्नतों से भी न वह हूर[3] शुमायल[4] आया,
किस जगह आँख लड़ी, हाय कहाँ दिल आया।

---

१—नीचे ऊपर, २—प्रियतम, ३—हूर की तरह सुन्दर। ४—तरह

[म न कहते थे न कर इश्क़ परोमाँ[1] होगा,
जो किया तूने वह आगे तेरे ऐ दिल आया।
दीनो दुनिया से गया तो यह समझ ले ऐ 'दाग़'
ग़ज़ब आया अगर उस बुत पे तेरा दिल आया।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

वह कहते हैं निकलना अब तो दरवाज़े पे मुश्किल है,
क़दम कोई कहाँ रक्खे जिधर देखो उधर दिल है।
निकलना उस गली से होके भी आशिक़ को मुश्किल है,
वह कहते हैं कि लो फिर आगया क्या बेहया दिल है।
मुझे तो दर्द है तेरा तुझे है क्यों यह बेदर्दी,
मेरे पहलू में भी दिल है तेरे पहलू में भी दिल है।
कलेजे से लगा, आँखों से मल, इतना न दूभर कर,
इसे तलुओं से मलता है अरे यह तो मेरा दिल है।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

जब तड़प देखते हैं उसकी वह मायल[2] होकर,
लोटिये आप भी जी चाहता है दिल होकर।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

---

१—लज्जित होना, २—ग़ौर से।

पूछो पैकाने तीरे क़ातिल से,
मशवरे[1] हो रहे हैं क्या दिल से।
ले चुके दिल तो हँस के फ़रमाया,
प्यार अब कीजियेगा किस दिल से।
वह जो बे-परदा सामने बैठे,
परदे सब उठ गये मेरे दिल से।
दिल जो तलुओं से तूने मल डाला,
यह हुआ किस तरह तेरे दिल से।
मेरे पहलू से तू न उठ ऐ दर्द,
प्यार करता हूँ मैं तुझे दिल से।
वह कलेजा पकड़ के बैठ गये,
आह निकली नहीं अभी दिल से।

—'अमीर' लखनवी

× × ×

क्या मातमे हसरत करूँ, वह शोला[2] ज़न है दाग़े ग़म,
जल कर फफोले पड़ गये जब हाथ आया दिल के पास।
क़ुरबान जाऊँ यास[3] के, यह क्या मिली दुनिया मिली,
एक दौलते जावेद[4] है, एक सलतनत है दिल के पास।
है तुमको बादे इन्तहां, क्यों दम चुराने का गुमां,
यह दिल से अपने दूर रख, रक्खा नहीं कुछ दिल के पास।

---

1—सलाह, 2—रोशन, 3—निराशा, 4—हमेशा।

देखी है इस बेताब ने नूरे[1] तजल्ला की झलक,
बरसों किया है इम्तहाँ, आईना रखकर दिल के पास।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

दिल से दिल किस लिये नहीं मिलता,
और ही कुछ है आपके दिल में।
वह सुनेंगे न हम कहेंगे 'कमाल',
आरज़ूएँ हैं इस क़दर दिल में।

× × ×

क्या चले फिर दिलरुबा पर अख़तियार,
अपने ही क़ाबू में अपना दिल नहीं।

× × ×

आह ने आसमान से मिल के,
ख़ूब उड़ाए धुयें मेरे दिल के।
हाथ रखने से भी न जब ठहरा,
बोले क़ुरबान आपके दिल के।

× × ×

...में आदत है छुप के रहने की,
... न निकलेंगे परदये दिल से।

1—ज्योति।

## दर्दे-दिल



जल के निकला हूँ उसकी महफ़िल से,
उठ रहे हैं धुयें मेरे दिल से।
आप कब आयें हैं कि जब अरमान-
तंग आकर निकल गये दिल से।
तू ही ऐ बेकसी मना ले ज़रा,
रूठी जाती हैं हसरतें दिल से।

× × ×

शबेहिज्र[1] कहता है दर्द अपना अपना,
दिल आगे जिगर के जिगर दिल के आगे।
कड़क बिजलियों की गरज बादलों की,
खिजिल[2] है मेरे नालये दिल के आगे।
कोई सुनने वाला नहीं कहते हैं हम,
"कमाल" अपना दर्द अपने ही दिल के आगे।

—'कमाल' लखनवी

× × ×

मिले दो यार बाहम अब तो यह छूटेंगे मुश्किल से,
जो दिल को इश्क़ है ग़म से, तो ग़म को इश्क़ है दिल से।

× × ×

फ़ैसला कर दे यह कोई ग़ौर के आने से क़ब्ल,
या रहे वह मेरे दिल में या मेरा दिल लेके जाय।

---

१—विरह की रात, २—लज्जामय।

उसके घर से अब न पलटूं, और अगर पलटूं भी मैं,
राह से पलटा के मुझको फिर वही दिल लेके जाय।

—'शौक़' लखनवी

× × ×

वहाँ अलफ़ाज़[1] ख़िज़रेरह[2] हैं यहाँ मानी हैं मंज़िल पर,
ज़बाँ का उनको दावा है, तो मुझको नाज़ है दिल पर।

× × ×

हुई मुद्दत कि दुनिया से मेरा दिल उठ गया लेकिन,
हिनोज़[3] एक शोला यादे रफ्तगाँ[4] में दिल से उठता है।

—'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

इस शौक़ को नहीं धुते क़ातिल को इत्तलाअ[5],
अफसोस है कि दिल की न हो दिल को इत्तलाअ।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

तरीक़े[6] इश्क़ में मुझको कोई कामिल नहीं मिलता,
गये फरहदो मजनू, अब किसी से दिल नहीं मिलता।

---

१—शब्द, २—रास्ता बताने वाला, ३—अब, ४—जो इस संसार में नहीं है, ५—ख़बर, ६—रास्ता।

यह हुस्नो इश्क़ ही का काम है शक हम करें किस पर,
मिज़ाज उनका नहीं मिलता, हमारा दिल नहीं मिलता।

× × ×

इन निगाहों के इशारों से तबीयत तड़पी,
इन इशारों के मआनी को मेरा दिल समझा।
हुस्न ने नाज़ किये इश्क़ की तक़मील[1] हुई,
न नज़र आपकी समझी, न मेरा दिल समझा।

× × ×

क्या और से मुमकिन हो तसल्ली मेरे दिल की,
जब आप ही ने कुछ न खबर ली मेरे दिल की।
मेहमान है जिस रोज़ से सीने में तेरी याद,
आबाद है उजड़ी हुई बस्ती मेरे दिल की।
या इसकी खबर भी नहीं लेते कभी अब तो,
या फ़िक्र तुम्हें रहती थी कितनी मेरे दिल की।
दिखला के झलक और भी तड़पा गये इसको,
की वाह दवा आपने अच्छी मेरे दिल की।
जब क़ौले वफ़ा हार चुका मैं तो फिर अब क्या,
जीते हुए हैं आप तो बाज़ी मेरे दिल की।

---

1—कमाल को पहुँचना।

वह तिरछी निगाहों से मुझे देख रहे हैं,
इस वक्त में हो खैर इलाही[1] मेरे दिल की।
तसकीं[2] के लिये रहते थे सीने पे जो हर दम,
अब है इन्हीं हाथों से खराबी मेरे दिल की।
कहना तो बहुत कुछ है मगर क्या कहूँ "अकबर"
अफ़सोस कि सुनता नहीं कोई मेरे दिल की।

— 'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

निकली फ़लक़[3] से कब किसी मायल की आरज़ू,
फिर उसपे आरज़ू भी मेरे दिल की आरज़ू।
दुनिया सराये तंग है, महशर[4] है जाय[5] तंग,
आशिक़ कहां निकाल सके दिल की आरज़ू।

× × ×

जवाब इस बात का उस शोख को क्या दे सके कोई,
जो दिल लेकर कहे कम्बख्त तू किस दिल से मिलता है।

× × ×

चार दिन पहले जो तक़दीर में था अब वह नहीं,
हम वही, तुम हो वही, शौक़ वही, दिल है वही।

---

१—ईश्वर, २—तसल्ली, ३—आकाश, ४—प्रलय,

## दर्दे-दिल

बढ़ गया सेरों लहू उनको जो आते देखा,
ख़ुद न पहचान सका मैं कि मेरा दिल है वही।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

लोग क्योंकर छोड़ देते हैं मुहब्बत दफ़अतन[१]
मैं तो जब यह क़स्द[२] करता हूँ मचल जाता है दिल

× × ×

रहे उलफ़त[३] वह कूचा है क़ज़ा भी जिससे डरती है,
क़दम रखता है दिल इसमें निसारे[४] हिम्मते दिल हूँ।
जो यों ही लहज़ा लहज़ा दाग़ हसरत की तरक्क़ी है,
अजब क्या रफ़्ता रफ़्ता[५] मैं सरापा सूरते दिल हूँ।
वह दाग़े आरज़ू हूँ जिससे दिल दामन बचाता है,
कोई पहलू नहीं मिलता जिसे दुनिया में वह दिल हूँ।

—'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

गिरह जो पड़ गई रंजिश में वह मुश्किल से निकलेगी
न उनके दिलसे निकलेगी न मेरे दिल से निकलेगी
मुझे आता है तुम पर रहम मेरा मुँह न खुलवाओ,
कलेजा छोड़ देगी वह दोआ जो दिल से निकलेगी।

---

१—एकबारगी, २—इरादा, ३—प्रेम-मार्ग, ४—निछावर, ५—धीरे धीरे।

न करना क़त्ल हमको वरना हसरत 'दाग़' बन बन कर,
तुम्हारे दिल में बैठेगी हमारे दिल से निकलेगी।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

क्यों कह के दिल का हाल करें हाय हाय दिल,
अच्छी कही कि हम से कहो माजराय दिल।
घबरा के बज़्म[1] नाज़ से आख़िर वह उठ गये,
सुन सुन के हाय हाय जिगर हाय हाय दिल।
रहता है दम ख़फ़ा मेरे सीने में हर घड़ी,
रूठे हुए को हाय कहां तक मनाए दिल।
क्या अब भी सख़्त ज़ुल्म के अरमान रह गये,
एक एक दिन में तूने हज़ारों सताये दिल।
पाया न बस गली में दिल अपना किसी जगह,
यों हम गिरे पड़े तो बहुत ढूँढ लाये दिल।
कहते न थे वह सुनके बुरा मान जायेंगे,
ऐ "दाग़" उनसे और कहो माजराय दिल।

× × ×

तासीरे इश्क़ यह है तेरे अहदे[2] हुस्न में,
मिट्टी का भी बनाये तो हो बेक़रार दिल।

---

१—सभा, २—ज़माना।

निकले मेरी बग़ल से वह ऐसे
याद आगया मुझे वहीं बेअख़तियार
—'दाग़'

× × ×

यह भी दुश्मन हो गया अब यह भी क़ातिल हो गया,
आप से मिल कर मेरा दिल आपका दिल हो गया।
लाख चाहा यह निकल जाये मगर निकला नहीं,
नावके दिल-दोज़[1] गोया दूसरा दिल होगया।

× × ×

वह नज़ाकत से जब आकर सरे महफ़िल आए,
मेरे पहलू में न अरमान भरा दिल ठहरा।
वह भी आयें अगर ऐ 'नूह' तो क्या होता है
न कभी ठहरेगा अब तक न मेरा दिल ठहरा।

× × ×

यह समझ लो खाक में अब मिल गया,
दिल नहीं आया हमारा दिल गया।
उनके लाने को गये थे हम[2] नशीं,
उनके पहुँचाने को मेरा दिल गया।

---

१—दिल छेदने वाला, २—दोस्त।

## दर्दे-दिल

सब्र क्या आये मुझे सांस बमुश्किल आये,
तू तो इन्सान है पत्थर पे अगर दिल आये।
हाय वह जान बचाने का ज़माना न रहा,
अब तो इस बात का रोना है कहीं दिल आये।
ग़ैर माशूक़ हो तुझसा भी तो उलफ़त न करूँ,
ऐसा आना है तो मुझ पर ही मेरा दिल आये।

× × ×

जोशे वहशत से करूँ क्या सख़्त मुश्किल घर में है
गोर[1] मे काफ़िर का मुर्दा है कि यह दिल घर में है

—'दाग़' देहलवी

× × ×

पहले मिलने को वह मुश्किल से मिला,
फिर मिला तो ऊपरी दिल से मिला।
अब मेरी उसकी सफ़ाई हो गई,
एक का दिल एक के दिल से मिला।
आँख लड़ते ही मुक़द्दर[2] लड़ गया,
उस हसीं का दिल मेरे दिल से मिला।

—'नूह' नारवी

× × ×

---

१—क़ब्र, २—भाग्य।

लहू बन कर मिले हैं आँसुओं में कैसे पहचानूँ,
ख़ुदा जाने, जिगर के टुकड़े हैं या दिल के टुकड़े हैं।
वही सूरत, वही रंगत है मिलती जुलती ऐ क़ातिल,
तेरे पैकाँ के टुकड़े हैं, कि मेरे दिल के टुकड़े हैं।
उड़ी फिरती हैं लेकर बुलबुलें मिनक़ार[1] में जिनको,
बता गुलचीं[2] यह गुञ्चे[3] या किसी के दिल के टुकड़े हैं।
उधर चुटकी में नावक और कमां है हाथ में उनके,
इधर सीना सिपर[4] है, और मेरे दिल के टुकड़े हैं।
न पूछ ये नावक[5] अफ़गन क्यों धरे हूँ हाथ सीने पर,
बताऊँ क्या जहाँ दिल था, वहाँ अब दिल के टुकड़े हैं।
पड़े हैं तीर जिसकी चुटकियों से मेरे सीने पर,
वह गिन ले उंगलियों पर अपना कितने दिल के टुकड़े हैं।

—"शफ़क़" अमादपुरी

× × ×

ुमाइश जब हुई यह रौनक़े महफिल पसन्द आया,
अज़ल[6] के दिन से ख़ुद हुस्ने अज़ल[7] को दिल पसन्द आया।
ारा यह इन्तख़ाब[8] उसकी निगाहे नाज़ का देखो,
के आँसू बन रहा था जो वह ख़ूने दिल पसन्द आया।

× × ×

१—चोंच, २—फूल चुननेवाला, ३—कली ४—सीने को ढाल बनाना, ५—तीर चलानेवाला, ६—आदि, ७—ईश्वर, ८—चुनाव।

यह शोखिये[1] निगाह सरे बज़्म[2] ता[3]
बाक़ी किसी के सीने में अब दिल नहीं

× × ×

क्या सोचना तअल्लुक़े पिनहाँ[4] का बाद[5] दफ़्न,
जो कुछ था उसके दिल में मेरे दिल में रह गया।
जब वज़ा[6] एहतियात से नाला[7] रुका कोई,
तसवीर ज़ब्त बन के मेरे दिल में रह गया।

× × ×

बहारे गुल को, कब वह सैर के क़ाबिल समझते हैं
हर एक टूटे हुए गुञ्चे को मेरा दिल समझते हैं।
सितम[8] यह है, कि मुझको जौर के क़ाबिल समझते हैं
ग़ज़ब यह है पराए दिल को वह कब दिल समझते हैं।
हमारी ख़ातिरें होती हैं, बहलाते हैं बातों में,
उदू[9] की बज़्म में हमको वह अपना दिल समझते हैं।
कहे देती हैं यह तिरछी निगाहें वक़्ते आराइश[10],
वह अपने आइने को भी हमारा दिल समझते हैं।

---

१—चंचलता, २—सभा में, ३—कब तक, ४—छुपा हुआ, ५—दफ़्न होने के बाद, ६—तरीक़ा, ७—कराहना, ८—ज़ुल्म, ९—दुश्मन, १०—संवरने के समय।

नहीं मख़सूस[1] अब कोई दिले बेताब का पहलू,
जहाँ हो दर्द सीने में वहीं हम दिल समझते हैं।
वह तसवीरें उदू होगी, यह पैकाने सितम होगा,
जिसे तुम जान कहते हो, जिसे हम दिल समझते हैं।
शहीदाने मुहब्बत[2] को कभी मरते नहीं देखा,
यह वह राज़े[3] अजल[4] है जिसको ज़िन्दा दिल समझते हैं।
मेरे पहलू में ख़ारे आरज़ू जब से नज़र आया,
जहाँ काँटा उन्हें मिलता है मेरा दिल समझते हैं।

—'बेख़ुद' देहलवी

× × ×

ज़भी सुन ले अरे ओ साज़े-इशरत[5] छेड़ने वाले,
ज़जब आवाज़ आती है मेरे टूटे हुए दिल से।

—"जोश" मलीहाबादी

× × ×

अज़ल[6] के दिन जिन्हें लेकर चले थे तेरी महफ़िल से,
वह शोले आज तक लिपटे हुए हैं दामने दिल से।
फ़लक पर डूबते जाते हैं तारे भी शबे-फ़ुरक़त[7],
मगर निस्बत कहाँ उनको मेरे डूबे हुए दिल से।

---

१—ख़ासतौर से, २—प्रेम के शहीद, ३—भेद, ४—मौत, ५—आनन्द वीणा, ६—आदि, ७—विरह की रात।

समझ कर फूंकना इसको ज़रा ये दागे ना
बहुत से घर भी हैं आबाद इस उजड़े हुए दिल से
कहाँ का मैकदा[1] कब तक न करते इस तरफ़ मैक्श
जो मिल जाती कभी एक बूंद भी मैख़ानये दिल से

—"जिगर" मुरादाबादी

× × ×

ख़ुदा महफ़ूज़ रक्खे इश्क़ के जज़बाते[3] कामिल से,
ज़मी गरदूं[4] से टकराई, जहाँ दिल मिल गया दिल से।
ठहर जा तेरी महवीयत[5] की एक तसवीर तो ले लूं,
अरे ख़िलवत[6] में बातें करने वाले मुज़तरिब[7] दिल से।
अभी पैवस्त[8] है काफ़िर निगाहें शोख़ अदा उनकी,
किसी दिन देखना बिजली गिराऊँगा इसी दिल से।
यह क्या था यों तो वह देखा किये दम तोड़ना मेरा,
मगर अंगड़ाई ली एक रूह निकली जब मेरे दिल से।
"अज़ीज़" एजाज़े[9] हुस्ने रूह[10] परवर की कोई हद है,
हज़ारों दिल बना डाले मेरे टूटे हुए दिल से।

—'अज़ीज़' लखनवी

× × ×

१—मधुशाला, २—शराबी, ३—भाव, ४—आकाश, ५—तल्लीन रहना, ६—एकान्त, ७—बेक़रार, ८—मिले हुए, ९—अद्भुत, १०—आत्मा को सुख देने वाला।

जो आये हो दिले पुर आरज़ू में सख़्त मुश्किल से,
उन्हें मैं दिल से जाने की इजाज़त दूँ तो किस दिल से।
सुनेगा शिकवे ग़म जी लगा कर कोई मुश्किल से,
मेरे हसरत भरे दिल का, मेरे हसरत भरे दिल से।
कोई पहलू रहा बाक़ी न अब इज़हारे[1] उलफ़त का,
वह दिल लेकर यह कहते हैं हमें चाहोगे किस दिल से।
मोहब्बत का फ़साना[2] कुछ न होने पर भी सब कुछ है,
सुनो मेरी ज़बां से, इसको तुम समझो मेरे दिल से।
गुदाज़े-इश्क़[3] ने नशतर को शरमिन्दा किया क्या क्या,
न निकली ख़ून की दो चार बूंदें भी रगे दिल से।

—'नूह' नारवी

× × ×

वह लड़ते हैं लड़ें हमको नहीं ग़म इस लड़ाई का,
असर होगा मोहब्बत में तो दिल मिल जायगा दिल से।
जो तुम मुझसे मिलो तो कुछ यक़ीं आये मोहब्बत का,
यह क्योंकर मैं समझ लूँ दिल में अब दिल मिल गया दिल से।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

१—प्रेम जताना, २—क़िस्सा, ३—प्रेम लगन।

विजलियां टूट पड़ीं जब वह मुक़ाबिल से
मिल के पलटी थीं निगाहें कि धुंआ दिल से उठा

× × ×

मुज़दये[1] तसकीं[2] से बेताबो के क़ाबिल होगया,
दिल पे जब तेरी निगाहें जम गईं दिल होगया।
फर के दिल का ख़ून क्या बेताबियां[3] कम होगईं,
जो लहू आंखों से दामन पर गिरा दिल होगया।
तूर[4] ने जल कर, हज़ारों तूर पैदा कर दिये,
ज़र्रा ज़र्रा मेरे दिल की ख़ाक का दिल होगया।

× × ×

तेरी तिरछी नज़र का तीर है मुश्किल से निकलेगा
दिल इसके साथ निकलेगा अगर यह दिल से निकलेगा
तसव्वर[5] क्या तेरा आया क़यामत आगई दिल
कि अब हर वलवला बाहर मज़ारे दिल से निकलेगा

× × ×

तूने फिराक़े[6] दिल हमें दीवाना कर दिया,
फिरते हैं पूछते ख़बरे दिल जगह जगह।

---

१—सुखाख़बरी, २—तसल्ली, ३—बेचैनियां, ४—एक पहाड़ का नाम है जिस पर हज़रत मूसा ईश्वर का दर्शन करने गये थे, ५—ध्यान ६—विरह।

सरगुज़स्त[1] दर्द है हर ज़र्रा ख़ाक का,
ची है दास्ताने ग़मे दिल जगह जगह।

× × ×

दिल खोये हुए वर्षों गुज़रे हैं मगर अब भी,
आंसू निकल आते हैं जब दिल नज़र आता है।
रूदाद[2] मोहब्बत की तसवीर है हर आंसू,
हर क़तरये ख़ूनीं में एक दिल नज़र आता है।

—'फ़ानी' बदायूंनी

× × ×

ख़ाऊँ किसको मैं ऐ इश्क़ ताक़त अज़्म कामिल की;
बचे बैठे हैं वह, यां टूटी जाती हैं रगें दिल की।
ही एक परदये तसवीर बुतख़ाने के क़ाबिल था,
क आंसू गिरते ही दामन पे सूरत खिंच गई दिल की।

—'अज़ीज़' लखनवी

× × ×

जाकर कोई जो ग़ैर की महफ़िल में रह गया,
सब हौसला वह दिल का मेरे दिल में रह गया।
यह सरगुज़स्त है मेरे दर्दे फ़िराक़ की,
दिल में पला, वह दिल में बढ़ा, दिल में रह गया।

1—हालात, 2—घटना।

## दर्दे दिल



निकला न आज तक कभी अरमां वि.
पहलू बदल बदल के मेरे दिल में रह गया
यों तो हज़ारों आये हज़ारों निकल ..
अरमान है वही जो मेरे दिल में रह गया।
ऐ हमनशीं[२] न हालते सोज़े-दुरूं[३] को .
दिल का बुखार घुट के मेरे दिल में रह गया।
गो "दाग़" देहलवी न ज़माने में रह गये
ऐ "नूह" उनका दाग़ मेरे दिल में रह गया।

× × ×

हज़ारों वहम होते हैं निगाहे नाज़ कातिल पर,
कभी है वह मेरे सर पर, कभी है वह मेरे दिल पर।
यहीं मज़लूम की फ़रियाद क्या बेकार जायगी,
पड़ेगा मेरे दिल का सब्र एक दिन आपके दिल पर।
बढ़ाया जज़्ब उलफ़त ने मेरे सोज़े मोहब्बत को,
जो निकली आह दिल से बन के बिजली गिर पड़ी दिल पर।
यहां भी सोज़े-फ़ुरक़त[४] है, वहां भी दर्दे उलफ़त है,
उठाता हूँ जिगर से हाथ तो रखता हूँ मैं दिल पर।
जिसे कल तुम खरामें नाज़ से पामाल[५] करते थे,
ज़माने की नज़र है आज उस हसरत भरे दिल पर।

१—मिलना, २—साथी, ३—दिल की जलन, ४—विरह की जलन, ५—पाँव से कुचलना।

बैठाया तो है हमने उनको अपने दहने पहलू में,
मगर बाईं तरफ़ फिर भी निगाहे नाज़ है दिल पर।

× × ×

यह हमारा शग़ल ठहरा हिज्र[1] में दिन रात का,
देख लेना यास से हसरत भरे दिल की तरफ़।
कुछ लगावट, कुछ तग़ाफ़ुल[2], कुछ शरारत, कुछ हया,
देखता है वह कनखियों से मेरे दिल की तरफ़।
वह जो इसके वास्ते तो यह है उसके वास्ते,
अपनी सूरत की तरफ़ देखो, मेरे दिल की तरफ़।
उनका आना तो ज़रा आग़ोश[3] में दुश्वार है,
तीर भी उनके नहीं आते मेरे दिल की तरफ़।
गर नहीं मिलती जगह तीरे निगाहे नाज़ को,
बायें पहलू में वह आ बैठे मेरे दिल की तरफ़।
क्या कहूँ ऐ "नूह" हाले कसरते दाग़े फ़िराक़,
कुछ कलेजे की तरफ़ है कुछ मेरे दिल की तरफ़।

—'नूह' नारवी

× × ×

जहाँ[4] की ख़ाक छानी, ख़ाक उड़ाई ख़ाक हो होकर,
अगर याद आगया मिट्टी में मिल जाना मेरे दिल का।

१—विरह, २—बेख़बर, ३—गोद, ४—संसार।

## दर्दे-दिल



मज़ा सुनने का जब है, दिल से सुनिये, दिल की बातों को,
फ़साना[1] वेदिली से सुन रहे हैं आप, क्यों दिल का।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

दोनों का हाल इश्क़ में शामिल नहीं रहा
मैं होश में रहा तो मेरा दिल नहीं रहा।

× × ×

बराबर की खलिश,[2] खूनाबा अफ़शानी[3] मुक़ाबिल की,
मोहब्बत ने बना दी एक हालत, दीदओ[4] दिल की।
न तोड़ ए दस्त-गुलचीं[5] बाग़ में फूलों की कलियों को,
कि उनमें कुछ शबाहत[6], पाई जाती है मेरे दिल की।
"जिगर" मैंने छुपाया लाख दर्दे-इश्क़ को लेकिन,
बयां कर दीं मेरी सूरत ने सब कैफ़ियतें दिल की।

× × ×

आज क्या हाल है यारब सरे महफ़िल मेरा,
कि निकाले लिये जाता है कोई दिल मेरा।
सोज़े-ग़म[7] देख न बरबाद हो हासिल मेरा,
दिल की तसवीर है हर आबलये दिल मेरा।

1—क़िस्सा, 2—खटक, 3—खून बरसाना, 4—आँख, 5—माली का हाथ, 6—रंग-रूप, 7—दुख की जलन।

यों मिले इश्क़ में मिट कर मुझे हासिल मेरा,
ज़र्रा ज़र्रा तेरे कूचे का बने दिल मेरा।
सुबह तक हिज्र[१] में क्या जानिये क्या होता है,
शाम ही से मेरे क़ाबू में नहीं दिल मेरा।
मिल गई इश्क़ में ईज़ावलबी[२] से राहत[३],
ग़म है अब जान मेरी, दर्द है अब दिल मेरा।
पाया जाता है तेरी शोख़ीये[४] रफ़्तार का रंग,
काश पहलू में धड़कता ही रहे दिल मेरा।
दौड़ता फिरता है रग रग में लहू के हमराह[५],
अब मिलेगा न तुम्हें दिल की जगह दिल मेरा।
हाय उस दर्द की क़िस्मत जो हुआ दिल का शरीक,
हाय उस दिल का मुक़द्दर[६] जो बना दिल मेरा।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

जो दिल नहीं रखता, कोई मुश्किल नहीं रखता,
मुश्किल नहीं रखता, जो कोई दिल नहीं रखता।
क्यों "यास" क़फ़स[७] में भी वही ज़मज़मा[८] सनजी,
ऐसा तो ज़माने में कोई दिल नहीं रखता।

—'यास' अज़ीमाबादी

× × ×

१—विरह, २—दुख की इच्छा करना, ३—आराम, ४—चालाकी चंचलता, ५—साथ, ६—क़िस्मत, ७—पिंजड़ा, ८—राग अलापना।

जो खुल जायगा राज़े[1] इश्क़ो उलफ़त अहले[2] महफ़िल पर,
तो हसरत सब को आयेगी, मेरे हसरत भरे दिल पर।
क़फ़स में देख कर मुझको तबीयत उसकी भर आई,
नहीं मालूम क्या गुज़री मेरे सैयाद[3] के दिल पर।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

मैंने माना कि तड़पना नहीं मुश्किल कोई,
कहीं ऐसा न हो खुल जाये रगे दिल कोई।
शोख़ियों ने, किसी आलम में ठहरने न दिया,
अब कहीं सीनये बेदिल में बना दिल कोई।

—'अज़ीज़' लखनवी

× × ×

हसीं देखा जिसे आशिक़ हुआ दिल,
नेहायत है हमारा चुलबुला दिल।
न लो दिल लेके मेरा ग़ैर का दिल,
कि जैसे एक वैसे दूसरा दिल।
न रोए जो वह है किस काम की आंख,
न तड़पे जो वह है किस काम का दिल।

१—भेद, २—सभावाले, ३—बहेलिया।

## दर्दे-दिल

न देंगे ले के वह ऐ हज़रते "नूह",
किसी का दिल फिर उस पर आपका दिल।
—'नूह' नारवी

× × ×

दोस्त कोई इसके मुक़ाबिल नहीं होता,
आपसे मिल कर भी मेरा दिल नहीं होता।
ते थे मलक[1] रोज़े-अज़ल[2] इश्क़ ग़ज़ब है,
दर्द वहाँ जाय जहाँ दिल नहीं होता।
छेड़ कि पहलू में रक़ीबों को बैठा कर,
इते हैं कि तू मुझसे तो बेदिल नहीं होता।
ती है जो यह दर्द में लज़्ज़त तो इलाही,
हलू में हर एक जोड़ के क्यों दिल नहीं होता।

× × ×

आराम कब मलाल[3] के शामिल नहीं रहा,
मैं ख्वाब में भी मौत से ग़ाफ़िल नहीं रहा।

× × ×

राज़े उलफ़त[4] का छुपाना किस क़दर मुश्किल हुआ,
जब किसी को हमने चाहा जब किसी पर दिल हुआ।
—'बेखुद' देहलवी

× × ×

---

१—फ़रिश्ता, २—संसार का पहला दिन, ३—दुख, ४—प्रेम का भेद।

## दर्दे-दिल

साहबे महफ़िल हुआ किस दिन भरी
तुम हमारे दिल में ठहरो, क्यों रहो तुम दिल से।

× × ×

.ख़ून रो देता है अकसर .ख़ूने हसरत देख कर,
पूछते क्या हो तुम अपने ग़मज़दे[1] के दिल का रंग।
एक सूरत, एक पहलू पर कभी रहता नहीं,
आज कुछ है और कल कुछ है हमारे दिल का रंग।

× × ×

इसको देंगे ग़म उठाने के लिये मुश्किल से।
दिल न होगा, तो तुम्हें चाहेंगे फिर किस दिल से।
दिल नहीं मिलता जो दिल से, तो यह मिलना कुछ
आप भी उस दिल से मिलिये, मिलते हैं जिस ... से
आज इसको हुस्न में फिर इनक़लाब[2] आने को
आज दिल को फिर मिला कर देखते हैं दिल से।
दिल से वह बातें किसी के दिल की जब सुनते हैं
उनसे हाले दिल कहें भी तो कहें किस दिल से।
देखने में चार तिनकों के सेवा कुछ भी नहीं
अपने होते आशियाँ[3] को फूँकदें किस दिल से।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

१—दुःखी, २—परिवर्तन, ३—घोंसला।

र क़यामत की कशिश यह जज़बये कामिल में है,
उनके हाथ में, पैकां हमारे दिल में है।
तलातुम[1] सा तो बरपा सीनये बिस्मिल में है,
न जाने तू है ख़ुद या दर्द तेरा दिल में है।
कि का हर रंग पिनहाँ[2] मेरी आबो[3] गिल[4] में है,
[5] मेरे सीने में, फ़रहाद[6] मेरे दिल में है।
। यह एजाज़े[7] मोहब्बत नावके कातिल में है,
ी वह भी दिल है, जो क़तरा लहू का दिल में है।
ल्ला अल्ला यह मेरी मशक़े तसव्वर[8] का कमाल,
हूँ इस महफ़िल में, और महफ़िल की महफ़िल दिल में है।
क में गुम गश्त[9] गीये शौक़ रास आई मुझे,
जो मेरे दिल में हसरत, अब वह उनके दिल में है।
वहारें उस पे सदके[10], लाख गुल उस पर निसार[11],
लहू का एक क़तरा जो हमारे दिल में है।
तड़प के साथ आजाती है मुझमें ताज़ा रूह,
क है, इतना असर तो इज़तराबे[12] दिल में है।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

१—जोश, २—छुपा हुआ, ३—पानी, ४—मिट्टी, ५—मजनूं जो
ला पर आशिक़ था उसका असली नाम है, ६—यह शीरीं पर आशिक़
ा, ७—अद्भुत, ८—ध्यान, ९—खो जाना, १०—निछावर,
११—निछावर, १२—बेक़रार।

## दर्दे-दिल

कौन कहता है कि लैला परदये महमिल[1]
क़ैस को हसरत है जिसकी वह तो उसके
काम क्या करना है कोई काम अब करना
क्या मेरे दिल में है, अब मरने की हसरत दिल में
तुमने करने को ज़ुबां से कर लिया एक़रार
वह भी है दिल में हमारे, जो तुम्हारे दिल में
ढूढ़ने वाली निगाहों का पता मिलता
इसके दिल में, उसके दिल में, कोई किसके दिल में
आप हैं मेरी नज़र में, आप मेरे दिल में
कौन है किसकी नज़र में, कौन किस के दिल में
आज ख़ुश तक़दीर मुझसा कौन है, कोई
दिल मेरे पहलू में, वह दिलबर[2] भी मेरे दिल में
कोई आया भी, मिला भी, अपने घर भी चल
जो मेरे दिल में तमन्ना थी, वह अब तक दिल

—'नूह'

× × ×

इस तरफ़ भी हो निगाहे लुत्फ़ ऐ आलम नवाज़[3],
एक जहाने आरज़ू, आबाद मेरे दिल में है।

---

१—परदा ( यह अरब की तरफ़ जनानी सवारी के लिए बना होता है ) २—प्रियतम, ३—संसार के मालिक।

.करता मैं तो होता और भी रुसवाये खल्क़[1],
ग़नीमत है कि दिल का राज़ मेरे दिल में है।
तरफ़ ज़ौक़े[2] परसतिश, एक तरफ़ शौक़े[3] सजूद,
: काबे के सनम ख़ाना[4] हमारे दिल में है।
के आगे न पूछो, इसमें है एक ख़ास राज़,
: बता देंगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

मुझको वह लज़्ज़त मिली एहसास[5] मुश्किल होगया,
रहते रहते दिल में तेरा दर्द भी दिल होगया।
ऐ निगाहे यास[6] यह क्या रंग महफ़िल होगया,
मैंने जिस दिल की तरफ़ देखा मेरा दिल होगया।
हिज्र की शब[7] का गुज़रना सख़्त मुश्किल होगया,
एक एक तारा मेरा डूबा हुआ दिल हो गया।
इश्क़ उनसे करके ग़म सहने के क़ाबिल हो गया,
पहले दिल ही दिल था, अब दिल बन गया, दिल हो गया।
इश्क़ में ग़म के सेवा क्या मुझको हासिल हो गया,
दिल इधर आया, उधर आया गया दिल हो गया।

---

१—संसार में बदनाम होना, २—वन्दना करना ( पूजा करना ),
—सर झुकाना ( माथा घिसना ), ४—मंदिर, ५—ख़याल, ६—
नेराशा, ७—बिरह की रात।

## दर्दे-दिल

हमने माना दिल नहीं लेकिन कभी दिल हो
तीर पहलू में जो आ बैठा वही दिल हो
हमने क्या देखा, यह देखा उनका जलवा देख
मुबतिलाये[1] दर्दो ग़म अच्छा भला दिल हो
मैं कहूँ मेरा है, तो इसको न मानेगा
आपकी मुट्ठी में जाकर आपका दिल हो
वह निगाहे नाज़ से देखें न देखें इस
तीर इतने आगये तरकश मेरा दिल होगया
चार रातें, चार दिन, और इस क़दर
दूसरे तुम होगये, अब दूसरा दिल होगया
कूये-जानाँ[2] से उड़े थे चन्द ज़र्रे ख़ाक
बन गया कोई जिगर उनमें कोई दिल होगया
हुस्न का जलवा देखाता और क्या अपना
अब्र[3] में बिजली बना आग़ोश[4] में दिल होगया।
दिल निकाले पर निकलवाये कोई मुमकिन
दिल में रहते रहते तीरे नाज़ भी दिल हो गया।
सैकड़ों तूफ़ान उट्ठें इश्क़ में कुछ ग़म नहीं,
"नूह" का दिल भी जनाबे नूह का दिल हो गया।

—'नूह' नारवी

× × ×

1—मुब्तला में, 2—प्रियतम की गली, 3—बदली, 4—गोद।

आज़ार से यह फ़ैज़ हासिल हो गया,
ग़म रफ़्ता रफ़्ता अब मेरा दिल हो गया।
कर, या क़ह्र[4] कर, इससे मुझे मतलब नहीं,
तुझको दे दिया दिल अब तेरा दिल हो गया।
अदा से जो चुभा था आपका तीरे नज़र,
रहते अब वही दिल में रगे दिल हो गया।
उलफ़त ने दिखाया ऐ "जया" उल्टा असर,
मेरा दिल, वह मुझसे और बददिल हो गया।

—'जया' देवानन्दपुरी

× × ×

वसअते[5] दुनिया ए दर्दो ग़म में कामिल हो गया,
बढ़ते बढ़ते एक क़तरा ख़ून का दिल हो गया।
उसको घर बैठे कमाले इश्क़ हासिल हो गया,
दिल से तुमने कह दिया जिस दिल को वह दिल होगया।
हुस्न की दुनिया में फैली है इसी की रोशनी,
आसमाने इश्क़ का तारा मेरा दिल हो गया।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

टूट के अब खंजरे क़ातिल नहीं मिलता,
दिल मिलते हैं मेरा सा मगर दिल नहीं मिलता।

---

१—घोर दुख, २—दुख का आदि, ३—कृपा, ४—ग़ज़ब, ५—फैलाव।

## दर्दे-दिल

अब लुत्फ़ ग़मो शिकवये[1] बातिल नहीं मिलता,
वह आँख नहीं मिलती है वह दिल नहीं मिलता।
वे गानगीओ इश्क़ में बस फ़र्क़ है इतना,
जब दर्द नहीं मिलता था अब दिल नहीं मिलता।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

किस ग़ज़ब की यास बुरिश[2] खंजरे क़ातिल में
साथ दिल के ज़ख्म खाती है जो हसरत दिल में
जामे जम भी आइना था कोई क़ाबिल ना
जिसमें वह मुँह देख ले वह आइना इस दिल में

—'यास'

× × ×

या रब कोई किसी से न अपना लगाये दिल,
किस दिल से मैं बयान करूँ माजराय[3] दिल
हम क्यों फ़िज़ूल इसकी हिफ़ाज़त किया करें,
आता हो आये दिल, कहीं जाता हो जाये दिल।
दिल का लगाव आप समझते थे दिल्लगी,
अब क्यों है हाय हाय जिगर, हाय हाय दिल।

---

१—व्यर्थ गिला, २—काट, ३—हाल।

[दुन]िया में दिल्लगी का मज़ा दिल्लगी से है,
[आ]ये न जो किसी पे वह दोज़ख में जाये दिल।

—'नूह' नारवी

× × ×

जो कहें वह कर देखायें इसके हम आमिल[1] नहीं
दो ज़बाने क्यों नहीं, किस वास्ते दो दिल नहीं।
ज़र्रा ज़र्रा मेरे हस्ती का बना खुरशीदे[2] इश्क़,
हुस्न की दुनिया में फिर भी एहतरामे[3] दिल नहीं।
क्या करूँ ऐ खंजरे ग़म, क्या करूँ ऐ तीरे इश्क़,
हैं तो दो पहलू, मगर दोनों में एक एक दिल नहीं।
ज़िन्दगी गुज़रे जो बेलुत्फ़ी में वह क्या ज़िन्दगी,
मुझको एक एक सांस पर हासिल सुकूने दिल नहीं।
दिल से निकले, लब तक आये, लब से पहुँचे अर्श[4] तक,
दिल ही दिल में जो रहे छुट कर वह आहे दिल नहीं।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

वह ज़माना और था, अब दिल था, दिल में इश्क़ था,
अब न वह दिल है, न अब वह बेक़रारी दिल में है।
उनके इस कहने ने, मुझको मार डाला वक्त़ क़त्ल,
और भी कोई तमन्ना, अब हमारे दिल में है।

१—अमल करना, २—सूरज, ३—आदर, ४—आकाश।

चोट खाये हमनशीं[1] यों तो ज़माना होगया,
दर्द लेकिन पेश्तर से, अब ज़्यादा दिल में है।

—'आबिद' शाहजहाँपुरी

× × ×

निशां कामिल यही है नामावर[2] हैं कूये[3] क़ातिल
कहीं टुकड़े गरेबां के कहीं टुकड़े मेरे दिल
ज़माने से जुदा क़ानून है सरकारे उलफ़त
लड़ीं आँखें किसी से और टुकड़े हो गये दिल

—'ख़लिश' गया

× × ×

"गिरह कैसी पड़ी है, इस तरफ़ आओ ज़रा देखो,
तुम्हारी ज़ुल्फ़ में बेशक मेरा खोया हुआ दिल है।
किसी पहलू, किसी करवट नहीं मैं चैन लेता हूँ,
"नज़र" उस शोख़ पर जब से मेरा आया हुआ दिल है।

—'नज़र' गोरखपुरी

× × ×

क्या ख़बर उनको पड़ी किस किस जगह मेरी निगाह
मह ऐसे आज वह पामालिये[4] दिल में रहे।

—'फ़साहत' लखनवी

× × ×

1—साथी, 2—दूत, 3—प्रियतम की गली, 4—पाँव से मलना।

को डर है कि सांस लेने में
: जायें न आबले दिल के।

—'आज़म' फरेवी

× × ×

जो वाक़िफ़कार हैं, वह सख़्त मुश्किल इसको कहते हैं,
दिल आज़ारों[1] को हम ने दिल दिया, दिल इसको कहते हैं।
चुरा ले जाओ सीने से, उड़ा ले जाओ पहलू से,
मगर यह जान लो हसरत भरा दिल इसको कहते हैं।

× × ×

र्यों वह नज़र लड़ा के तग़ाफ़ुल[2] से काम लें,
यों दिल के साथ साथ मिटे दिल की आरज़ू।
निया में अब तुम्हें यही क्या काम रह गया,
स दिल की आरज़ू, कभी उस दिल की आरज़ू।
रते नहीं वह क़त्ल मुझे इस ख़्याल से,
नकले न दम के साथ कहीं दिल की आरज़ू।
रूँगा फिर न मैं कभी इसको निकाल कर,
देर फिर के दिल ही दिल में रहे, दिल की आरज़ू।
मको तमाम उम्र यह अरमान ही रहा,
यों कर निकालता है कोई दिल की आरज़ू।

1—दिल दुखाना, 2—ग़फ़लत।

## दर्दे-दिल

ऐसा कोई नहीं जिसे हसरत कोई न हो,
वह दिलरुबा हैं उनको भी है दिल की आरज़ू।
ऐसा न हो कि पूछ के वह शरमिसार[1] हों,
मैं क्या बताऊं, क्या है मेरे दिल की आरज़ू।
घर चाहिए कोई इसे रहने के वास्ते,
क्यों आरज़ू को हो न मेरे दिल की आरज़ू।
जिस खूबरू को ख्वाब में आना मुहाल[2] था,
पहलू में उसको लाई मेरे दिल की आरज़ू।

—'नूह' [illegible]

× × ×

रो रहे हैं थाम कर अपना कलेजा अहले [illegible]
हुस्न की दुनिया में खो बैठे हैं अपना दिल कहाँ
उनका दिल मिल जाय, मेरे दिल से यह दुआ है।
आज तक मिलते हुए देखे किसी ने दिल कहाँ
दिल से अहले दिल यह कहते हैं मेरा दिल देखकर
दिल तो है पहलू में सब के, लेकिन ऐसा दिल कहाँ

× × ×

फंसेगी रूह जहमत में, पड़ेगी जान मुश्किल में,
तुम्हारा तीरे नाज़, अब करवटें लेने लगा दिल में।

---

1—लज्जित, २—मुश्किल।

आख़िर अजब आलम रहा बीमारे उलफ़त का,
हारी शक्ल आँखों में, तुम्हारी याद थी दिल में।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

इस तरह आसान करनी अपनी मुश्किल चाहिए,
घुट के मर जाना, तुझे ऐ हसरते दिल चाहिए।
एक से हैं एक बढ़ चढ़ कर ज़माने में हसीं,
किस को ऐ दिल चाहिए, किसको न ऐ दिल चाहिए।
दिल जो माँगा मैंने तो उसने कहा लाखों तो हैं,
कौन सा दिल माँगते हो, कौन सा दिल चाहिए।
कोई कहता है कि दिल उलफ़त में हमने दे दिया,
कोई कहता है कि उलफ़त के लिये दिल चाहिए।
हम बतायें आप क्या जाने अभी आदाबे[1] इश्क़,
इश्क़ में पासे वफ़ा ऐ हज़रते दिल चाहिए।
कुछ दिनों से कोई ख़्वाहाँ[2] हो गया है जान का,
कुछ दिनों से कोई कहता है हमें दिल चाहिए।
कह रहे हैं वह कि हम तुमसे मिलेंगे हश्र[3] में,
हश्र उठाना अब तुझे ऐ नालये दिल चाहिए।
हम तो देते हैं यही इसको मोहब्बत में सलाह,
जो न चाहे आपको, उसको न ऐ दिल चाहिए।

---

१—ढंग, २—ग्राहक, ३—प्रलय।

कम से कम अच्छी तरह रखियेगा रखने की त[a]
लीजिये दिल लीजिये, हाँ चाहिये, दिल चाहि
"सोग" हम से वह न पूछे सोगवारी[1] का दर्द
इसके सुनने को कलेजा चाहिए, दिल चाहि

—'सोग' वस्तुतः

× × ×

यह देखा रंग मैंने जाके उस क़ातिल की महफ़िल का,
न दिल को होश है सर का, न सर को होश है दिल का।
मिले वह दिलरुबा तनाज़[2] ऐ "सिद्दीक़" मुश्किल है,
नहीं मिलता है जब आपस में एक एक हर्फ़ भी दिल का।

—'सिद्दीक़' नार्त

× × ×

कोई हाले ज़ार में शामिल नहीं
आज अपना दिल भी, अपना दिल नहीं।
यह किसी लायक़, किसी क़ाबिल नहीं,
पहले दिल, दिल था मगर अब दिल नहीं।
दिल जिसे कहते थे पहले अहले दर्द
अब वह क़तरा है लहू का दिल नहीं।
ध्यान है दोनों को अपनी बात
आज या हसरत नहीं, या दिल नहीं।

1—रंज, 2—शरीर।

देखते हैं आप लाखों दाग़े इश्क़,
है यह गुलदस्ता हमारा दिल नहीं।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

ा हो कि हसरत ख़ुद बख़ुद मुश्किल से निकलेगी,
ुम दिल से निकालोगे, तो मेरे दिल से निकलेगी।
यह निकले तो हो उम्मीद उसके भी निकलने की,
ल पहलू से निकलेगा न हसरत दिल से निकलेगी।

× × ×

क्यों न हम इसको कलेजे से लगाये रक्खें,
जिस पर उनका भी दिल आया है यह दिल वह दिल है।
दो घड़ी एक जगह चैन से रहती ही नहीं,
बर्क़[1] कहते हैं जिसे सब वह किसी का दिल है।

× × ×

हसी में दूसरा ग़म करने वाला कौन है,
पने दिल को रो रहा हूँ बैठ कर मैं दिल के पास।
ाने इसको पास रखते, लेकिन इसका पास[2] है,
हमारे दिल में है तू है हमारे दिल के पास।
म जो घबराये, तो इतमीनाने ख़ातिर के लिये,
ाव के दिल दोज़ आ बैठा हमारे दिल के पास।

1—बिजली, २—ध्यान।

## दर्दे-दिल

हम तेरे लुत्फ़ो इनायत के हों क़ायल किस तरह,
दिल की हसरत दिल में है, दिल की तमन्ना दिल के पास।

× × ×

रह गया बस अब इसी पर ज़िन्दगी का ...
हम करें पहलू से दिल को अपने किस दिल से ...
—'नूह' ...

× × ×

निगाहे नाज़ से यों मुसकुरा कर देखने वाले,
कभी यह चीज़ तेरी थी, मगर अब तो मेरा दिल है।
—'दौर' ...

× × ×

हमीं पर मेहरबां तीरे निगाहे नाज़ क़ातिल ...
यह ज़िक्र उस वक्त का है, जब हमारे पास भी दिल ...
सलामे शौक़ पर, वो बेरुख़ी से देखने ...
कभी थे हम भी दिल वाले, हमारे पास भी दिल ...
—'क़दीर' लखनवी

× × ×

इसको अपने दिल में लाए हैं बड़ी मुश्किल से हम,
अब करें दिल से जुदा बिलफ़र्ज़ तो किस दिल से हम।

न गया हीला उन्हें, यह तर्क[1] रस्मो राह का,
क दिल बोले बढ़ायें रब्त क्या वे दिल से हम।
तरफ़ उसकी फ़ुग़ां[2], इस सिम्त अपनो रोक थाम,
ल बहुत आजिज़ है हम से और आजिज़ दिल से हम।
समें जलवा आप का, इसमें है मस्कन[3] आपका,
पने पहलू से जुदा दिल को, करें किस दिल से हम।
गये पहलू से तुम लेकिन हो फिर भी बदगुमां[4],
ग़ैर को चाहेंगे तो चाहेंगे अब किस दिल से हम।

—'कुरवा' गयावी

× × ×

वफ़ादारी[5] की झलक भी इश्क़ कामिल में रहे,
जो रहा अब तक मेरे दिल में वही दिल में रहे।

× × ×

मुझे चलना रहे इश्को वफ़ा में सख्त मुश्किल है,
इधर देखो इधर दिल है, उधर देखो उधर दिल है।

× × ×

निकलना सख्त मुश्किल, फंस गये हम सख्त मुश्किल में,
तेरी महफ़िल में यों हैं, जिस तरह अरमान हों दिल में।

---

१—छोड़ना, २—कराहना, ३—रहने की जगह, ४—बुरे भाव, ५—सभ्यता।

## दर्दे-दिल



अगर आग़ोश[1] में तुम चैन से रहने नहीं
तुम्हारी याद क्यों रहती है हिर फिर कर मेरे दिल

× × ×

एक बेकस[2] पर हज़ारों ज़ुल्म हों, लाखों सितम,
है शिकायत आप से और आपके दिल से मुझे।
वह यह कहते हैं कि वापस इसको दे सकता नहीं,
अब तो उल्फ़त हो गई, कुछ आपके दिल से मुझे।
बे.ख़ुदीऐ शौक़ में इससे भी हूँ मैं बेख़बर,
कहते हैं वह दिल से या वह ऊपरी दिल से मुझे।

× × ×

क्या कहा अहले मोहब्बत रह्म के क़ाबिल
सख़्त दिल जैसा तुम्हारा है किसी का दिल नहीं
वह हमारा दिल था, जो सहता रहा ज़ुल्मो सितम
आपकी बातें सुनें दुश्मन का ऐसा दिल नहीं।

× × ×

'ग़नी' मैं यह समझता हूँ तो उनका तीर क्यों खींचूं,
कलेजे में समायेगा, जो निकलेगा मेरे दिल से।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

1—गोद, 2—दुखी।

पूछना जो कुछ हो तुझको वह इसी कामिल से पूछ,
दिल की बातें दिल से सुन, दिल की हक़ीक़त दिल से पूछ।
हम से वह कहता है ले जाने को हम तैयार हैं,
दिल न जायगा कि जायगा, यह पहले दिल से पूछ।
यह तग़ाफ़ुल[1] है बुरा, यह बेरुख़ी अच्छी नहीं,
रंज दिल का, दर्द दिल का, हाल दिल का दिल से पूछ।
"नूह" क्यों उल्फ़त में तू लेता है औरों को सलाह,
राय जो कुछ पूछनी हो तुझको अपने दिल से पूछ।

—'नूह' नारवी

× × ×

[तु]म कभी आकर जो देखो तो तुम्हें मालूम हो,
[क्य]ा वह दुनियाये तमन्ना[2] क्या मेरे दिल में नहीं।

× × ×

बचेगा फिर बसद[3] मुश्किल किसी से,
लगाओ तो किसी दिन दिल किसी से।
लड़ा करती हैं आँखों से तो आँखें,
नहीं मिलता किसी का दिल किसी से।

---

१—बेपरवाही, २—कामनाएँ, ३—सैकड़ों।

यह खुल जाता है सब पर वे कहे
नहीं छुपता है हाले दिल किसी

—'बिस्मिल'

× × ×

हर हसीं एक शमां है, हर जा है एक महफ़िल मुझे,
दे दिया क़ुदरत[1] ने परवाने का शायद दिल मुझे।
मिल गया क़िस्मत से एक हमदम[2] हमें मुश्किल मुझे,
मैं शबे ग़म दिल को देता हूँ तसल्ली दिल मुझे।

—'बर्क़'

× × ×

रक्खी मुदाम[3] खारे तमन्ना ने छेड़ क्या
इसके मज़े को आबलाये दिल से पूछिये।
क्या आप में है बात उसे जानता हूँ मैं,
क्या गुल में वस्फ़[4] है यह अनादिल[5] से पूछिये।
रश्के-रक़ीब[6], जौरे-बुतां[7], दाये आरज़ू
चाहत में जो मज़े हैं मेरे दिल से पूछिये।

—'अख़्तर' नगीनवी

× × ×

1—ईश्वर, 2—साथी, 3—हमेशा, 4—गुन, 5—बुलबुल,
6—दुश्मन की जलन, 7—माशूक़ों के ज़ुल्म।

]



ऐ खूंखार चल कर अब नई मुश्किल में है,
तुम्हारे हाथ में है कुछ हमारे दिल में है।
तरह और उस तरह, दम हर तरह मुश्किल में है,
में दिल है मेरा, या तीर मेरे दिल में है।
के बेदाद शायद ले गया हो अपने साथ,
रज़ू का ज़िक्र कैसा, वहस अब तो दिल में है।
सको चाहें किस तरह हम किसको देखें किस तरह,
आलम है नज़र में, एक दुनिया दिल में है।
ता[1] रफ़्ता मिट गये वह सब हमारे जौको शौक़,
तहा यह है कि अब हसरत की हसरत दिल में है।
रसिशे[2] दर्दे मोहब्बत से, मोहब्बत खुल गई,
रे ही दिल में नहीं, यह आपके भी दिल में है।
ल्ला अल्ला, दास्ताने आरज़ू का सिलसिला,
कह चुका सब कुछ, मगर फिर भी बहुत कुछ दिल में है,
शुक्र[3] करता हूँ कि मेरी हसरतें निकली नहीं।
जिस क़दर थी दिल की पूंजी वह अभी तक दिल में है।
खारे[4] सहरा खुद कफ़ेपा[5] से अलग हो जायंगे,
आप वह कांटा निकालें, जो हमारे दिल में है।

---

१—धीरे-धीरे, २—पूछगछ, ३—धन्यवाद, ४—जंगली कांटा, ५—तलुवा।

## दर्दे-दिल

क्यों न तूफ़ाने सख़ुन[1] से शाद हों अहले[2] सख़ुन,
एक नया पहलू जनावे "नूह" के हर दिल में है।

—'नूह'

× × ×

क्या गिला क़ातिल से, क्या शमशीरे[3] क़ातिल से मु
रंज जो पहुँचा, वह पहुँचा, इश्क़ में दिल से मु
आज बरसों में मिला मौक़ा यह मुश्किल से मु
दिल के बस दो हर्फ़ कहने हैं, तेरे दिल से मु
उनका जलवा कह रहा है, मैं तो हूँ चारों
देखने वाला जो देखे दीदये[4] दिल से मुझे
वह यह कहते हैं अगर पहलू में तेरे दिल को
दिल में क्या रक्खेगा तू चाहेगा किस दिल से मुझे
जान जब मैंने कहा, उसको तो वह कहने लग
होगई अब ख़ास निस्बत आपके दिल से मुझे।
कर दिया "बिस्मिल" को उस क़ातिल ने बिस्मिल और मैं
इस क़दर कह कर, नहीं तुम चाहते दिल से मुझे।

× × ×

कशमकश[5] में फँस गये, ज़हमत में मुश्किल में रहे,
आप वे समझे हुये क्यों ग़ैर के दिल में रहे।

१—कविता, २—कविगण, ३—तलवार, ४—दिल की [illegible]
५—झंझट।

तो अपना शरीके हाल मुश्किल में रहे,
नहीं रहते, तुम्हारी याद ही दिल में रहे।
कही यह बात तूने ऐ गिरफ़्तारे क़फ़स[1],
न हो तो क्या ख़्याले आशियाँ[2] दिल में रहे।
ाही तिनके में तिनके, जो बनायें आशियाँ,
वही गुल[3] है जो मिनकारे[4] अनादिल[5] में रहे।
बुतों की आरज़ू, इश्क़े ख़ुदा के साथ साथ,
बुतख़ाना[6] भी अपने क़ाबये दिल में रहे।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

क्या फ़ायदा रोने धोने से, जब इसका कुछ हासिल ही नहीं,
क्या दर्द सुनायें अपना जब, सीने में तुम्हारे दिल ही नहीं।
आँखों को रंग नहीं भाते, कानों को राग नहीं भाते,
जीते थे जिसके सहारे हम सीने में अब वह दिल ही नहीं।

—'जिगर' बरैलवी

× × ×

ासमां नज़रों में यों लायेगा मुश्किल से मुझे,
ाम लेना ही पड़ेगा नालये दिल से मुझे।

---

१—पक्षी जो क़ैद में हो, २—घोंसला, ३—फूल, ४—चोंच,
—बुलबुल, ६—मंदिर।

## दर्दे-दिल

उनके दिल को मैं दोआयें देके खुश करता हूँ रोज़,
देखना है अब कि वह कोसेंगे किस दिल से मुझे।
आसमां को दे दिये तारे बनाने के लिये,
जिस क़दर ज़र्रे मिले ख़ाकिसतरे[1] दिल से मुझे।
खो दिया दुनिया से 'अफ़सर' आख़िर इस कमबख़्त ने,
और क्या इसके सेवा उम्मीद थी दिल से मुझे।

—'अफ़सर'

× × ×

जिसे कहते हैं यारो इश्क़ वह मुश्किल से उठे
हमारे दिल से उट्ठेगा, हमारे दिल से उठे।
यह क्या तुम ज़ब्ते सोज़े[2] इश्क़ की ताकीद करते
जो दिल में आग लगती है धुआँ भी दिल से उठे।
यह हैरत हमको आती है तुम्हारे नाले बंद
जो दुनिया से नहीं उठता वह क्योंकर दिल से उठे

× × ×

क्या जाने कोई और मोहब्बत के वाक़यात,
इनको जो पूछिये, तो मेरे दिल से पूछिये।
इसको भी याद है ग़मे फ़ुरक़त[3] का माजरा,
मुझसे न पूछिये वो मेरे दिल [illegible] पूछिये।

1—राख, 2—प्रेम की चिंगारी, 3—विरह।

पुरसिशे मिज़ाज तग़ाफ़ुल[1] के साथ है,
दिल से पूछते थे उसी दिल से पूछिये।

× × ×

किसी से ये वसीला कोई दुनिया में नहीं मिलता,
मिलाने से किसी का दिल किसी के दिल से मिलता है।
हमें बावर[2] नहीं आता, हमें बावर नहीं होता,
जो सुनते हैं किसी का दिल किसी के दिल से मिलता है।
वह आयें, या मुझे बोलवायें, तो मैं उनको समझा दूँ,
नज़र से यों नज़र मिलती है, दिल यों दिल से मिलता है।
तुम्ही से तेरी आँखें अक्सर आईने में लड़ती हैं,
जो मिलता है तेरा दिल तो तेरे ही दिल से मिलता है।

× × ×

लाये[3] रंजो ग़म होना ज़रा मुश्किल भी है,
या दिल जिसने तुमको यह उसी का दिल भी है।
ये पहलू में आये किस तरफ़ वह तीरे नाज़,
ने जानिब है जिगर भी, बायें जानिब दिल भी है।
निगाहे नाज़ का मफ़हूम[4] कुछ खुलता नहीं,
दैली भी दिल से है और आरज़ूये दिल भी है।

—'नूह' नारवी

× × ×

1—ग़फ़लत, 2—यक़ीन, 3—मज़ा में, 4—समझ।

मानता हूँ मैं यह तेरा काम ऐ क़ातिल
क्या हुआ, पहलू से दिल पहलू में फिर क्यों दिल नहीं
कीजिये इसरार[1], लेकिन इससे कुछ हासिल नहीं
मुफ़्त कोई आपको दिल दे दे, वह शै[2] दिल नहीं
तुमसे क़ातिल के लिये, तुमसे सितमगर[3] के लिये
दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं
ग़म जाँ कहता है मुझे दो, नाज़ कहता है मुझे
क्या करूँ मैं एक दिल है और कोई दिल नहीं
तर्के रस्में इश्क़ पर, इन्साफ़ करना चाहिये
बेमुरव्वत आप ही हैं, बेमुरव्वत दिल नहीं
—'आज़ाद' सहसरामी

× × ×

आप छेड़ेंगे इसे तो छेड़ कर पछतायंगे,
एक छाला है मेरे पहलू में, मेरा दिल नहीं।
तिरछी नज़रों पर इसे क़ुर्बान रहना चाहिये,
तुम जो "बांके" हो तो क्यों बांका तुम्हारा दिल नहीं।
—'बांके' देहरादूनी

अस्ल उल्फ़त की निगाहों में किसी क़ाबिल नहीं
उसको पत्थर जानिये, जो दर्द वाला दिल नहीं

१—भेद, २—चीज़, ३—ज़ालिम।

इस तरफ़ कुछ और सूरत उस तरफ़ कुछ और हाल,
एक दिल का लुत्फ़ क्या, हम तुम अगर एक दिल नहीं।
रोज़ो[1] शब इसके तड़पने लोटने से काम है,
'बर्क़' मिस्ले बर्क़[2] क़ाबू में हमारा दिल नहीं।

—'बर्क़' दयापुरी

× × ×

हीं वह सर, कि सौदा हो तुम्हारी ज़ुल्फ़ का,
सेजा जो फ़िदा तुम पर हो, ऐसा दिल नहीं।

—'ख़लिश' गयावी

× × ×

काम होना चाहिये वादों से कुछ हासिल नहीं,
अब मेरी उम्मीद भी, वजहे सुकूने[3] दिल नहीं।

—'सीमाब' अकबराबादी

× × ×

लगा कर, तुमसे हमने किस क़दर सदमे सहे,
कहें अब हाले दिल, क़ाबू में अपना दिल नहीं।

—'क़मर' बनारसी

× × ×

थे किसी क़ाबिल कभी हम, अब किसी क़ाबिल नहीं,
वह जवानी, वह उमंगें, वह जिगर, वह दिल नहीं।

—'हामिद' अज़ीमाबादी

× × ×

१—रात-दिन, २—बिजली, ३—आनंद।

## दर्दे-दिल



हैं बहुत नादिम[1] ज़माने पर भरोसा करके हम,
अब खुला हर एक के सीने में हमारा दिल नहीं।

—'नाविक' गुलाउठी

× × ×

बेवफ़ा से मिलके यह भी बेवफ़ा हो जायगा,
यह ख़बर होती, तो करते एतबारे दिल नहीं।

—'अख़्तर' नागपुरी

× × ×

हम वही हैं देख लो दिल भी हमारा है वही,
तुम वही हो देख लो, अब वह तुम्हारा दिल नहीं।
खुद ही गुम हूँ क्या बताऊँ मैं तुझे ऐ बेखुदी,
ढूंढ़ कर तूही बता, पहलू में है, या दिल नहीं।
दिल सितानी[2] हो चुकी, अच्छा दिल-आज़ारी[3] सही,
दर्द ही तेरा रहे, पहलू में जिसके दिल नहीं।

—'शफ़क़' आमादपुरी

× × ×

एख़्तलाफ़े[4] रंग से, वह रौनक़े महफ़िल नहीं,
दिल तो है पहलू में सब के, एक सब का दिल नहीं।
बज़्मे[5] हस्ती में ठहर कर, हमने देखा हर तरह,
और तो सब कुछ है, लेकिन इम्बिसाते[6] दिल नहीं।

---

१—शर्मिन्दा, २—दिल लेना, ३—दिल दुखाना, ४—वैर-भाव, ५—संसार की सभा, ६—आनंद।

बात बन बन कर बिगड़ती है, तो है इसमें यह बात,
डालते थे जो असर दिल पर, वह अहले दिल नहीं।
एक के दम से, जहाँ में दूसरे की है नमूद[1],
दिल नहीं, तो हम नहीं, हसरत नहीं तो दिल नहीं।
खींचिये आकर ज़रा पहलू से तो खुल जाय राज़[2],
आप कहते हैं कि मेरा तीर जुज़वे[3] दिल नहीं।
अपनी हाजत[4] पर करे, औरों की हाजत का लेहाज़,
यों हमारा, यों तुम्हारा, यों किसी का दिल नहीं।
आपके ग़मज़ों[5] को भी आते हैं क्या क्या जोड़ तोड़,
दिल नहीं पहलू में, लेकिन फिर भी मैं बे दिल नहीं।

—'नूह' नारवी

× × ×

शिकवये ग़म पर हमारे हँस रहे हैं दोस्त भी,
हो गया मालूम, अब दुनिया में अहले दिल नहीं।

—'मदनी' कलकत्तवी

× × ×

ख़ून की लहरों में रह रह के चमक उठता है कुछ,
एक बिजली है, मेरे सीने में शायद दिल नहीं।

—'आग़ाज़' बरारी

× × ×

१—जीवन, २—भेद, ३—हिस्सा, ४—ज़रूरत, ५—अदाओं।

## दर्दे-दिल

जो आंसुओं से बुझ नहीं सकती किसी तरह,
भड़की हुई वह आग मेरे दिल के पास है।
अब मुझको दूर रहने का शिकवा नहीं रहा,
दिल उसके पास है, वह मेरे दिल के पास है।
उट्ठा जो हाथ ज़ोफ़[1] से, सौ मुश्किलों के बाद,
वह यासो[2] ग़म के साथ मेरे दिल के पास है।

× × ×

तमाशा दिखाये जो दोनों जहां का,
ज़रा आप देखें तो, वह दिल यही है।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

जो तेरे नाज़ का बिस्मिल नहीं है,
हमारी राय में वह दिल नहीं है।
कभी उनकी झलक देखी थी मैंने,
मेरे क़ाबू में अब वह दिल नहीं है।
जिसे नफ़रत हो अच्छी सूरतों से,
नहीं है, वह नहीं है, दिल नहीं है।
यह खो जाये, कि रह जाये, तुम्हें क्या,
हमारा है, तुम्हारा दिल नहीं है।

---

१—कमज़ोरी, २—निराशा।

तहोबाला[1] किया उल्फ़त ने ऐसा,
जहां था, उस जगह अब दिल नहीं है।
गुज़रती है बड़े आराम के साथ,
मेरे पहलू में जब से दिल नहीं है।
ज़रा आँखें मिलाकर फिर तो कहिए,
हमारे पास तेरा दिल नहीं है।
कभी तुम जिसको ख़ुश होकर निकालो,
वह मेरी आरज़ूये, दिल नहीं है।

—'नूह' नारवी

× × ×

इसी ने मेरी यह हालत बना दी,
यह मारे[2] आसतीं है, दिल नहीं है।
सताता तू है क्यों "राना" को इतना,
तेरे सीने में शायद दिल नहीं है।

—'राना' ग्वालियरी

× × ×

यह है मुट्ठी में, क्या कहते हो, यह क्यों,
नहीं है, दिल नहीं है, दिल नहीं है।

—'शाकिर' ग्वालियरी

× × ×

---

१—उलटपलट, २—आस्तीन का साँप।

जो तेग़े[1] यार के क़ाबिल नहीं है
कलेजा वह नहीं है, दिल नहीं है।
हम अपने दिल को, दिल समझे हुए हैं
हमारा दिल, तो कोई दिल नहीं है।
अगर दिल है, तो दिल में है मोहब्बत,
मोहब्बत फिर कहां, जब दिल नहीं है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

हयाते[2] चन्द-रोज़ा[3] के, सवानेह[4] मुख़तसिर यह हैं,
न देखा जिसने दुनिया को, नज़र भर के वह मैं दिल हूँ।
उबल आये न दरिया आँसुओं का चश्म गिरियाँ[5] से।
न छेड़ए हमनफ़स[6], लिल्लाह[7] मैं दुखता हुआ दिल हूँ,

—'महशर' लखनवी

× × ×

तुमने देखा था इस अन्दाज़ से क्यों मेरी तरफ़,
अब संभलता है, संभाले से कहीं दिल मेरा?
लाऊं मैं इश्क़ में, फिर और कहां से गर्मी,
तू भी गर साथ न दे, ऐ तपिशे[8] दिल मेरा।

---

१—तलवार, २—ज़िन्दगी, ३—थोड़े दिन, ४—इतिहास, ५—आँख रोने वाली, ६—साथी, ७—ख़ुदा के वास्ते, ८—तड़प।

घुट के उस अंजुमने[1] नाज़ से अफ़सोस 'जलील',
अब बहलता किसी महफ़िल में नहीं दिल मेरा।

—'जलील' क़िदवाई

× × ×

मुरादें बेकसों की भी, कभी बर आती हैं यारब[2],
यह मुमकिन है तो नाक़ामे[3] तमन्ना क्यों मेरा दिल है।
मआज़[4] अल्ला, मुसीबत और वह भी शामे हिजरां[5] की,
न दिखलाए ख़ोदा दुश्मन को भी वह हालते दिल है।

—'महवी' लखनवी

× × ×

शिकस्ता[6] शीशों को भी मल न आये बे दर्द तलुओं से,
समझ हर टुकड़े को, टुकड़ा किसी टूटे हुए दिल का।

—'ख़ुरशीद' लखनवी

× × ×

ार असर, कुछ मेरी फ़रियाद को हासिल होजाय,
मेरी हर आह शिकस्ता भी मेरा दिल होजाय।

—'इशरत' देहलवी

× × ×

१—सभा, २—ईश्वर, ३—जिसकी इच्छा न पूरी हो, ४—खुदा की पनाह, ५—विरह की शाम, ६—टूटे हुए।

आबरू इश्क़ में पाये, किसी क़ाबिल होजाय,
दिल से जिस दिल को, वह दिल कहदें, वही दिल होजाय।
लज़्ज़ते जख़्में सितम, यों मुझे हासिल होजाय,
हो जिधर तीर तेरा, दिल से उधर दिल होजाय।
ज़र्राये कूचये ग़म को है यों ही बेताबी[1],
तुम जो रख दो क़दम उस पर, हमातन[2] दिल होजाय।

× × ×

क़यामत है कि नक़्शे[3] मुद्‌आ जमने नहीं पाता,
वह मेरे दिल में मेहमां रह के मालिक बन गये दिल के।
यह सूरत हो, तो मुझको एतबारे ज़िन्दगी क्यों हो,
बदलते रहते हैं, दम भर में सौ नक़्शे मेरे दिल के।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

जान कर महवे[4] रुखे[5] क़ाबिल मुझे
और तड़पाता है, मेरा दिल मुझे।
हिज्र[6] की शब और क्या है मशग़ला,
दिल को मैं रोता हूँ, मेरा दिल मुझे।
शिकवये लुत्फ़ोइनायत[7] है फ़ुज़ूल,
फेर देंगे क्या वह मेरा दिल मुझे।

१—बेचैनी, २—सारा बदन, ३—मतलब का निशान, ४—मगन,
५—प्रियतम का चेहरा, ६—विरह की रात, ७—कृपा।

उस तरफ़ है दिल को मेरी जुस्तजू[1],
इस तरफ़ है जुस्तजूये दिल मुझे।
क्या खबर थी, पहले क्या मालूम था,
लेके दे देंगे वह दाग़े दिल मुझे।
जान भी सर्फ़े तमन्ना हो गई,
कर गया बरबाद मेरा दिल मुझे।
जो न कहना था वह मुंह पर कह गया,
दिल्लगी ही दिल्लगी में दिल मुझे।
लेने वाला, उसको लेकर चल दिया,
देने वाले ने दिया था दिल मुझे।
ग़म जो देना था तो देना ही न था,
किस तरह का, इस तरह का दिल मुझे।

—'नूह' नारवी

× × ×

हाथ पहलू पर धरा है करते हैं दिलबर[2] की फ़िक्र,
पूछते फिरते हैं गलियों में किसे दिल चाहिये।

—'रशीद' लखनवी

× × ×

१—तलाश, २—प्रियतम।

कोई पुरसां सरे महफ़िल नहीं है
हमारे पास जैसे दिल नहीं है।
—'हसरत' लखनवी

× × ×

अस्ल फ़ितना[1] है क़यामत में बहारे फ़िरदौस[2],
जुज़ तेरे कुछ भी न चाहे वह मुझे दिल देना।

× × ×

ढूंढते फिरते हैं खोये हुए दिल को अपने,
हमने जिस दिन से सुना घर है तुम्हारा दिल में।
—'असी' ग़ाज़ीपुरी

× × ×

निकालूं मैं तो अब उनका निकलना सख़्त मुश्किल है,
वह रहते रहते दिल में हो गये मालिक मेरे दिल के।
मिला कर वह नहीं लिखता कभी इन दोनों हर्फ़ों को,
किताबत[3] में भी उसने, टुकड़े कर डाले मेरे दिल के।
मरा जाता हूँ मैं बेमौत मरने की तमन्ना में,
रहे जाते हैं मेरे दिल में सारे हौसले दिल के।
न निकलेगी कोई हसरत, न निकलेंगे कभी अरमाँ,
मेरे दिल से, मेरे दिल की, मेरे दिल से मेरे दिल के।

१—उपद्रव, २—बैकुंठ का आनन्द, ३—लिखना।

कल आया यह पहलू और ताज़ा खाना[1] जंगी का,
ारे दिल न देने पर वह दुश्मन हो गये दिल के।

—'नूह' नारवी

× × ×

आँख ऐसी कर अता[2] ऐ मुर्शिदे[3] कामिल मुझे,
ज़र्रे ज़र्रे में नज़र आने लगे एक दिल मुझे।

—'नाज़ुक' साहब

× × ×

यह ग़लतफ़हमी[4] है, धोका है कि वह महमिल में हैं,
लैलिये पर्दा नशीं तो क़ैस[5] तेरे दिल में है।

—'सफ़ीर' देहलवी

× × ×

किसने तिरछी निगाह से देखा,
क्यों ख़लिश आज बढ़ गई दिल की।

× × ×

अज़ल[6] ही से हैं महरूमें[7] सुकूँ वक्फ़े-तपिश[8] 'कौकब',
अजब आफ़त का टुकड़ा है जिसे सब दिल समझते हैं।

—'कौकब' शाहजहाँपुरी

× × ×

१—घरेलू झगड़े, २—दे, ३—गुरु, ४—ग़लत समझना, ५—मजनूँ का असली नाम है, ६—आदि ७—आनन्द से रहित, ८—हमेशा को तड़पना।

उफ़ रे नख़वत[1] खेंचते हैं किस क़दर दूर आपको
दिल में रह कर भी नहीं रहते वह मेरे दिल के पास।
एक दिल था मेरे पहलू में वह तुम ले ही चुके
अब नज़र किस पर है अब रक्खा है क्या बेदिल के पास।
उस तरफ़ की नज़र तो इस तरफ़ भी देख लो,
एक जिगर भी है तमन्नाई तुम्हारा दिल के पास।
शक्ल आती है नज़र इसमें किसी की या नहीं,
देख तो लूँ मैं ज़रा आइना रख कर दिल के पास।

—'मेहर' ग्वालियारी

× × ×

चलाते हो अगर तीरे नज़र तो तुमको लाज़िम है,
कलेजा किस तरफ़ है, किस तरफ़ दिल देखते जाओ।

—'बिरियां' इलाहाबादी

× × ×

मुझे अफ़सोस अपनी मौत का है गर तो इतना है,
कि मिट्टी में मिलेंगे सैकड़ों टुकड़े मेरे दिल के।

—'फ़रयाज़' हरियानवी

× × ×

ख़ाक में मिलवा दिया, मिलवा के क़ातिल से मुझे,
इस्मते दिल का है शिकवा, इस्मते दिल से मुझे।

1—घमंड।

क्या हो उम्मीदे[1] करम उस मीरे महफ़िल से मुझे,
दिल जो लेकर यह कहे नफ़रत है बेदिल से मुझे।
यह समझ कर वह किसी का दिल कभी लेता नहीं,
दिल न होगा पास तो चाहेगा क्या दिल से मुझे।
अब ख्याल उसका करें तो वह करें, मैं क्या करूँ,
देके दिल, एक बेदिली सी हो गई दिल से मुझे।
यह ग़लत है, मेरी बातों में असर कुछ भी नहीं,
सुनिये दिल से आप, कहने दीजिये दिल से मुझे।
किस तरह तरग़ीब दी जाती है तर्के इश्क़ की,
वह यह कहते हैं कि चाहो ग़ैर के दिल से मुझे।
दिल में तो है उनके मिल जाय किसी सूरत से दिल,
और लब पर यह है, क्या मतलब तेरे दिल से मुझे।
मैंने आखों से अगर आँखें मिलाईं भी तो क्या,
दिल मिलाना चाहिये, उस शोख़ के दिल से मुझे।
कोई कहता है बिगड़ कर दिल तो पहलू में है एक,
यह ग़लत है चाहते हैं आप सौ दिल से मुझे।
मैंने यह माना कि तर्के इश्क़ है आसान काम,
क्या करूँ आता नहीं जीना मरे दिल से मुझे।
ऊपरी दिल से अगर चाहा तो क्या वह चाहना,
चाहना यह है कि चाहो तुम बड़े दिल से मुझे।

---

1—कृपा आशा।

## दर्दे-दिल



मैं बहुत चाहूँ मगर मालूम हो सकती नहीं,
आपके दिल की हक़ीक़त, आपके दिल से मुझे।
वह यह कहते हैं निकालो दर्मियां से बात को,
सख्त नफ़रत हो गई अब "नूह" के दिल से मुझे।

—'नूह' नारवी

× × ×

नाज़िशे[1] सरमाअये[2] आलम था नज़रों में बड़ी,
हम[3] नवा आखिर मेरे पहलू से वह दिल क्या हुआ।

—'ग़ालिब' देहलवी

× × ×

मेरे ही सामने लेकर पटक देना मेरे दिल को,
मुझी से टुकड़े चुनवाना मेरे टूटे हुए दिल के।
ख़ुदा मालूम क़िस्मत किसकी आगे वक्ते आराइश[4],
सजे हैं आइने खाने में इसने आइने दिल के।
दमे अरज़े तमन्ना बेरुख़ी से फेर लीं आंखें,
किसी ने ऐ 'जवान' इस तरह तोड़े आसरे दिल के।

—'जवान' संदेलवी

× × ×

जो दिल था मेरे पहलू में वह अब है उनकी मुट्ठी में,
इसी बायस[5] से शायद वह मुझे बेदिल समझते हैं।

---

१—नाज़ करने योग्य, २—संसार की पूंजी, ३—सजने संवरने के समय, ४—सबब।

हमारी फ़हमे[1] नाक़िस में बुरी है यह ग़लतफ़हमी,
परायों के भी दिल को आप अपना दिल समझते हैं।
—'इन्साफ़' रंगूनवी

× × ×

बरमें क़ातिल घात में थी एकदम ग़ाफ़िल न थी,
बच गया क़िस्मत से तेरी ख़ैर ही ऐ दिल न थी।
—'चर्क़' देहलवी

× × ×

किसी के दर्द को इस सैइये[2] लाहासिल[3] से क्या मतलब,
नहीं अब मुझसे कुछ मतलब तो मेरे दिल से क्या मतलब।
वह बज़्मे[3] नाज़ में बैठे हुए बिजली गिराते हैं,
बला से दिल पे जो गुज़रे उन्हें अब दिल से क्या मतलब।

× × ×

हुए वह मुतमइन, क्यों सिर्फ़ मेरे दम निकलने पर,
अभी तो एक दुनियाये तमन्ना दिल में बाक़ी है।
वह मुझसे दूर खिंचते हैं, खिचें कुछ ग़म नहीं इसका,
कि दिल पहलू में बाक़ी है, कशिश भी दिल में बाक़ी है।
कहां फ़ुरसत हुजूमे[4] रंजोग़म से हम जो यह जानें,
कि निकली क्या तमन्ना, क्या तमन्ना दिल में बाक़ी है।

---

१—तुच्छ बुद्धि, २—कोशिश, ३—बेकार, ४—समूह।

समझते हैं कि मिलना हर तरह उनका है नामुमकिन,
तमन्ना फिर भी मिलने की हमारे दिल में बाक़ी है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

बिगड़ना यों भरी महफ़िल में क्या था,
वह क्या समझे हमारे दिल में क्या था।

—'सफ़ी' लखनवी

× × ×

न अब कहने की हाजत है न कुछ लिखने से हासिल है,
इलाही तुझ पे बस रौशन है जो भी हालते दिल है।
अबस शेख़ो बरहमन में है लफ़ज़ी बहेस का झगड़ा,
मकां उस ला मकां[1] का है अगर कोई तो बस दिल है।

—'नव्वाब' जूनागढ़ी

× × ×

कहे जाते वह सुनते या न सुनते,
ज़बां तक हाले दिल आया तो होता।

× × ×

नाक़िस[2] है दोस्तदारी[3] में कामिल नहीं है तू,
दुश्मन से भी ग़ुबार अगर दिल में रह गया।

× × ×

१—जिसका मकान न हो, २—ऐब, ३—मित्रता।

मुशताक़ जो होता हूँ काबे की ज़ियारत[1] का,
आँखें फिरी जाती हैं तौफ़[2] हरमे[3] दिल को।
—'आतिश' लखनवी

× × ×

"नैयर" से क्यों करे कोई क़ीमत की बातचीत,
मिलते हैं मुफ़ टूटे हुए दिल जगह जगह।
—'नैयर' काकोरवी

× × ×

न्यामतों को देखता है और हंस देता है दिल,
महु हैरत हूँ कि आख़िर क्या है मेरे दिल के पास।
—'अख़्तर' एम० ए०

× × ×

फूल सैहने, बोसतां[4] में, आइना महफ़िल में है,
एक तेरी तस्वीर दो सूरत से मेरे दिल में है।
अक्स[5] आइने में जैसा है तुम्हारा दिलफ़रेब,
एक ऐसी ही परी सूरत हमारे दिल में है।
हम लिये फिरते हैं आबादी में कुछ वीरानियाँ[6],
ग़म की एक उजड़ी हुई दुनिया हमारे दिल में है।

---

१—दर्शन-अभिलाषा, २—परिक्रमा, ३—काबा, ४—बाग़ का आँगन, ५—परछाईं, ६—बरबादी।

## दर्दे-दिल

दर्दे-दिल का पूछने वाला नहीं कोई "जमाल",
दर्दे-दिल किससे कहूँ मैं, हाय दिल की, दिल में है।

—'जमाल' सवरी

× × ×

न दी राहत[1] किसी पहलू भी इस नक़्शे मोहब्बत ने,
मिसाले दिल था बैठा, दर्द बन कर, दिल से उठता है।

—'बर्क़' बांदवी

× × ×

अब वह अगले हौसले, वह सइये लाहासिल[2] नहीं,
जब से पहलू में मेरे आफ़त का मारा दिल नहीं।

—'अहसान' बांदवी

× × ×

एक हजूमे यासो[3] ग़म एक बेकली एक इज़्तराब[4]
क्या बतायें हमनशीं[5] क्या क्या हमारे दिल में है।

—'महजूर' मांटगमरी

× × ×

ख़ैर समझा तो किसी क़ाबिल मुझे,
ख़ाक में मिलवा के मेरा दिल मुझे।
जिसको ये मालूम हालाते अबद[6],
मिल गया रोज़े[7] अज़ल वह दिल मुझे।

---

१—आराम, २—बेकार कोशिश, ३—निराशा की भीड़, ४—बेक़रारी, ५—साथी, ६—अंत, ७—आदि।

उनकी बर्बादी पे मैं रोया किया,
मिल गये जब ज़र्राहाए दिल मुझे।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

हम वह दिल रखते हैं जो रखता नहीं अपना जवाब,
आप क्या समझे कि हम बेदिल हैं हम बेदिल नहीं।
—'राम' काश्मीरी

× × ×

पूरी भी हो कहीं मेरे क़ातिल की आरज़ू,
मिल जाय ख़ाको ख़ूं में मेरे दिल की आरज़ू।
रह रह के तेग़[1] फेरिये, रुक रुक के निकले दम,
थम थम के निकले दिल से, मेरे दिल की आरज़ू।
हसरत है इसको छिड़के लबे ज़ख़्म पर नमक,
क़ातिल की आरज़ू है, मेरे दिल की आरज़ू।
—'कौकब' मुरादाबादी

× × ×

बड़ी बारे[2] गरां कांधा चोराया जिससे गरदूँ[3] ने,
उसे हमने उठाया देखिये इस हिम्मते दिल को।

---

१—तलवार, २—भारी बोझ, ३—आकाश।

मुझे उल्फ़त में यों गुम[1] गश्तगीये शौक़ रास आई,
कि अब उनको वह ख्वाहिश है जो थी पहले मेरे दिल को।
—'सुहेल' गाज़ीपुरी

× × ×

है मुद्दतों से कूचये क़ातिल की आरज़ू,
निकलेगी जान ले के मेरे दिल की आरज़ू।
घेरे हुए हैं रंज ग़मो यास हिज्र[2] में,
आफ़त में फंस गई है मेरे दिल की आरज़ू।
तड़पा भी, तिलमिलाया भी, लोटा भी बज़्म[3] में,
पूछी न तुमने दर्द भरे दिल की आरज़ू।
—'आग़ाज़' बुरहानपुरी

× × ×

बेख़ुदी में, होश तब आया है मुश्किल से मुझे,
जब पुकारा है किसी ने पर्दये दिल से मुझे।
यह हुआ ज़ाहिर निगाहे नाज़ क़ातिल से मुझे,
हाथ धो लेना पड़ेगा एक दिन दिल से मुझे।
—'अहसन' फ़रनपुरं

× × ×

लड़कपन है नहीं मालूम इसकी क़द्र कुछ उनको,
उन्हें एक खेल है, वह एक खिलौना दिल समझते हैं।

---

१—खो जाना, २—विरह, ३—सभा।

नज़र आता है जब टूटा हुआ सागर[1] कोई "शोहरत",
हम उसको कूचये साक़ी में अपना दिल समझते हैं।

—'शोहरत' कानपुरी

× × ×

शौक़े दीदार में सब ताबो-तवां[2] खो बैठे,
रह गई एक तमन्ना ही तमन्ना दिल में।

—'अवहर' गुरवारवी

× × ×

निगाहे नाज़ से फिर देखले कोई मुझको,
फिर कोई राह-ज़ने[3] क़ाफ़िलये दिल होजाय।

—'उफ़ुक़' अमरोहवी

× × ×

फ़स्ल गुल[4] में यह मसर्रत[5] मुझे हासिल होजाय,
खिलने वाला हो जो गुञ्चा[6] वह मेरा दिल होजाय।
फेर दें आप यह दुख दर्द का साथी मुझको,
मेरे पहलू में तड़पने के लिये दिल होजाय,
चल सरेराह[7] ज़रा देख कर वह मस्ते अदा।
कोई पामाल[8] न अरमान भरा दिल होजाय,

—'ताज' अमरोहवी

× × ×

---

१—प्याला, २—ताक़त, ३—डाकू, ४—वसंत ऋतु, ५—आनन्द,
६—कली, ७—मार्ग में, ८—पांव से मलना।

सांस लेता हूँ तो आती है सदाये[1] गिरियाँ,
रोते रोते कहीं पानी न मेरा दिल होजाय।

—'फ़य्याज़' मेरठी

× × ×

लुत्फ़ जब नाले का है दौरे ख़ज़ां[2] में बुलबुल,
जो शिगूफ़ा खिले गुलशन में वही दिल होजाय।
दौरे आलम में मेरे दिल की हक़ीक़त क्या है,
वह जिसे कह दें कि यह दिल है वही दिल होजाय।

—'ज़ार' मेरठी

× × ×

फूल चुनने के लिये जाओ जो तुम गुलशन[3] में,
हर कली शौक़ में अरमान भरा दिल होजाय।
फिर तो एक आदमी हो जाऊं मज़े का मैं "शबाब",
मेरे क़ाबू में जो क़िस्मत से मेरा दिल होजाय।

—'शबाब' ग्वालियारी

× × ×

या मेरे सोज़े दुरूं[4] का कोई क़ायल होजाय,
या तो बस में मेरे अल्लाह मेरा दिल होजाय।

—'आलम' काश्मीरी

× × ×

१—कराहना, २—पतझड़ की ऋतु, ३—बाग, ४—दिल की आग।

लज़्ज़ते द मोहब्बत वह मिली है कि न पूछ,
अब यह हसरत है कि हर अज़्व[1] मेरा दिल होजाय।
अब ग़ुज़ूमे ग़मो आफ़त से यह खटका है "फ़हीम",
कहीं पामाल न अरमान भरा दिल हो जाय।

—'फ़हीम' गोरखपुरी

× × ×

तू भी होजाय वफ़ादार कहीं मेरी तरह,
लुत्फ़ आजाय जो मेरा सा तेरा दिल होजाय।

—'ख़बर' साहब

× × ×

यही दिल है अगर मेरा तसल्ली हो चुकी मुझको,
यही तुम हो तो बस हसरत मेरा निकली मेरे दिल से।
वह साइत भी कोई होगी कि वह मेहमां मेरे होंगे,
तमन्ना कब इलाही दिल की निकलेगी मेरे दिल से।
यह शोखी तो कोई देखे, वह फ़र्माते हैं दिल लेकर,
हमें तुम चाहते हो, वह यही दिल है, इसी दिल से।
तमन्ना पूछते क्या हो हमारी यह तमन्ना है,
हमारे दिल में आजाओ, निकल कर ग़ैर के दिल से।

---

१—हिस्सा।

## दर्दे दिल



यह क्या हर बार कहते हो हमें अब कीजिये रुख़सत[1];
इजाज़त दें तुम्हें जाने की "रहमत" कौन से दिल से।

—'रहमत' बुलन्दशहर

× × ×

नावक अफ़गन[2] तेरे तीरों का तसद्दक[3] कुछ दिन
ख़ूब रौनक़ रही झगड़े जिगरो दिल में रहे।
कभी कहता हूँ कि उस शोख़ पे ज़ाहिर कर दूं
कभी कहता हूँ जो दिल की है वही दिल में रहे।

—'मुश्ताक़' बटालवी

× × ×

कुछ भी हो इसका यक़ीं आयेगा मुश्किल से मुझे,
दिल उड़ा कर क्या करोगे प्यार तुम दिल से मुझे।
ग़म दिये इसने हज़ारों मिल के क़ातिल से मुझे,
क्या तवक्का[4] हो वफ़ा की बेवफ़ा दिल से मुझे।
बज़्म-जानां[5] में है कितनी भीड़, कैसी कशमकश,
चल गया इसका पता हसरत भरे दिल से मुझे।
यों तो मैं इश्क़ो वफ़ा को तर्क कर सकता नहीं,
दिल बदलना चाहिये अग़ियार[6] के दिल से मुझे।

---

१—विदा, २—तीर चलानेवाला, ३—निछावर, ४—आस, ५—प्रियतम की सभा, ६—ग़ैर।

[?]ब वह कहते हैं कि मैं निकलूं तो निकलूं किस तरह,
[?]लों रहते रहते उल्फ़त होगई दिल से मुझे।
[?] कभी क़ायल न था फूटी हुई तक़दीर का,
[?]ानना इसको पड़ा टूटे हुए दिल से मुझे।
[?]र्के उल्फ़त पर बिगड़ना उनका वह कुछ सोच कर,
और यह कहना कि फिर चाहो उसी दिल से मुझे।
जान पर जब आ बने तो जान दूं मैं या न दूं,
मशवरा[1] करना है इसका हज़रते दिल से मुझे।
देखते हैं आप लेकिन यह पता चलता नहीं
किस नज़र से मेरे दिल को और किस दिल से मुझे।
होते होते यह हुआ सोज़े मोहब्बत का मआल,
रफ़्ता रफ़्ता हाथ उठाना ही पड़ा दिल से मुझे।
जब कहा तुमने हमें मतलब है तो उसने कहा,
मुझसे मतलब आपको है आपके दिल से मुझे।
'नूह' भी रोकें तो रुकने का नहीं तूफ़ाने अश्क[2],
काम लेना चाहिये अब किश्तिये दिल से मुझे।

—'नूह' नारवी

× × ×

सर पटकती है बेकसी दिल की,
तूने ज़ालिम खबर न ली दिल की।

---

१—सलाह. २—आंसू।

चीखना सर को पीटना रोना
सारी बातें हैं यह इसी दिल की।
वह भी पहचानते नहीं अफ़सोस
क्या बुरी शक्ल हो गई दिल की।
देके छींटे न तुमने ऐ अश्को,
न बुझाई गई लगी दिल की।
दर्द उठ उठ के कह रहा है 'सुरूर',
मुझसे उठती नहीं कड़ी दिल की।

—'सुरूर' जहानाबादी

× × ×

बार बार उसको देखता हूँ मैं,
उफ़ वे ताबियां मेरे दिल की।
कुछ तवस्सुम[1] था यार के लब पर,
खत्म जब दास्तां हुई दिल की।
निगाहे देर आशना ने 'क़मर',
आस खो दी रही सही दिल की।

—'क़मर' साहब

× × ×

1—मुसकराहट।

तजस्सुस[1] और कोशिश से कभी उसको न पायेगा,
मिटायेगा ख़ुदी को तो ख़ुदा मिल जायगा दिल में।

—'अहमद' साहब

× × ×

भी हम थे कि रौनक़ थी हमीं से उनकी महफ़िल में,
मी हैं अब, कि कांटा सा खटकते हैं हर एक दिल में।

—'अमीन' देहलवी

× × ×

न देखे और कोई तुमको दुनिया में सेवा मेरे,
तक़ाज़ा है यह उल्फ़त का रहो पिनहां[2] मेरे दिल में।
करो वह काम जिससे दोनों दुनिया में भलाई हो,
'समर' अब वक़्त पीरी[3] है समझ लो सोच लो दिल में।

—'समर' देहलवी

× × ×

'अता' किसके लिए इतना ज़लीलो ख़्वार फिरते हो,
दप सोचो तो दुनिया क्या कहेगी देखकर दिल में।

—'अता' बिसवानी

× × ×

१—खोज, २—छिपे हुए, ३—बुढ़ापा।

मोक़द्दर की यह ख़ूबी है जो यों दर दर भटकते हैं,
वगरना हम भी घर करते 'नज़र' जाकर किसी दिल में
—'नज़र' रदौलवी

× × ×

असर इतना तो पैदा हो गया है जज़बे क़ामिल में,
मैं उनके दिल में रहता हूँ वह रहते हैं मेरे दिल में।
मिलाया ख़ाक में हसरत को इसकी इसके अरमां को,
अरे बेदर्द तूने क़द्र क्या की 'क़द्र' की दिल में।
—'क़द्र' साहब

× × ×

मोहब्बत उनको मुझसे इस तरह ऐ काश हो जाए
वह नज़रों में मुझे रक्खें मैं रक्खूँ पर्दये दिल में
बवक्ते ज़बह जी भर कर नहीं देखा था क़ातिल को
हमारी हसतें यों ही तड़पती रह गईं दिल में
—'मुस्ताक़' साहब

× × ×

फ़ना होकर हक़ीक़त में खुला ऐ 'अर्श' यह उक़दा[1],
कि जिसकी जुस्त जू थी वह निहां[2] था पर्दये दिल में।
—'अर्श' साहब

× × ×

१—गाँठ २—छिपा।

मोहब्बत का असर ज़ालिम छुपाये से नहीं छुपता,
किसी का इश्क़ पिनहा रह नहीं सकता कभी दिल में।
—'अनवर' साहब

× × ×

पूछो नामुरादे इश्क़ से हाले दिले अबतर,
फ़राक़े[1] यार ने डाले हैं लाखों आबले दिल में।
—'हसन' जायसी

× × ×

मुझे रह रह के तड़पाती है याद उनकी निगाहों की,
खटकते रहते हैं हर वक्त वह नश्तर मेरे दिल में।
जो उसको राह पर लाऊँ तो किस सूरत से ऐ हम दम,
दिल अपना डाल दूँ किस तरह मैं उस शोख़ के दिल में।
अज़ल से मैं हूँ ऐ 'सरदार' दिल दादा हसीनों का,
मोहब्बत कूट कर भर दी है ख़ालिक़ ने मेरे दिल में।
—'सरदार' देहलवी

× × ×

हश्र[2] में अब फ़ैसला होना ज़रा मुश्किल भी है,
जिस तरफ़ वह है उसी जानिब हमारा दिल भी है।
तुमको मेरे इश्क़ पर कुछ ग़ौर करना चाहिए,
बेतलब देता हूँ दिल ऐसा किसी का दिल भी है।

---

१—प्रियतम की विरह, २—प्रलय।

देखना यह है कि पहले दौड़कर मिलता है कौन,
तीर दिल के सामने नावक के आगे दिल भी है।

—'बिस्मिल' इलाहा

× × ×

कभी दुनिया में वह उल्फ़त के क़ाबिल हो नहीं स
कि जिसका दिल कभी हसरत भरा दिल हो नहीं सक
तुम्हें ग़ैरों की उल्फ़त है हमें उल्फ़त तुम्हारी
तुम्हारा दिल हमारा दिल तो एक दिल हो नहीं सकत
तुम्हीं को हमने चाहा है तुम्हीं को हम तो चाहें
फ़िदा यह और पर दिल हो यह न्ह दिल हो नहीं सकता
बहुत आसान है वादे पर उनके सब्र कर लेन
मगर मुझसे तो इतना भी मेरे दिल हो नहीं सकता
जो कहता हूँ यही दिल है इसी में आप रहते हैं
तो कहते हैं नहीं हरगिज़ यह वह दिल हो नहीं सकता।
अदा पर जान दी किसने अदा पर जान दी मैंने,
यह मेरा दिल है ऐसा ग़ैर का दिल हो नहीं सकता।
जफ़ायें जिस पे होती हैं बलायें जिस पे आती हैं,
वह खुश दिल रह नहीं सकता वह खुश दिल हो नहीं सकता।
पहुँचता है जो सदमा तो यह शीशा टूट जाता है,
तुम्हीं नाज़ुक हो क्या नाज़ुक मेरा दिल हो नहीं सकता।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

## दर्दे-दिल

...रि जानां किस लिये तकलीफो मुश्किल में रहे,
...ल में आये दिल में आ बैठे मेरे दिल में रहे।
...आप सुनते हैं तो सुनिये मेरे दिल का राज़े इश्क़,
...लेकिन इतनी अर्ज़ है ये आपके दिल में रहे।
...मुझको इससे क्या ग़रज़ मेरी तबीयत साफ़ है,
आपके दिल की कुदूरत आपके दिल में रहे।
...और क्या है यह जो ऐ ज़ालिम नहीं तासीरे इश्क़,
हम बुरे बन कर सही लेकिन तेरे दिल में रहे।

× × ×

—'दुआ' डुबाइवी

क्या करें उन पर तसद्दुक हम कि मुश्किल एक है,
कहने सुनने को हैं दो पहलू मगर दिल एक है।
मुझको बैठी हैं हज़ारों आरज़ूयें घेर कर,
किस तरह दिल में जगह मैं दूँ मेरा दिल एक है।

× × ×

वादये इमरोज़[1] तो लेने नहीं देता क़रार,
वादये फरदा[2] से हो क्यों कर सुकूने दिल मुझे।
इसी हसीं की आरज़ू है उस हसीं की जुस्तजू,
चैन देने का नहीं मेरा मज़ाक़े दिल मुझे।

× × ×

---

१—आज का वादा, २—कल का वादा।

जो तेरे यार के क़ाबिल नहीं है,
कलेजा वह नहीं है दिल नहीं है।
हम अपने दिल को दिल समझे हुये हैं,
हमारा दिल तो कोई दिल नहीं है
अगर दिल है तो दिल में है मोहब्बत,
मोहब्बत फिर कहाँ जब दिल नहीं है।
करे अफ़शा[1] तुम्हारे इश्क़ का राज़,
हमारा दिल वो ऐसा दिल नहीं है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

बेदिली पर क्यों हेरासां[2] हूँ कि है मुझको खबर,
खुद निगाहे नाज़ ही एक दिन बनेगी दिल मेरा।
थी हरीमें नाज़ के पर्दों में भी जुम्बिश[3] तमाम,
एक रंगे खाक से जब मुज़तरिब था दिल मेरा।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

तुयाने मौज[4] ने तूफ़ान जोड़ा आशनाओं[5] पर,
हुबाबे-बहरे तू[6] भी तोड़ अपना आबला दिल का।

—'नसीम' लखनवी

× × ×

1—ज़ाहिर, 2—डर, 3—हिल जाना, 4—लहर, 5—साथी, 6—समुँदर के आबले।

यहाँ जलवा है सब अपने ही दम का,
यह आलम[1] जिस्म है, तो दिल हमीं हैं।

—'वहीद' इलाहाबादी

× × ×

ज़माना मुझसे बदज़न[2] है, ज़माना मेरा दुश्मन है,
सबक़ लें अहले दिल अन्जामे-उल्फ़त[3] का मेरे दिल से।
इलाही इस निज़ामे[4] ज़िन्दगी से फ़ायदा क्या है,
कि जीते जी है दिल मुझसे जुदा, मैं हूँ जुदा दिल से।
ज़माने की शिकायत क्या ज़माना फिर ज़माना है,
यहाँ तो बदगुमां हम से है दिल, हम बदगुमां दिल से।

—'अफ़क़र' मोहानी

× × ×

लगाये जाओ तुम तिरछी नज़र से तीर बे गिनती,
इसे तो हम हिसाबे दोस्तां[5] दर्दे दिल समझते हैं।

× × ×

उठा कर आइना पूछो ज़रा मद्दे मुक़ाबिल[6] से,
कभी वाक़िफ़ नहीं तुम भी मेरी बेताबिये[7] दिल से।

---

१—संसार, २—संकेत रहना, ३—मुहब्बत का नतीजा, ४—६
५—मित्रों का हिसाब दिल में, ६—जो सामने हो ७—बेचैनी।

तुम्हारे इश्क़ में रुसवाये आलम हो गये फिर भी,
न निकली है, न निकलेगी तुम्हारी आरज़ू दिल से।
—'बर्क़' देहलवी

× × ×

चिरागां का यह आलम है, कि यह तारों की महफ़िल है,
तबीयत बुझ गई अपनी, न वह हम हैं, न वह दिल है।
—'बेताब' बरैलवी

× × ×

क़ब्र में जाकर सुकूने[1] क़ल्ब[2] हासिल होगया,
खतम जब अफ़सानये[3] बेताबिये दिल होगया
—'बेदिल' देहलवी

× × ×

लख़्ते-जिगर[4] से मुझको ज़्यादा अज़ीज़ है,
टूटा हुआ जो तीर तेरा दिल में रह गया।
—'जोश' मलसियानी

× × ×

आइना जिसको आप कहते हैं,
एक टुकड़ा है वह मेरे दिल का।
—'ख़लिश' गयावी

× × ×

१—आनन्द, २—दिल, ३—क़िस्सा, ४—कलेजे के टुकड़े।

रूदाद-मोहब्बत[१] की क्या तुमसे कहूँ क्या थी,
आग़ाज़[२] ग़मे दिल था, अन्जाम[३] ग़मे दिल था।

—'रवां' उन्नावी

× × ×

बात ही जब मेरी नहीं सुनते,
फिर कहूँ खाक मुद्दआ[४] दिल का।

—'सअद' बिजनौरी

× × ×

तीरे निगाहे नाज़ का अन्दाज़ देखना,
आँखों से उनकी चल के मेरे दिल में रह गया।

—'शफ़ीक' भरतपुरी

× × ×

'सबा' हमने तो हरगिज़ कुछ न देखा जज्ब-उल्फ़त[५] में,
ग़लत यह बात कहते हैं, कि दिल को राह है दिल से।

—'सबा' फ़िरोज़ाबादी

× × ×

ज़िक्र हर जा है तेरी बेदाद[६] का,
शिक्वे से खाली किसीका दिल नहीं।

—'इशरत' लखनवी

× × ×

---

१—प्रेम की बातें, २—आदि, ३—अंत, ४—मतलब, ५—प्रेम आकर्षण, ६—जुल्म।

गो मेरे पहलू से वह होजाय ऐ क़ातिल जुदा,
तेरे पैकां से जुदा होने का मेरा दिल नहीं।
—'फ़िराक़' गोरखपुरी

× × ×

आगया उठ के उनकी महफ़िल से,
ऐसी उम्मीद थी किसे दिल से।
यह फ़ेसाना तो मेरे दिल का था,
आपने क्यों नहीं सुना दिल से।
—'क़ैस' जालन्धरी

× × ×

माल मुफ़लिस समझ के ऐ 'कुरवा',
कोई गाहक नहीं मेरे दिल का।

× × ×

जो तेरी निगाहों का बिस्मिल नहीं है,
वह कहने को दिल है, मगर दिल नहीं है।
—'कुरवा' गयावी

× × ×

घटा सोज़े ग़मे[1] पिनहाँ,[2] मगर आँसू नहीं रुकते,
कोई उम्मीद टूटी है, कि टूटा आबला दिल का।
—'कैफ़ी' शाहाबादी

× × ×

१—दुख की आग, २—छिपा हुआ।

हैरत[1] ज़दा मैं उनके मुक़ाबिल में रह गया,
जो दिल का मुद्दआ था, मेरे दिल में रह गया।

—'महरूम' मियावाली

× × ×

दो घड़ी के वास्ते मिल जाय याराये[2] सख़ुन,
आज कहना है किसी से माजराये[3] दिल मुझे।

—'मोहसिन' इमरितसरी

× × ×

काफ़िर निगाहे हुस्न से फिर बिजलियां गिरीं,
पहलू से फिर तड़प के मेरा दिल निकल गया।

—'मूनिस' सिवहारवी

× × ×

मुझको उल्फ़त में किसी से, क्या शिकायत, क्या गिला,
तुम तो तुम हो, अब तो अपना दिल भी, अपना दिल नहीं।
मोख़्तसिर[4] कदाह् ऐ "नश्तर" यह सोज़े ग़म की है,
दिल जहाँ था, अब वहाँ एक आबला है दिल नहीं।

—'नश्तर' मेरठी

× × ×

मुसीबत में किसी का कोई भी साथी नहीं होता,
ग़मे फ़ुरक़त में ज़ालिम सब्र तक रहता नहीं दिल में।

१—अचंभे में होजाना, २—बात करने की ताक़त, ३—हाल ४—संक्षेप।

कहीं अरमां, कहीं हसरत, कहीं यह दाग़े[1] नाकामी,
नई दुनिया बसाई है मोहब्बत ने मेरे दिल में।

—'वफ़ा' शाहजहांपुरी

× × ×

हक़ीक़त मेरे रोने की, न पूछ ऐ हमनशीं[2] मुझ से,
मेरा एक एक आंसू, हासिले अफ़सानये दिल है।

—'हुनर' अनवरी

× × ×

सिर्फ़ इसको तने ज़ार[3] के क़ाबिल न समझना,
पैमानये-उल्फ़त[4] है, फ़क़त दिल न समझना।
क्यों दिल पे मेरे पड़ती हैं तहक़ीर[5] की नज़रें,
हासिल है ग़मो दर्द का, तुम दिल न समझना।
तुम तोड़ना दिल को न मेरे संगे[6] ज़फ़ा से,
जज़बात[7] की दुनिया है इसे दिल न समझना।

—'बेहोश' उतरौलवी

× × ×

तसव्वर,[8] भी तेरा, कौनयन[9] की दौलत से बढ़कर है
कि तुझको दूर रहने पर भी क़ुरबत[10] है मेरे दिल से।

—'मुज़फ़्फ़र' देहलवी

× × ×

---

१—निराशा के चिन्ह, २—साथी, ३—दुबला बदन, ४—प्रेम प्याला, ५—तुच्छ समझना, ६—ज़ुल्म का पत्थर, ७—भाव, ८—ध्यान, ९—संसार, १०—नज़दीकी।

पूछते क्या हो, तमन्नाये[1] दिले पुर[2] आरज़ू,
जो चदू[3] के दिल से बाहर हैं, वह मेरे दिल में है।
तीर को दूं दाद या दिल को सराहूँ तीर ज़न,
तीर में है दिल मेरा या तीर तेरा दिल में है।

—'सायल' देहलवी

× × ×

सामना क़ातिल का है, आशिक़ बड़ी मुश्किल में है,
कुछ शिकायत है ज़ुबां पर, कुछ शिकायत दिल में है।

—'शफ़ीक़' लखनवी

× × ×

कोई दम में बुझने वाला है चिराग़े ज़िन्दगी,
अब नज़र आता है कुछ हमदर्द दर्दे दिल मुझे।
अलविदा[4] ऐ इज़तिराये क़ल्बे[5] मुज़तर[6] अलविदा,
आज कहना है किसी से आरज़ूये दिल मुझे।

—'हामिद' इटावी

× × ×

लुत्फ़ दुनिया मुझको हासिल, अब रहा दुनिया में क्या,
यानी एक उसकी तमन्ना, सो वह मेरे दिल में है।

---

१—इच्छा, २—बहुत सी कामनाएँ, ३—दुशमन, ४—विदा होना, ५—दिल, ६—बेक़रार।

कुछ न कुछ है ज़ौक़[1] "नातिक़" सब को दर्दे इश्क़ से
या किसी की गुफ़्तगू में, या किसी के दिल में है।
—'नातिक़' गुलाउठी

× × ×

ग़म उठाये जाऊंगा मुझको ख़ुशी से क्या ग़रज़,
ग़म उठाने के लिए, तूने दिया है दिल मुझे।
—'राज़' सहसवानी

× × ×

ग़ुरूरे हुस्न तुमको है, कमाले इश्क़ मुझको है,
कहो तुम मेरे दिल की, या कहूँ मैं आपके दिल की।
—'अमीर' लखनवी

× × ×

कह रहे हैं मुझको मक़तल[2] में वह बिस्मिल देख कर,
मैं न कहता था लगाना चाहिए दिल देख कर।
इब्तदाये[3] इश्क़ो उल्फ़त से कहीं घबरा न जाये,
दिल पे तुम ढाओ सितम, लेकिन मेरा दिल देख कर।
मिट गई वह अब गुले दाये मुहब्बत की बहार,
ग़ैर भी रोते हैं, पज़मुर्दा[4] मेरा दिल देख कर।

---

१—मज़ा, २—वधिवेदी, ३—शुरू, ४—कुम्हलाया हुआ।

मैं भी सौ दिल से फ़िदा, वह भी है सौ जी से निसार,[१]
मेरी सूरत देखते हो क्या मेरा दिल देख कर।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

ज़ाहिरी लुत्फ़ो[२] इनायात का हासिल क्या है,
दिल से देखो, तो खुले दर्द भरा दिल क्या है।
आप कह दें तो अभी सब को तसद्दुक़[३] कर दूँ,
यह मेरी जान है क्या, और मेरा दिल क्या है।
नाम को इसमें कुदूरत[४] रहे मुमकिन ही नहीं,
आइना है तेरी उल्फ़त का, मेरा दिल क्या है।
दिल से जब क़द्र करो, दिल की, तो दिल है सब कुछ,
दिल से जब क़द्र नहीं दिल की, तो फिर दिल क्या है।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

भेजता है यह पयामे[५] दिलबरी[६] क़ातिल मुझे,
चाहिए जुल्मो सितम के वास्ते एक दिल मुझे।

—'आरज़ू' जुबाइवी

× × ×

---

१—निछावर, २—कृपा, ३—निछावर, ४—मैल, ५—पैग़ाम, ६—दिल ले जाने का।

## दर्दे-दिल



फिर मोक़द्दर[1] में लिखी हैं ज़िल्लतें[2] रुसवाइयां,
ले चली फिर सूयजाना आरज़ूये दिल मुझे।
पहले तो बेसोचे समझे खातमा ही कर दिया,
ढूढ़ता फिरता है अब दुनिया में दर्दे दिल मुझे।
सच है दुनिया ही में मिलती है मका फ़ाते[3] अमल[4],
मैंने दिल को खो दिया, खोकर रहेगा दिल मुझे।

—'अन्जुम' भरतपु

× × ×

तेरे कूचे में, अभी क़िस्मत में हैं रुसवाइयां
खींच लाई है यहीं फिर आरज़ूये दिल मुझे

—'अहक़र' शेरकोटी

× × ×

क्या अज़ल[5] ही से न समझा रहम के क़ाबिल मुझे,
मेरे मालिक दे दिया एक हश्र-सामां[6] दिल मुझे।
दो नसीमे[7] साज़े-ग़म[8] ने किस मज़े की लोरियां,
कर गये मसरूफ़ ख़्वाबे-यास[9] आहे दिल मुझे।

—'आशुफ़ता' लखनवी

× × ×

1—तक़दीर, 2—बदनामी, 3—बदला, 4—काम, 5—आदि, 6—क़यामत का सामान 7—हवा, 8—दुख की आग, 9—निराश की नींद।

## दर्द-दिल

इनको क़ातिल था बनाना और जो बिस्मिल मुझे,
मेरा दिल देना था उनको, और उनका दिल मुझे।
काम का तेरे नहीं तो फेर दे क़ातिल मुझे,
फेर दे अच्छा बुरा, जैसा है मेरा दिल मुझे।
जैसा मेरे पास है इस सोज़ का, इस साज़ का,
कोई दिखला दे तो लाकर और ऐसा दिल मुझें।

—'बर्क़' काकोरवी

× × ×

आरज़ू क्या है तेरे बिस्मिल के पास,
दिल हो पहलू में वह क़ातिल दिल के पास।
दर्द उठ उठ कर बताता है मुझे,
चुटकियां लेता है कोई दिल के पास।
जानता है दिल्लगी अच्छी नहीं,
क्यों "शफ़क़" तुमको बिठाये दिल के पास।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

इस तपिश[१] का है मज़ा दिल ही को हासिल होता,
काश,[२] मैं इश्क़ में सरता-बक़दम[३] दिल होता।
आसमां दर्दे मोहब्बत के जो क़ाबिल होता,
तो किसी सोख़्ता[४] का आबलये दिल होता।

१—तड़प, २—अगर, ३—सर से पाँव तक, ४—जला हुआ।

## ई-दिल

दिल-गिरफ़्तों[1] की अगर खाक चमन में होती,
तो जहां देखते हो गुञ्चा[2], वहां दिल होता।
—'ज़ौक़' देहलवी

× × ×

बवक्ते ज़बह[3] जौहर मैंने देखे तेरी क़ातिल में,
लहू के चन्द क़तरे बन गये शोले[4] मेरे दिल में।
तमन्ना, यासो[5], हसरत आरज़ू हिरमानो,[6] बेताबी,
मैं क्यों कर रख लूं दुनिया भर के अरमानों को एक दिल में।
—'अरशद' जालन्धरी

× × ×

साहबे महफ़िल हुआ किस दिन भरी महफ़िल से दूर,
तुम हमारे दिल में ठहरो, क्यों रहो तुम दिल से दूर।
मेरी नज़रों से तो हो जाने को वह हो जायेंगे,
हो नहीं सकते, मगर दम भर को हरगिज़ दिल से दूर।

× × ×

आज इश्को हुस्न में फिर इनक़लाब आने को है,
आज दिल को फिर मिला कर देखते हैं दिल से हम।
दिल से वह बातें किसी के दिल की जब सुनते नहीं,
उनसे हाले दिल कहें भी, तो कहें किस दिल से हम।

---

१—दिल थामे हुए, २—कली, ३—छुरी चलाते समय, ४—अंगारा,
५—निराशा, ६—दुःख।

देखने में चार तिनकों के सिवा कुछ भी नहीं,
अपने होते आशियां[1] को फूंक दें किस दिल से हम।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

कौन से दिन आके यारब[2] वह मिलेंगे मुझसे ईद,
कौन सी शब[3] होगी दिल की आरज़ू दिल से अलग।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

कौन था किसकी अदाये शोख़[4] दिल को ले गई,
कौन था, किस शोख़ ने, यारब किया बेदिल मुझे।
इब्तिदाये[5] इश्क़ में इस दर्जा यह बेताबियां,
देखिये दिखलायेगा क्या क्या अभी यह दिल मुझे।
इस क़दर बेताबियां[6] होतीं, न होता इज़तराब[7],
.ख़ूबियां सारी अता[8] होतीं, न मिलता दिल मुझे।

—'बशीर' फ़रुख़ाबादी

× × ×

मैं वही पर्दा हूं, जिसमें उनका जलवा है नेहां,[9]
दर बदर[10] नाहक़ लिए फिरता है मेरा दिल मुझे।

—'बेख़ुद' बुदाइवी

× × ×

१—घोंसला, २—ईश्वर, ३—रात, ४—चंचल भाव, ५—आरंभ,
६—बेचैनी, ७—बेक़रारी, ८—मिलतीं, ९—छिपीहुई, १०—दरवाज़ेदरवाज़े।

## दर्दे-दिल

बहरे-ग़म[१] में है सफ़ीना[२] दूर है साहिल[३] मुझे,
दे तुही आकर सहारा नाख़ुदाये[४] दिल मुझे।
मिल के एक बेदादगर[५] से, यह हुआ हासिल मुझे,
दिल को मैं रोता हूँ, औ रोता है मेरा दिल मुझे।

—'बेदिल' बरलवी

× × ×

फिर सरे[६] महशर मेरा मुँह को कलेजा आगया,
फिर से दोहरानी पड़ेगी दास्ताने[७] दिल मुझे।
टूटते ही दिल के टूटा है तिलिसमे[८] आरज़ू,
कर गई आज़ाद आवाज़े शिकस्ते[९] दिल मुझे।
गिरते पड़ते ही पहुँच जाऊँ हरीमे[१०] नाज़ तक,
तुमसे इतनी आरज़ू है इज़तराबे दिल मुझे।

—'ताज' मेरठी

× × ×

तुमको भी मालूम होती लज़्ज़ते दर्दे फ़िराक़,[११]
जब कि मेरा दिल तुम्हें मिलता तुम्हारा दिल मुझे।

—'तायब' फ़रुख़ाबादी

× × ×

---

१—दुख-सागर, २—नौका, ३—किनारा, ४—केवट, ५—ज़ालिम, ६—प्रलय में, ७—कहानी, ८—इच्छाओं का जादू, ९—टूटा हुआ, १०—पर्दे, ११—विरह।

अब किधर जाऊँ बता ऐ आरज़ूए क़ामिल मुझे,
हर तरफ़ से आज आती है सदाये[1] दिल मुझे।
अब ज़ुबां भी दे अदाये[2] शुक्र के क़ाबिल मुझे,
दर्द बख़्शा है अगर तूने बजाये[3] दिल मुझे।
रोक सकतो है तो बढ़ कर रोक ले मंज़िल मुझे,
ले उड़ी है एक मौजे बेक़रारे दिल मुझे।
हर इशारे पर है फिर भी गर्दने तसलीम ख़म,
जानता हूँ साफ़ धोके दे रहा है दिल मुझे।

—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

तीर का तुम क्या करोगे तीर को रहने भी दो,
ताकि कुछ मालूम हो अन्दाज़े[4] ज़ख्मे दिल मुझे

—'हामिद' इटावी

× × ×

जलवये माज़ी,[5] हमारे हालो[6] मुस्तक़बिल[7] में है,
आरज़ू दिल में रहेगी, दिल में थी, और दिल में है।
आह कर, और आरज़ूये मासेवा[8] को फूंक दे,
काम ले उस सोज़ से, जो सोज़ तेरे दिल में है।

—'आसी' लखनवी

× × ×

---

१—आवाज़, २—कृतार्थ होना, ३—दिल की जगह पर, ४—ढंग, ५—भूत, ६—वर्तमान, ७—भविष्य, ८—कामनाएँ।

वह भी क्या दिन थे कि लुत्फ़े-ज़ीस्त[1] था हासिल मुझे,
हर नफ़स[2] था एक पयामे इज़्तराबे दिल मुझे।
रफ़्ता रफ़्ता होगई तकमीले[3] तामीरे-हयात[4],
मेरी फ़ितरत[5] ने बना डाला सरापा दिल मुझे।
नज़ाअ[6] कुछ कहते कहते रुक चली है क्यों ज़बां,
उनसे कहना है अभी तो दास्ताने दिल मुझे।

—'हफ़ीज़' फ़रुखाबादी

× × ×

मुतरिब[7] जोशे जुनू खेंचता है तार इसके,
लै का पाबन्द जो ये साजे रगे दिल न रहा।

× × ×

कब्र में जाकर सुकूने क़ल्ब हासिल होगया,
खत्म जब अफ़सनाये[8] बेताबिये[9] दिल होगया।

× × ×

इलाही खैर होजाने हज़ीं[10] की सख्त मुश्किल है
वही आते हैं क़ाबू में न क़ाबू में मेरा दिल है

—'रिन्द' बनारसी

× × ×

१—जीवन का आनन्द, २—सांस, ३—कमाल को पहुँचना ४—ज़िन्दगी की बुनियाद, ५—प्रकृति, ६—अंतिम समय, ७—गवैया ८—किस्सा, ९—बेचैनी, १०—दुखी।

हमारे क़त्ल से बाज़ आया है यह सोच कर क़ातिल,
दहाने[1] ज़ख़्म शायद कह उठें कुछ मुद्दआ दिल का।
रोज़ो शब है एक हुजूमे बेख़ुदी,
दिल का आना क्या था गोया दिल गया।

× × ×

बात ही जब मेरी नहीं सुनते,
फिर कहूँ ख़ाक मुद्दआ दिल का।

—'सअद' बिजनौरी

× × ×

आस[2] की किश्ती फँसी है बहरे[3] ग़म में आज कल,
यास[4] की सूरत दिखाये क्यों न चश्मे दिल मुझे।
कूचये दिलदार तक अपना पहुँचना है मुहाल,
खींच कर 'रज़्ज़ाक़' लाया मुझको मेरा दिल मुझे।

—'रज़्ज़ाक़' शेख़ूपुरी

× × ×

मैं यह समझा दोनों आलम होगये हासिल मुझे,
उनकी ख़ुदबीनी[5] का सदक़ा मिल गया अब दिल मुझे।

---

१—मुँह, २—आशा, ३—समुद्र, ४—निराशा, ५—अपने को देखना।

हर सुकूं[1] हर इज़तिरावे मौज है साहिल मुझे,
जिस जगह चाहे डुबो दे इश्क़ दरिया दिल मुझे।
—'रज़्म' रुदौल्वी

× × ×

जान एक पर्दानशीं के इश्क़ से मुश्किल में है,
ला नहीं सकते ज़ुबाँ पर जो हमारे दिल में है।
इस क़दर ज़ुल्म और ऐसे आशिके जांबाज़[2] पर,
साफ़ मुझ से क्यों न कह दो क्या तुम्हारे दिल में है,
तुमको अय आवारगाने इश्क़ कुछ भी है ख़बर।
ढूंढ़ते फिरते हो जिसको वह तुम्हारे दिल में है।
—'असबक' बुलन्दशहरी

× × ×

चली आती हैं नज़रें धूम से, दर्बारे क़ातिल है,
किसी का सर हथेली पर किसी के हाथ में दिल है।
वह कहते हैं मेरा पयकाँ, मैं कहता हूँ मेरा अरमां,
वह कहते हैं मेरा मसकन[3] मैं कहता हूँ मेरा दिल है।
—'बयाँ' मेरठी

× × ×

तीर लेकर पयामे मौत आये,
होगई ख़त्म ज़िन्दगी दिल की।

१—ठहरना, २—जान पर खेलने वाला, ३—ठहरने की जगह।

मर मिटें या जिन्दा रहा करते,
कुछ छोटे भी बन गई दिल की।
वो दर्द उठा है मेरे पहलू से,
खत्म होती है अब खुशी दिल की।
फिर नज़र आता हालत इनका,
देख लिया आज होश्यारी दिल का।
जिस गली पर था उनका नक्शे क़दम,
अब वहीं कुछ बन गई दिल की।
हमने पाला था आस्तीन में नाग,
हो गई ज़रूर दुश्मनी दिल की।

—'कौसर' पेशावरी

× × ×

शाद थे मसरूर थे जब तक कि बिस्मिल न था,
ज़िन्दगानी का सहारा था हमारा दिल न था।
—'दिलदार' शहजनवी

× × ×

देखिये नूरे हुस्ने आलम सात की नैरंगियां,
और फिर इन्साफ़ से फ़रमाइये, दिल क्या करे।

---

१—काला।

दिल[1] फरेबीये रुखे[2] रौशन को कुछ कहते नहीं,
दिल ही को बदनाम करते हो मेरा दिल क्या करे।

—'ज़ाहिद' इलाहाबादी

× × ×

खींचे हैं अब तो दामन पर उम्मेदो यास के नक्शे।
कि हर आँसू के कतरे को माले दिल समझते हैं।

—'मुजतर' शाहजहाँपुरी

× × ×

इज़तिराबे[3] इश्क़ से है ज़िन्दगी मुशकिल मुझे,
कोई ला दे मांग कर उनसे सुकूने[4] दिल मुझे।
ख़ून क्या रुलवायेगी नयरंगिये महफ़िल मुझे,
होश में आने न देगी बेख़ुदीये दिल मुझे।
क्या हुआ हासिल झिड़क कर सूरते साइल[5] मुझे,
उज्र दिल लेने में क्या था तुम न देते दिल मुझे।
ले लिया मैंने जो तुमने हाथ उठा कर दे दिया,
दिल के ख़ातिर ग़म दिया या ग़म की ख़ातिर दिल मुझे।
हिज्र की तारीक रातें काटने की चीज़ हैं,
मसविरा मरने का क्यों देता है मेरा दिल मुझे।

—'राना' अकबराबादी

× × ×

---

१—दिल को धोखा देना, २—चेहरा ३—बेक़रारी, ४—आराम, ५—भिखारी।

बाद मुद्दत के फिर उभरी खंजरे क़ातिल की चोट,
फिर बहार[1] आई मज़ा देने लगी फिर दिल की चोट।
हां यौंही चलती रहे मुझ से मेरे क़ातिल की चोट,
वार आंखों से हो आखों का हो दिल से दिल की चोट।
दर्द मन्दों ही से दर्दे-दिल का होता है इलाज,
आप हैं बेदर्द क्या जाने किसी के दिल की चोट।
ए उमीदो आरज़ू अब मैं कहाँ रक्खूं तुम्हें।
एक तरफ़ ज़ख़्मे जिगर है एक तरफ़ है दिल की चोट
नालाये पै हमसे अब 'शातिर' नतीजा क्या हुआ।
और उभर आई हवा पाकर तुम्हारे दिल की चोट।
—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

तूने क्यों कमबख़्त लुटवाया सरे महफ़िल मुझे,
फिर नुमायां कर किसी तरकीब से ऐ दिल मुझे।
नज़र करदूं तेरी नज़रों को दिलों की कायनात,
सारी दुनिया कास दे दे अपने अपने दिल मुझे।
—'सागर' अकबराबादी

× × ×

और ही कुछ कह रहा है उनका अन्दाज़े नज़र,
देख शर्मिंदा न करना इज़तिराबे दिल मुझे।

---

१—बसंत ऋतु।

याद आया है जब थी मेरी हस्ती बे नयाज़,
चाहे अब जो कुछ बना दे आरज़ूये दिल मुझे।
—'सहर' बिलग्रामी

× × ×

एक सफ़ाये क़ल्ब से यह फ़ैज़ हासिल होगया,
जल्वा गाहे दोनो दुनिया अब मेरा दिल होगया।
—'ज़ाहिद' इलाहाबादी

× × ×

लुत्फ़ रहने का सुना है कूचये क़ातिल में है,
अब वहीं चलकर रहें हम यह इरादा दिल में है।
आप अगर इसको निकालें तो इनायत आप की,
आरज़ू मचली हुई बैठी हमारे दिल में है।
हम कभी उलझें हुजूमे[1] ग़म से यह मुमकिन नहीं,
अय ख्याले यार जब तक तू हमारे दिल में है।
आप को भी ऐसी उल्फ़त[2] हो, तो कैसा लुत्फ़ हो,
आप की सची मुहब्बत जैसी मेरे दिल में है।
साफ़[3] बातिन हमसे बढ़कर कोई दुनिया में नहीं,
वह निकलता है ज़बां से जो हमारे दिल में है।

× × ×

1—दुख की भीड़, २—प्रेम, ३—दिल के साफ़।

कौन उनके तीर नाज़ का कायिल नहीं रहा,
मेरा जिगर नहीं, कि मेरा दिल नहीं रहा।
नज़दीक हो कि दूर उसे देखता हूँ मैं,
अब पर्दा कोई बीच में ऐ दिल नहीं रहा।
हम अपने दिल को कह नहीं सकते हम अपना दिल,
जब अख्तियार ही में कभी दिल नहीं रहा।
'बिरियाँ' का कौल इश्क़ में है यह बजा दुरुस्त,
जब आप ले गये तो मेरा दिल नहीं रहा।

—'बिरियाँ' इलाहाबादी

× × ×

तेरे सीने में जब दिल ही नहीं तो दर्द क्या होगा,
बला से तेरी गर मैं दर्दे उल्फ़त से भरा दिल हूँ।

—'ज़ेबा' लाहौरी

× × ×

जहाँ बरहम[1] हुए अजज़ा[2] फ़राहम[3] हो नहीं सकते,
समझ लो सीनये हस्ती में एक टूटा हुआ दिल हूँ।

—'सफ़ी' लखनवी

× × ×

१—तितर बितर, २—बदन के हिस्से, ३—इकट्ठा।

कोई आफ़त आये मुझ पर इससे कुछ मतलब नहीं,
जैसे अपना दिल भी उस बेदर्द का दिल होगया।
—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

तुझे नज़्ज़ारये[1] क़ातिल दमे बिस्मिल आये,
जान जाये तो बला से यह कहीं दिल आये।
—'ग़ालिब' देहलवी

× × ×

इनायत भी नहीं खतरे से खाली खूबरूयों[2] की,
उसी की आ गई शामत उन्हें जो दिल पसन्द आया।
इलाही खैर अब कोई नई आफ़त फिर आयेगी,
सुना है उनको मेरा इज़्तिराबे[3] दिल पसन्द आया।
—'सरशार' कसमंडवी

× × ×

ग़लत क्यों कर कहे कोई ग़लत मुशकिल से होती है,
वही तो बात होती है जो सच्चे दिल होती है।
तशफ्फ़ी[4] इज़्तिराबे शौक़ में मुशकिल से होती है,
बड़ी बकवास मुझ से और मेरे दिल से होती है।
समझ कर इसको अच्छा आप इसे अच्छा नहीं कहते,
बुराई दिल की होती है, मगर किस दिल से होती है।

---

१—देखने का आनन्द, २—हसीनों की, ३—बेचैनी, ४—तसल्ली।

परायों का तो क्या चर्चा पराये फिर पराये हैं,
मुहब्बत में अदावत ख़ास अपने दिल से होती है।
मुहब्बत के मरातिब[1] को बस अहले दिल समझते हैं,
कि इसकी इब्तिदा[2] भी इन्तिहा[3] भी दिल से होती है।
ज़ुबां इज़हारे ग़म से लफ़्ज़ों पूरा कर नहीं सकती,
जो दिल की बात होती है, अदा भी दिल से होती है।
तरीक़ा भी नहीं मालूम इतमिनाने ख़ातिर का,
वही उनकी उचटी बात उचटे दिल से होती है।
हम उनके ज़ाहिरो बातिन में इतना फ़र्क़ पाते हैं,
भलाई मुँह से होती है, बुराई दिल से होती है।
यही काबा मोहब्बत का, वही बुतख़ाना[4] उल्फ़त का,
बहुत कुछ अहले दिल में क़द्र दिल की दिल से होती है।
हसीनों का यह अन्दाज़े तलब[5] भी क्या हसीं निकला,
ख़ुशामद एक दिल के वास्ते सौ दिल से होती है।
यह हुसनो इश्क़ में दस्तूर हमने जा बजा[6] देखा,
जो दिल से चाहता है क़द्र उसकी दिल से होती है।
वह ख़ाली जा नहीं सकती वह ख़ाली फिर नहीं सकती,
फ़ुग़ां जो दिल की होती है, दुआ जो दिल से होती है।

—'नूह' नारवी

× × ×

१—रुतबा, २—आदि, ३—अन्त, ४—मंदिर, ५—माँगने का ढंग, ६—जगह जगह।

रहा क्या ख़ाक बाक़ी अब है जिसकी जुस्तजू तुझको,
जला कर दिल को अय, ख़ाकिस्तरे दिल देखने वाले।
—'फ़र्रुख़' बनारसी

× × ×

आरज़ूयें तुम पे क़ुरबाँ, हसरतें तुम पर निसार,[1]
हाँ यूंही पूछो ज़रा फिर क्या तुम्हारे दिल में है।
—'सूफ़ी' नक़वी

× × ×

इश्क़ो उल्फ़त में नहीं सब्रो सुकूँ हासिल मुझे,
क्यों दिया मेरे ख़ुदा ने इस तरह का दिल मुझे।
कट रहे हैं दोनों के अय्यामे[2] फ़ुरक़त इस तरह,
दिल को मैं बहला रहा हूँ और मेरा दिल मुझे।
मेरे अरमानों ने तो दिल को मेरे ग़ारत किया,
देखिये करती है क्या अब आरज़ूये दिल मुझे।
जान लेले शौक़ से तुझको दिये देता हूँ मैं,
दिल को दे दूँ किस तरह प्यारा है मेरा दिल मुझे।
—'विरियाँ' इलाहाबादी

× × ×

१—निछावर, २—विरह का समय।

जिन्हें ज़ौके[1] हुज़ूरी ख्वाबो[2] बेदारी में हासिल था,
ख़ुदाबन्दा वह आखें कौन सी थीं कौन सा दिल था।
—'यास' अज़ीमाबादी

× × ×

किस मज़े का यह इलाक़ा[3] बिस्मिलो क़ातिल में है,
तीर उसके हाथ में पैकां, हमारे दिल में है।
नावके क़ातिल से क़ातिल की नज़र कुछ कम नहीं,
फ़र्क़ इतना है वह दिल के पार है यह दिल में है।
आँख क़ातिल से लड़ी थी एक ज़माना हो गया,
लज़्ज़ते तीरे नज़र अब तक हमारे दिल में है।
हर जगह सूरत नई रखता है इश्के फ़ितनागर[4],
अश्क[5] आंखों में खटक सीने में सोज़िश[6] दिल में है।
लोटती हैं आज मेरे घर में दो दो बिजलियाँ,
एक चमक है दाग़ दिल में, एक दर्दे दिल में है।
अश्क खूं दाग़ मुहब्बत की अलामत[7] है 'जलील',
आँख से होता है ज़ाहिर जो तुम्हारे दिल में है।
—'जलील' मानिकपुरी

× × ×

---

१—पास रहना, २—सोते जागते, ३—संबन्ध, ४—फ़सादालू, ५—आँसू, ६—जलन, ७—निशानी।

हमें तो मार डाला चारासाजों[1] की तसल्ली ने,
हयाते इश्क़ थी पहलू में जब तक मुज़तरिब दिल था।

—'दिल' शाहजहाँपुरी

× × ×

मेरा सीना किया है चाक ज़ालिम ने यह कह कह कर,
अगर होगी कोई हसरत तो बेशक दिल से निकलेगी।
हमारे बाद जब होगा हमारा ज़िक्र यारों में,
दुआयें मग़फ़िरत, अय 'हिज्र' सबके दिल से निकलेगी।

—'हिज्र' शाहजहाँपुरी

× × ×

हज़रते नासेह[2] बजा इरशाद फ़रमाते हैं आप,
तर्के उल्फ़त से मगर मजबूर है दिल क्या करे।
हश्र तक जिसके बर आने की न हो कोई उम्मेद,
वह तमन्ना, वह हवस, वह आरज़ू दिल क्या करे।

—'जौहर' इलाहाबादी

× × ×

नीमबाज़[3] आँखों को है शायद किसी का इन्तज़ार,
नींद क्यों आती नहीं अय इज़तिराबे दिल मुझे।

—'सोज़' मेरठी

× × ×

१—दवा करने वाला, २—नसीहत करने वाला, ३—आधी खुली हुई आँखें।

जिस जगह ज़िल्लत से उठवाया सरे महफ़िल मुझे,
फिर उसी जानिब लिये जाता है मेरा दिल मुझे।
कैसी फ़रियादो बुका[1] और नालाओ शेवन[2] कहाँ,
अब तो कुछ करने नहीं देता है दर्दे दिल मुझे।
फिर किसी की याद ने तड़पा दिया मानिन्द बर्क़[3],
बैठे बैठे हो गया अब इज़तिराबे दिल मुझे।

—'सैयद' मैनपुरी

× × ×

आपने भी कह दिया सौदाइये महफ़िल मुझे,
अब कहां है हिम्मते अर्ज़े मताये-दिल[4] मुझे।
जब अज़ल में दिल मिला कौनैन[5] का हासिल मुझे,
शोर बरपा होगया एक दिल मुझे एक दिल मुझे।
इज़तिराबे दिल से अय 'सीमाब', घबराऊँ मैं क्यों,
कुछ समझ कर ही दिया है इज़तिराबे दिल मुझे।

—'सीमाब' अकबराबादी

× × ×

सुनने वाला कौन है नग़मा कहीं से छेड़ लें,
साज़े दिल तुझको बनाया है सदाये दिल मुझे।

—'शाद' मैनपुरी

× × ×

१-२—कराहना, ३—बिजली, ४—दिल की पूँजी, ५—संसार।

नावके जानां हुए कुछ इस तरह जुज़्वे[1] बदन,
अपने सीने में नज़र आते हैं लाखों दिल मुझे।

—'शायक' फरुख़ाबादी

× × ×

बेख़ुदी में कुछ नहीं मालूम है मंज़िल मुझे,
जा रहा हूँ ले चला है जिस तरफ़ को दिल मुझे।
ज़बह् होने में मज़ा गर्दन कटाने में है लुत्फ़,
कैसे कैसे मशविरे यह दे रहा है दिल मुझे।

—'शब्बीर' छबरामवी



× × ×

देखते ही तुझको यह क्या होगया क़ातिल मुझे,
दिल को मैं रोता हूँ और रोता है मेरा दिल मुझे।
बनते बनते मौत बन कर रह गईं बेताबियां,
होते होते होगया हासिल सुकूने दिल मुझे।
एक ही ज़ंजीर में जकड़े हुए हैं हुस्नो इश्क़,
उनको करते हैं उदू[2] बदनाम मेरा दिल मुझे।
बच रहे कुछ तीर तरकश में सितम[3] ईजाद के,
कोई ऐसे में बना जाए सरापा[4] दिल मुझे।

—'शमीम' जलेसरी

× × ×

१—हिस्सा, २—दुश्मन, ३—ज़ालिम, ४—सर से पांव तक।

कसरते रंजो अलम से सख्त मुशकिल में रहे,
मेरे दिल के हौसले घुट कर मेरे दिल में रहे।
चश्मे ज़ाहिर बीं जो उनको देखतीं तो किस तरह,
दर्द की सूरत निहां हरदम मेरे दिल में रहे।

—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

तड़प कर रंग क्या अपना जमायेगी मेरे आगे,
अदायें कुछ दिनों सीखे अभी बिजली मेरे दिल की।

—'फ़रहत' बनारसी

× × ×

सुन के मक़तल में यह आवाज़ क़ातिल आया,
जान में जान पड़ी दिल में मेरा दिल आया।

× × ×

हां आतिशे जां शोज़ मोहब्बत की हरारत,
पूछे कोई उस दिल से कि जिस दिल से लगी है।
बेसोज़े दुरूं आँख से आता नहीं रोना,
अश्कों ने बुझाई है जहाँ दिल से लगी है।
पुरज़े मेरे उड़ते हैं कि टुकड़े मेरे पहिले,
आपस में यह बाज़ी जिगरो दिल से लगी है।

—'हिज्र' लखनवी

× × ×

तमन्नाओं को मिलते ख़ाक में तुमने नहीं देखा,
इधर आओ माले[1] हसरते दिल देखते जाओ।

—'शौक़' साहब

× × ×

मैं भी नाज़ां हूँ कि समझा भी किसी क़ाबिल मुझे,
मुतमइन[2] है हुस्न देकर इज़्तिराबे दिल मुझे।
देखने दे अय मेरी उम्मीद धोका तो नहीं,
किसके क़दमों की हुई आहट करीबे दिल मुझे।
बाग़ में जाकर जिगर के ज़ख़्म ताज़ा होगये,
थी चटक कलियों की एलाने[3] शिकस्ते दिल मुझे।

—'सबा' अकबराबादी

× × ×

आतिशे सोज़े दुरूं भड़की है तो भड़के कुछ और,
झोंकना है आज जलती आग में यह दिल मुझे।
उफ़ वह पिछली सरगुज़श्तें[4] हाय वह आग़ाज़े[5] इश्क़,
दिल को मैं रोता हूँ बरसों और बरसों दिल मुझे।
रात भर में उड़ गये सब एक एक नाले के साथ,
सुबह को बिखरे मिले कुछ पारहाये[6] दिल मुझे।

---

१—नतीजा, २—इतमीनान, ३—सूचना, ४—हालात, ५—आदि,
६—टुकड़े।

खुल गई लो नीची नज़रों की शरारत खुल गई,
मिल गया लो इन तड़पती बिजलियों में दिल मुझे।
फिर सम्भल कर अय ज़बां तस्वीरे इबरत खींच दे,
फिर वह कहते हैं सुना दे दास्ताने दिल मुझे।
इश्क़ की रंगीनियों का जब्र तो देखे कोई,
एक लहू की बूंद को कहना पड़ा है दिल मुझे।
इश्क़ का घर यह सजा दूंगे बहुत अच्छी तरह,
एक हसरत है फ़क़त, दरकार और एक दिल मुझे।
आख़िरी मंज़िल में उल्फ़त की कदम रखते हैं 'तैश',
छोड़ दूंगा दिल को मैं और छोड़ देगा दिल मुझे।

—'तैश' मारहरवी

× × ×

अब यह आलम है की दे देकर फ़रेबे लुत्फ़ यार,
मैं शबे ग़म दिल को तसकीं दे रहा हूँ दिल मुझे।

—'जफ़र' बदायूंनी

× × ×

लड़कपन में भी था ऐसा मिजाज़ उस सख़्त क़ातिल का,
किया करता था बदला संग-रेज़ों[1] से मेरे दिल का।

---

1—पत्थर के टुकड़े।

वह आयें नब्ज़ देखें नक़्द जां नज़राने में ले लें,
ठहरता है इलाज इस शर्त पर बेताबिये दिल का।

—'तबीब' मेरठी

× × ×

पाँव फिर बाहर न निकलेंगे यह मंज़िल देखकर,
तुम चमन को भूल जाओगे मेरा दिल देखकर।

—'आज़ाद' अज़ीमाबादी

× × ×

होने दे तेरी अदा का वार क़ातिल देख कर,
देखकर हाँ देखकर सर देखकर दिल देखकर।

—'थातिन' साहब

× × ×

मुशकिलों में चारागर थे मेरी मुशकिल देखकर,
उनको भी हैरत थी मेरी हालते दिल देखकर।
लाखों ही दिल हैं वहाँ हाज़िर मगर हसरत यह है,
कहते हैं बेचैन हैं हम तो तेरा दिल देखकर।

—'हफ़ीज़' अज़ीमाबादी

× × ×

बहरे-तसकीं[1] हाथ रख देते हैं सीने पर मेरे,
रहम आ जाता है उनको हालते दिल देखकर।

—'साकित' साहब

× × ×

1—तसल्ली के लिए।

चारागर तो ख़ैर हमदम थे मेरे ग़मख़्वार थे,
मौत भी चिल्ला उठी बेताबिये दिल देखकर।
वह भी क्या दिन थे कि जब बस्ती थी एक दुनियाये इश्क़,
हुस्न भी हैरान है बरबादिये दिल देखकर।
हम समझते थे जफ़ा पेशा हम हैं ख़ुश हो जायँगे,
और बरहम हो गये वह पारये[1] दिल देखकर।
मैं तो ख़ुद कहता हूँ वह बेदर्द है जल्लाद है,
हाँ मगर चुप लग गई है हालते दिल देखकर।

—'सरशार' कसमंडवी

× × ×

एक दो दिन और जीने का सहारा हो गया,
हाथ उसने रख दिया बेताबिये दिल देखकर।

—'शम्स' मार्लीगामी

× × ×

मुन्तख़िब किसको करें वह चश्मे क़ातिल देखकर,
पड़ रही हैं जान पर नज़रें मेरा दिल देखकर।

—'शैदा' इटावी

× × ×

---

१—टुकड़े।

पहले तो मजरूह[1] कर डाला निगाहे नाज़ से,
फेरने आये हैं अब हसरत भरा दिल देखकर।

—'महजू' देहलवी

× × ×

रंजो ग़म दर्दो अलम[2] अन्दोह[3] हिर्मां[4] हिज्र में,
सब के सब मेहमां हुए खाली मेरा दिल देखकर।

—'मुज़तर' मालीगामी

× × ×

कौन समझा मुद्‌आ[5] क्या है निगाहे नाज़ का,
कुछ किया इरशाद उसने जानिये दिल देखकर।

—'वहशत' कलकतवी

× × ×

हमारे दोनों बाजू तोड़कर सैयाद[6] ने ज़िद से,
कहा अब तो रिहाई[7] की तमन्ना दिल से निकलेगी।
कलेजा थाम कर रह जाओगे आग़ोशे[8] दुशमन में,
किसी शब कोई ऐसी आह भी इस दिल से निकलेगी।

—'जिगर' बिसवानी

× × ×

कर चुका बरबाद तू अय दीदये-गिरयां[9] इसे,
इश्क़ का सरमाया जो कुछ भी हमारे दिल में था।

---

१—ज़ख्मी, २-३-४—दुख, ५—मतलब, ६—घातक, ७—छुटकारा, ८—गोद, ९—रोनेवाली आँखें।

हम लगी लिपटी हुई 'अक़दस' कभी कहते नहीं,
कह दिया सब उनके मुँह पर जो हमारे दिल में था।

—'अक़दस' हैदराबादी

× × ×

बेक़रारी जीते जी जाती तो क्या जाती मेरी,
दर्द एक बेदर्द की उल्फ़त का मेरे दिल में था।

—'दबीर' रुड़की

× × ×

तुम सरासर रंज देने पर जब आमादा हुए,
मैं सरापा दर्द सहने के लिये दिल हो गया।

—'यास' अज़ीमाबादी

× × ×

जिसे कहते हैं नाकामे तमन्ना हसरते मुर्दा दम आख़िर,
वह बन कर आह मेरे दिल से निकलेगी।
शबे ग़म घर से जायेगी मगर जब कोई चाहेगा,
किसी के दिल में आयेगी तो हसरत दिल से निकलेगी।
सितम वह किस पे ढ़ायेंगे सितम दिल पे ढ़ायेंगे,
दुआ किस दिल से निकलेगी हमारे दिल से निकलेगी।

—'फ़िकरी' साहब

× × ×

हिज्र की शब और क्या हो इससे अच्छा मशग़िला,
दिल को मैं समझा रहा हूँ और मेरा दिल मुझे।

जानता हूँ मैं कि मौत आयेगी शामे ग़मे है आज,
किस लिये तस्कीन देना चाहता है दिल मुझे।

—'ज़हीर' फर्रुख़ाबादी

× × ×

जान देकर इश्क़ का रुतबा हुआ हासिल मुझे,
क्या कहेगा बेवफ़ा अब भी तुम्हारा दिल मुझे।
चाहता हूँ मैं न जाऊँ कूचये दिलदार में,
चैन भी लेने दे लेकिन इज़तिराबे दिल मुझे।
जान तक भी मैं नज़र करने के लिये तैयार हूँ,
आप से बढ़ कर नहीं प्यारा यह मेरा दिल मुझे।

—'आजिज़' अर्वाईपूरी

× × ×

मिट गई वह हसरतो अरमां की दुनिया मिट गई,
वह समां अब हाथ आने का नहीं अय दिल मुझे।

—'आजिज़' मैनपुरी

× × ×

तू ने अय तेरे फिराक़ ऐसा किया बिस्मिल मुझे,
आज दामन पर नज़र आते हैं लख़्ते-दिल[1] मुझे।
मुझको नालों से मुहब्बत न आहों से है इश्क़,
बैठने देता नहीं ख़ामोश मेरा दिल मुझे।

१—दिल के टुकड़े।

इस मेरी फ़रियाद का होगा नतीजा और क्या,
ख़ाक में एक दिन मिलायेगा यह दर्दे दिल मुझे।
वहसते दिल की ख़ता क्या दर्दे दिल का क्या कसूर,
दश्त[१] की जानिब लिये जाता है मेरा दिल मुझे।
—'अज़ीज़' शेख़ूपुरी

× × ×

इश्क़ो उल्फ़त का मज़ा यों कभी हासिल होता,
लुत्फ़ जब था तेरे पहलू में मेरा दिल होता।
यह कभी तेरी मुहब्बत से न बिस्मिल होता,
आप के दिल की तरह काश मेरा दिल होता।
दिल लगाने का मज़ा जब था दिल आज़ारों[२] से,
'होश' पहलू में मेरे एक नया दिल होता।
—'होश' साहब

× × ×

गिरह कैसी पड़ी है इस तरफ़ आओ ज़रा देखो,
तुम्हारी ज़ुल्फ़ में बेशक मेरा खोया हुआ दिल है।
मज़ा क्या मय-कशी[३] का हिज्र जानां में मुझे आये,
इधर फूटे हुए सागर[४] उधर टूटा हुआ दिल है।

१—जंगल, २—दिल दुखाने वाला, ३—मदिरापान करना, ४—प्याला।

किसी पहलू किसी करवट नहीं मैं चैन लेता हूँ,
'नज़र' उस शोख़ पर जब से मेरा आया हुआ दिल है।
—'नज़र' गोरखपुरी

× × ×

वह सितम किस लिये करते वह जफ़ा क्यों ढाते,
मेरे क़ाबू से जो बाहर न मेरा दिल होता।
हो गया इससे यह ज़ाहिर कि है बेदिल तू भी,
क़द्र करता मेरे दिल की जो तेरा दिल होता।
इश्क़ के सदमे जो लिखे थे मेरी क़िस्मत में,
या ख़ुदा इससे तो बेहतर था बेदिल होता।
इस तरह आप सताते न मेरे दिल को कभी,
आपके दिल की जगह काश मेरा दिल होता।
दिल की लालच से है आज़ार में तख़फ़ीफ़[1] इतनी,
और वह मुझ पे सितम करते जो बेदिल होता।
ख़ैर से इस तरफ़ उस शोख़ ने देखा भी नहीं,
न जिगर होता न पहलू में मेरा दिल होता।
लेके दिल मुझसे वह 'आज़म' यह किसी का कहना,
तेरी आग़ोश में होता जो तेरा दिल होता।
—'आज़म' करेवी

× × ×

१—कमी।

हाय मिलना इश्क़ में दुश्वार है मंज़िल मुझे,
किस तरफ़ यह ले चली है आरज़ूये दिल मुझे।
कुछ नहीं परवाह तेरी अय महे कामिल[1] मुझे,
दाग़ उठाने के लिये यह मिल गया है दिल मुझे।
चारागर[2] सोज़े जिगर का हाल मैं क्योंकर कहूँ,
चैन लेने ही नहीं देता है दर्दे-दिल मुझे।

—'फ़रहत' शम्साबादी

× × ×

यह मुक़द्दर[3] है तमन्ना अपनी पूरी हो न हो,
लाई एक उम्मीद पर है आरज़ूये दिल मुझे।
तुम सताने को सता लो लेकिन इतना सोच लो,
कर न दे मजबूर कुछ करने को दर्दे-दिल मुझे।

—'फ़ख़' इटावी

× × ×

अब तो कर आज़ाद अय पाबन्दिये मंज़िल मुझे;
राहते[4] आवार्गी है मेरा दर्दे-दिल मुझे।

—'क़मर' मैनपुरी

× × ×

जवाब इस बात का उस शोख़ को क्या दे सके कोई,
जो दिल लेकर कहे कमबख़्त तू किस दिल से मिलता है।

× × ×

१—पूर्णिमा का चाँद, २—वैद्य, ३—भाग्य, ४—आराम।

मेरी उनकी भरी महफ़िल में होगी,
ज़ुबां पर आयेगी जो दिल में होगी।
वहाँ चुटकी में वह सब तौर लेंगे,
यहाँ एक गुदगुदी सी दिल में होगी।
—'दाग़' देहलवी

× × ×

जो कुछ भी ख़ुशी मेरी क़िस्मत में होती,
तो पहलू में कमबख़्त यह दिल न होता।
—'तमन्ना' मुरादाबादी

× × ×

मक़बूल[१] जो हों शाज़[२] हैं क़ाबिल तो बहुत हैं,
आईने के मानिन्द हैं कम दिल तो बहुत हैं।

× × ×

बातिन[३] बहुत हैं ऐसे जो रौशन[४] नहीं हैं,
सीने में सब के दिल है सब अहले दिल नहीं हैं।

× × ×

मसर्रत[५] मुझको अब दुश्वार है दुनिया की महफ़िल में,
ख़ुशी की क़ाबलीयत ही नहीं बाक़ी रही दिल में।

× × ×

---

१—जो पसन्द किया जाय, २—कम, ३—दिलो, ४—रौशन, ५—आनन्द।

शौक़ बिजली से सिवा तेज है कामिल भी तो हो,
दिल की तासीर में क्या शक है मगर दिल भी तो हो।

× × ×

अय अक़्ल एतराज़ से कुछ फ़ायदा नहीं,
क्यों करती है ज़ुबान से दिल का मुक़ाबिला।

× × ×

यह नज़र की नातवानी यह बुतों की ज़ीनतें,
क्या कहूँ 'अकबर' बस अब अल्लाह मालिक दिल का है।

× × ×

बयाने मुद्दआ से रोक लेता हूँ ज़बां अपनी,
तमन्ना से है मजबूरी कि वह गुस्ताख़ है दिल से।

× × ×

झुका सकता हूँ मैं सर को ज़बां को रोक सकता हूँ,
जवाब इसका मगर क्या है कि तू काफ़िर नहीं दिल से।

—'अकबर' इलाहाबादी

× × ×

वादये फरदा[1] वह कर भी लें तो क्या हासिल मुझे,
आज जीने ही न देगा इज़्तिराबे दिल मुझे।
फेर ली आंखें ख़फ़ा होकर यह क्या गुस्सा हुआ,
मैं तो गुस्सा जब समझता फेर देते दिल मुझे।

1—कल का वादा।

मैं वह हूँ दिल देके तुमको दिलवर[1] कर दिया,
तुम वह हो दिल लेके मुझसे कर दिया बे दिल मुझे।
यह वही हालत है कि दुश्मन को भी जिस पर रहम आय,
यानी अब करवट बदलवाता है दर्दे दिल मुझे।
जान का दुश्मन कहा मैंने तो फ़रमाने लगे,
और तुमने क्या समझ कर देदिया था दिल मुझे।
दिल लगाने का नतीजा और क्या होगा क़मर,
अब वह मेरे दिल को तड़पायेंगे मेरा दिल मुझे।

—'क़मर' बदायूँनी

X X X

हां तड़प जाये तड़पता देख कर क़ातिल मुझे,
बिजलियाँ लादे ख़ुदारा[2] इज़तिराबे दिल मुझे।
क्यों सताने आये यादे इशरते साहिल मुझे,
ग़र्क़ कर दे फाश मौजे इज़तिराबे दिल मुझे।
ज़िन्दगी को मैं सुकूने क़ल्ब पर कर दूँ निसार,
चैन लेने दे जो बरबादे तमन्ना दिल मुझे।

—'क़ुरता' क़ादिरी

× × ×

१—प्रियतम, २—ख़ुदा के वास्ते।

यह तकाज़ा है देखा दे कूचये क़ातिल मुझे,
एक बलायेनागहानी[1] हो गया है दिल मुझे।
—'कलीम' फ़रुख़ाबादी

× × ×

छुट के मंज़िल ने किया मुस्तग़नियें[2] मंज़िल मुझे,
अब यह दिल जाने कहां ले जा रहा है दिल मुझे।
हां मिटा देता मआले[3] सैये ला हासिल[4] मुझे,
वह तो यह कहिये दरे क़िस्मत पे लाया दिल मुझे।
—'मानी' आयसी

× × ×

आख़िर आपस की जुदाई का यही अंजाम[5] है,
दिल को मैं रोता था और अब रो रहा है दिल मुझे।
—'सायल' मैनपुरी

× × ×

दो घड़ी के वास्ते मिल जाये यारायें[6] सख़ुन,
आज कहना है किसी से माजराये दिल मुझे।
वाक़िफ़े दैरो[7] हरम[8] लाखों मिले तो क्या मिले,
एक ही काफ़ी था मिलता आशनाये दिल मुझे।
—'मोहसिन' अमृतसरी

× × ×

---

१—आकस्मिक प्रकोप, २—बेपरवाह, ३—नतीजा, ४—बेकार कोशिश, ५—नतीजा, ६—प्रियतम, ७—मंदिर, ८—मक्का।

तू भी है दिल में तेरी उल्फ़त भी ग़म भी दर्द भी,
क्या कहूँ किस तरह का हक़ ने दिया है दिल मुझे।
एक दिल में इतने अरमानों की गुञ्जाइश नहीं,
काश हो जाते अता रोज़े अज़ल दो दिल मुझे।
मैं वह दिल रखता हूँ जिसमें है तमन्ना आपकी,
आपकी ख़्वाहिश मिले एक बेतमन्ना दिल मुझे।
अल्ला अल्ला यह निराली दिलबरी की शान है,
कर गये दिल लेके वह 'महफ़ूज़' अहले दिल मुझे।

—'महफ़ूज़' साहब

× × ×

देख कर दुनिया में अपनी ज़ात से ग़ाफ़िल मुझे,
कौन यारब दे गया ताज़ीर[1] दर्दे दिल मुझे।
ज़िन्दगी आसां थी लेकिन होगई मुशकिल मुझे,
कौन दुनिया में मिला रम्ज़[2] आशनाये दिल मुझे।
बैठने देते नहीं 'वहशत' मुझे दम भर कहीं,
चैन लेने ही नहीं! देता है दर्दे-दिल मुझे।

—'वहशत' साहब

× × ×

१—सज़ा, २—भेद।

नज़अ[1] के आलम में यह कहना किसी का बार-बार,
कब्र में क्या चैन लेने देगा दर्दे दिल मुझे।

—'मुश्ताक़' मैनपूरवी

× × ×

वह न आयेंगे न यह बदबख़्त[2] पायेगा सूकून[3],
एतबार उनका, न अब है एतबारे दिल मुझे।
मैं कहीं जाऊँ यह ज़ालिम ले पहुँचता है वहीं,
चैन से रहने नहीं देता है मेरा दिल मुझे।

—'मोहन' फ़र्रुख़ाबादी

× × ×

तेरे जलवे[4] की इनायत या मेरे दिल का क़ुसूर,
आज हर ज़र्रा नज़र आया जवाबे दिल मुझे।

—'मैकश' अकबराबादी

× × ×

आते हैं वह पहलू में अगर कोई घड़ी को,
तक़दीर से क़ाबू में मेरा दिल नहीं होता।
कह उठता हूँ जो दिल की लगी देख के तुमको,
मैं क्या करूँ क़ाबू में मेरा दिल नहीं होता।

—'अफ़सर' अमरोहवी

× × ×

१—अन्तिम समय, २—बदनसीब, ३—आराम, ४—ज्योति।

यहां तक रोईं आंखें दस्ते रंगी[1] के तसव्वर[2] में,
कि जितना ख़ून था वह रफ़्त: रफ़्त: बह गया दिल का।
—'अंजुम' मुरादाबादी

× × ×

मजमा जहान का तेरी महफ़िल में रह गया,
वीराना[3] जो बचा वह मेरे दिल में रह गया।
वह अपनी आरज़ू तो इशारों में कह गये,
अरमान मेरे दिल का मेरे दिल में रह गया।
—'कलीम' लखनवी

× × ×

जवाबे ख़त दिया तो यह दिया क़ासिद को ज़ालिम ने,
कहो मातम करें कुछ दिन अभी हसरत भरे दिल का।
बहार आने से पहिले चारागर तदबीर लाज़िम है,
कहीं ऐसा न हो नासूर फिर रिसने लगे दिल का।
—'मरक़' लखनवी

× × ×

नज़र मिज़गां[4] की उलफ़त जब से है बेताब रहता हूँ,
यह कांटा देखिये कब तक निकलता है मेरे दिल का।
—'नज़र' अचरानवी

× × ×

१—सुंदर हाथ, २—ध्यान, ३—खंडहर, ४—बरौनी।

वह अपने आप को समझें अगर क़ातिल समझते हैं,
बहरहाल[1] उनको हम आरामे जानो दिल समझते हैं।
उन्हें लिक्खा है हाले दिल मगर मैं यह समझता हूँ,
ये वह बातें हैं जिनको सिर्फ़ अहले दिल समझते हैं।
उन्हें ज़िद से ग़रज़ है अर्ज़े मतलब से इलाक़ा क्या,
वह अपने दिल के आगे कब किसी का दिल समझते हैं।

—'राज़' गनवरी

× × ×

क्या कहूँ अब अय ख़ुदा है हर तरह मुश्किल मुझे,
दिल से है क़ातिल फ़ुज़ूं[2] क़ातिल से बढ़कर दिल मुझे।

—'बशीर' कासगंजवी

× × ×

शौक़ बेहद चाहिये और जज़्बे कामिल चाहिये,
गो बहुत पुरपेच[3] राहे इश्क़ है दिल चाहिये।
पासे ख़ुद्दारी[4] भी नज़रे बेक़रारी हो गया,
एक एक से पूछता फिरता हूँ क्या दिल चाहिये।

—'असर' लखनवी

× × ×

यह न पत्थर है और न है शीशा,
अरे सफ़्फ़ाक[5] यह मेरा दिल है।

---

१—हर हालत में, २—ज़्यादा, ३—टेढ़ा मेढ़ा, ४—अपने को ख़्याल करना, ५—क़ातिल।

आरज़ुओं का था कभी मसकन[1],
अब तो उजड़ा सा खानये दिल है।

—'नैसां' हैदराबादी

× × ×

मुनासिब कब है अपने घर को यों वीरान कर देना,
तुम्हीं आकर रहोगे फिर कभी उजड़े हुए दिल में।

—'रौनक़' गयावी

× × ×

वह देखते तो हैं नीची नज़र से दिल की तरफ़,
वह बेवफा ही सही कद्रदां तो हैं दिल के।
वह जीते जी तो नहीं दिलसे अब निकल सकते,
वह तेरे तीर तो अरमान बन गये दिल के।

—'शैदा' इटावी

× × ×

चली जानिब हमें तर्गीब[2] देकर ले चला है दिल,
लुटा करते हैं जिस मंज़िल में अक्सर क़ाफ़िले दिल के।
सम्हल कर पांव रखना अय सितमगर[3] अपने कूचे में,
पड़े हैं जा बजा रस्ते में टुकड़े शीशये दिल के।

—'अदीब' कलकत्तवी

× × ×

---

१—रहने की जगह, २—बहकाना, ३—ज़ालिम।

समझ में कुछ नहीं आता कशिश[1] है कैसी मंज़िल में,
वह आते हैं मेरी आँखों से होकर खानये दिल में।

—'ग़श' असौलवी

× × ×

मोहब्बत में मुसीबत पर मुसीबत पेश आती है,
अभी होता है क्या क्या हज़रते दिल देखते जाओ।

—'आजिज़' मेरठी

× × ×

या इलाही क्या कोई ताज़ा सितम याद आ गया,
उनके घर अब क्यूँ लिये जाता है मेरा दिल मुझे।
उनसे क्या 'नाशाद' उनके हिज्र का शिकवा करूँ,
जब दग़ा देने लगा कम्बख़्त मेरा दिल मुझे।

—'नाशाद' मैनपुरी

× × ×

मेरी मुश्किल हो गई यों और भी मुश्किल मुझे,
बख़्त[2] बरगश्ता[3] है लज्ज़त-कश[4] मिला है दिल मुझे।

× × ×

पहले जिस तीरे नज़र ने कर दिया घायल मुझे,
रह के दिल में अब नज़र आता है वह एक दिल मुझे।

---

१—खिंचाव, २—भाग्य, ३—फिरा हुआ, ४—मज़ा लेना,

आँख ऐसी कर अता अय मुर्शिदे-कामिल[1] मुझे,
ज़र्रे ज़र्रे में नज़र आने लगे एक दिल मुझे।
—'नाज़ुक' शिकोहाबादी

× × ×

अपने आशिक़ का न होगा कोई क़ातिल ऐसा,
शक्ल तो चाँद सी है आपकी और दिल ऐसा।
'नज़्म' ने ज़ुल्म सहे और कभी उफ़ मुँह से न की,
हमने देखा जिगर ऐसा न कहीं दिल ऐसा।
—'नज़्म' लखनवी

× × ×

दे रही है क्यों फ़रेबे सैये ला हासिल मुझे,
हाय मरने भी न देगी आरज़ूये दिल मुझे।
शौक़े बेहद ने न रक्खा ज़ब्त के क़ाबिल मुझे,
आज करना ही पड़ा अफ़शाये राज़े[2] दिल मुझे।
बदगुमाने इश्क़ होकर यह मिला हासिल मुझे,
अब किसी सूरत नहीं है एतबारे दिल मुझे।
देखना है इन्तिहाये गर्मिये महफ़िल मुझे,
अय मुग़न्नी[3] छेड़ना है आज साज़े दिल मुझे।

१—गुरु, २—भेद प्रकट करना, ३—गायक।

आख़िरी मंज़िल पे भी टिकते नहीं तेरे क़दम,
अब कहाँ ले जायगा अय इज़्तिराबे दिल मुझे।

—'नज़ीर' कायमगंजवी

× × ×

पी के भी मयख़ानये दुनिया में अब ग़ाफ़िल हुआ,
कर गई हुशियार मेरी हर सदाये[1] दिल मुझे।

—'निशात' साहब

× × ×

रास[2] क्या आती हवाये कूचये क़ातिल मुझे,
मैं समझता था जो कुछ समझा रहा था दिल मुझे।
चैन से जीने नहीं देते ज़माने में कभी,
एक तेरी याद काफ़िर एक मेरा दिल मुझे।
मंज़िले जानां से भी आगे कोई मंज़िल है क्या,
अब कहाँ लेकर चला है इज़्तिराबे दिल मुझे।
याद आती है वह हुस्नो इश्क़ की महफ़िल 'नसीर',
जिसमें पैग़ामे अजल[3] देने चला था दिल मुझे।

—'नसीर' फ़रुख़ाबादी

× × ×

१—आवाज़, २—पक्ष में होना, ३—मौत।

आरहा है फिर ख्याले नावके क़ातिल मुझे,
देखिये अब क्या दिखाता है मज़ाके दिल मुझे।
आज फिर उठता नज़र आता है हश्रे इज़तिराब[1],
आज फिर चढ़ता नज़र आता है दर्दे दिल मुझे।
एक सी दोनों को कैफ़ियत है इसके इश्क़ में,
दिल को अय 'नौशाह' मैं रोता हूँ मेरा दिल मुझे।

—'नौशाह' मारहरवी

× × ×

कोई भी मुश्किल न हो महसूस फिर मुश्किल मुझे,
काश अपने होश में रहने दे मेरा दिल मुझे।

—'नुकीले' मैनपुरी

× × ×

उनकी नज़रों में बना दे रहम के काबिल मुझे,
हां दिखा दे एक नई दुनिया निगाहे दिल मुझे।
पेशदावर[2] जब सरे महशर[3] मचाया मैंने गुल,
दे दिया चुपके से लाकर उसने मेरा दिल मुझे।
हर कदम पर खाक के ज़र्रे उठा लेता हूँ मैं,
दे रही है सैकड़ों धोके तलाशे दिल मुझे।

---

१—क़यामत की बेचैनी, २—ईश्वर के सामने, ३—क़यामत में।

होगया यासो[1] तमन्ना का भी अब किस्सा तमाम,
दिल को मैं गुम कर चुका हूँ खो चुका है दिल मुझे।
—'बेक़ार' डुबाइवी

× × ×

होता नहीं जुदा कोई मेरे ख्याल में,
आंखों के सामने है कभी दिल के पास है।
उट्ठा जो हाथ जोफ़ से सौ मुशक्लों के बाद,
वह यासो ग़म के साथ मेरे दिल के पास है।
अब मुझको दूर रहने का शिकवा नहीं रहा,
दिल उसके पास है वह मेरे दिल के पास है।
जो आंसुओं से बुझ नहीं सकती किसी तरह,
भड़की हुई वह आग मेरे दिल के पास है।
तुम कहते हो कि मुझको नहीं तुम से वास्ता,
तसवीर फिर यह किसकी मेरे दिल के पास है।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

लड़ी थी आंख उनसे उस घड़ी को याद करता हूँ,
कभी फ़ुरसत जो मिलती है मुझे बेताबिये दिल से।
इसे रहती है एक ताज़ा सितम की आये दिन ख्वाहिश,
गजब में जान मेरी पड़ गई ईज़ा[2] तलब दिल से।

1—निराशा, २—दुख चाहना।

नहीं मालूम इसमें किस गुले राना का जलवा है,
कि हर एक सांस के साथ आ रही है बूये खुश दिल से।
—'असर' रामपुरी

× × ×

उसकी निगाहें नाज़ के क़ाबिल न समझना,
अय बेखबरो दिल को कभी दिल न समझना।
बेकार सी एक हस्तिये बातिल[1] न समझना,
नक़्शे क़दमे यार है यह दिल न समझना।
खुद दे के कहा दर्दे मुहब्बत यह किसी ने,
अब आज से अपना इसे तुम दिल न समझना।
—'जिगर' मुरादाबादी

× × ×

हम किस पर असर डालें अपना आदाये वफ़ा से दूर हैं सब,
जो दर्द भरे का दर्द करे यों दर्द भरा दिल कोई नहीं।
क्या फ़िक्र मेरी क्या ज़िक्र मेरा, मैं मोरिदे-ग़म[2] पामाले-सितम[3],
इसकी वह किसी दिन जांच करें है कोई कि खुश दिल कोई नहीं।
वह रंग मुहब्बत बूये वफ़ा वह अश्क सितम वह दाये अलम,
जितने नज़र आये गुञ्चो[4] गुल इनमें से मेरा दिल कोई नहीं।
—'नूह' नारवी

× × ×

१—नाशवान जीवन, २—दुःख में रहना, ३—जुल्म से कुचले जाना, ४—कलियाँ।

अपना हर अंदाज़ क़ातिल देख लो,
फिर भी दिल देता हूँ मैं दिल देख लो।
ग़ैर दिल देगा तुम्हें अच्छी कही,
पेशतर तुम ग़ैर का दिल देख लो।
उस जफ़ा जू[1] पर 'दुआ' मरता हूँ मैं,
मेरी हिम्मत देख लो दिल देख लो।

—'दुआ' डुबाइवी

× × ×

ग़मे फ़ुरक़त में हर दम सामने रहते हैं मुशकिल के,
न दिल है मेरे क़ाबू में न तुम क़ाबू में हो दिल के।
अरे तेरी अदा अच्छी तरह मैं तुझ से वाक़िफ़ हूँ,
किये तू ने हाँ तो टुकड़े मेरे हसरत भरे दिल के।
कभी वह मुझ से मिल जायें कभी वह मेरे घर आयें,
निकालें हसरतें दिल की निकाले हौसले दिल के।

—'आजिज़' अताईपुरी

× × ×

न मिलने दी नज़र ग़ैरों से उनकी इस बहाने से,
किसी की आंख का क्या देखना दिल देखते आओ।
तुम्हारे हर क़दम पर एक नया गुल खाक होता है,
तुम अपने हर क़दम पर एक नया दिल देखते आओ।

---

1—ज़ालिम।

नमकपाशी[1] ही जब मंज़ूर है ज़ख्मे मुहब्बत पर,
तो फिर तुम मुस्करा कर जानिबे[2] दिल देखते जाओ।
—'अफ़सर' अमरोही

× × ×

मेरे पहलू में कुछ है तो सही डूबा हुआ खूँ में,
यह पैकां[3] है तुम्हारा या मेरा दिल देखते जाओ।
मेरे पहलू में आकर सीख जाओ अपने पैकां से,
मिला करते हैं यों आपस में दो दिल देखते जाओ।
—'नूर' हसनपुरी

× × ×

नहीं देखी जो अरमानों की महफ़िल देखते जाओ,
मेरे दिल में जमी है तुम मेरा दिल देखते जाओ।
मकां ऐसा मकीं ऐसा नहीं देखा 'उफ़क़' तुमने,
मेरा ग़म देखते जाओ मेरा दिल देखते जाओ।
—'उफ़क़' अमरोही

× × ×

तड़पने में यह इसका ज़ोमे बातिल देखते जाओ,
जिगर कहता है मैं हूँ दूसरा दिल देखते जाओ।

---

1—नमक छिड़कना, २—तरह, ३—तीर की नोक।

कोई टूटा हुआ पैमाना तुमने बज़्मे साक़ी में,
न देखा हो तो यह टूटा हुआ दिल देखते जाओ।
—'अरमान' ग्वालियारी

× × ×

तुम्हें हो भी न कुछ दरपेश मुशकिल देखते जाओ,
यहां आओ मेरा दुकला हुआ दिल देखते जाओ।
अभी तो और भी सहने पड़ेंगे ज़ुल्म उल्फ़त में,
अभी देखा ही क्या है हज़रते दिल देखते जाओ।
शबे ग़म[1] इलतजाए मौत क्यों अय हज़रते 'अज़हर',
अभी क्या है अभी तो हालते दिल देखते जाओ।
—'अज़हर' खुर्जवी

× × ×

ठिकाने तीर के मंज़िल ब मंज़िल देखते जाओ,
मेरा पहला, कलेजा, सीनये दिल देखते जाओ।
यह बेचैनी, यह बेताबी, यह आहे सर्द यह नाले,
मुहब्बत के मज़े अय हज़रते दिल देखते जाओ।
—'रहमत' बलन्दशहरी

× × ×

१—दुख की रात।

जो दिल तुमको पसंद आयेगा लोगे तो वही लेकिन,
हमारा भी जफ़ाकश[1] बावफ़ा दिल देखते जाओ।
—'अनवर' अमरोही

× × ×

ज़रूर आयेंगे अय 'तसलीम' उन्हें लेकर ही आयेगा,
असर लेकर गया है नालये दिल देखते जाओ।
—'तसलीम' मेरठी

× × ×

निगाहें फेर कर हालाते बिस्मिल देखते जाओ,
फ़िदा होता हूँ मैं तुम पर मेरा दिल देखते जाओ।
कभी पहलू में दिल दिल था मगर अब ग़म से छलनी है,
पए इबरत[2] नज़र डालो मेरा दिल देखते जाओ।
—'चिरती' देहलवी

× × ×

जो आए हो तो बैठो भी घड़ी भर मेरे पहलू में,
तुम अपनी आंख से ख़ुद हालते दिल देखते जाओ।
—'चमन' हापुड़ी

× × ×

मेरी ख़ामोशियों की क़द्र शायद तुमको हो जाये,
मेरे दिल में हुजूमे नालये दिल देखते जाओ।

---

१—ज़ुल्म उठाने वाला २—शिक्षा के लिए।

अभी टुकड़े किये हैं मैंने अपने ही गरेबां के,
अभी करती है क्या क्या वहशते दिल देखते जाओ।
कहां तक जौर सहता हूं कहां तक जब्त करता हूं,
जफायें करते जाओ तुम मेरा दिल देखते जाओ।
तसल्ली के लिये नक्शा तुम्हारा हमने खींचा है,
अगर शक हो उठा कर पर्दए दिल देखते जाओ।
जिगर पर तुमने जिस तिरछी नज़र का तीर मारा है,
इसी तिरछी नज़र से जानिबे दिल देखते जाओ।

—'हमीद' मेरठी

× × ×

तलाशे दिल में आये हो मेरी आग़ोश[1] ख़ाली है,
नहीं है इसमें कुछ जुज़[2] हसरते दिल देखते जाओ।

—'गफ़्फ़ार' मेरठी

मैं अपनी जान देने के लिये मक़तल[3] में आ पहुँचा,
मेरा शौक़े शहादत हसरते दिल देखते जाओ।

—'हाफ़िज़' मेरठी

× × ×

तुम्हारा शोलये-उल्फ़त[4] भी शोला किस बला का है,
फुंका जाता है पहलू में मेरा दिल देखते जाओ।

१—गोद, २—सिवाय, ३—क़त्ल की जगह, ४—प्रेम का अंगारा।

अभी खुल जायगा यह वावफ़ा है कौन दोनों में,
देखा दो अपना दिल मुझको मेरा दिल देखते जाओ।
तरक्की उम्र में हो और तुम्हें अल्लाह ख़ुश रक्खे,
ज़रा 'ख़ुरातर' का भी हो जाये ख़ुश दिल देखते जाओ।

—'ख़ुरातर' मेरठी

× × ×

मेरा दिल तोड़ते ही चल दिये वह वाह री किस्मत,
यह कहता रह गया मैं हसरते दिल देखते जाओ।

—'दबीर' रुड़की

× × ×

ख़ुदा जाने अभी किस बला का सामना होगा,
अभी क्या है अभी अय हज़रते दिल देखते जाओ।
जहाँ जाते हो जाना, तुमको कोई रोक सकता है ?
मगर दम भर मेरी बेताबिये दिल देखते जाओ।
नज़र आयेंगी लाखों तुरबतें उम्मीद अरमां की,
जहां देखा है आलम एक मेरा दिल देखते जाओ।
वफ़ाओं की वलंदी से जफ़ायें पस्त होती हैं,
सितम के साथ ही तुम हिम्मते दिल देखते जाओ।

—'ज़ार' मेरठी

× × ×

अगर मंज़ूर है कुछ इम्तिहां लेना तो बिस्मिल्लाह[1],
मैं तुम पर जान दूँ और तुम मेरा दिल देखते जाओ।
किसी के इश्क़ में बरबाद हो जाना नहीं काफ़ी,
देखाता है अभी क्या क्या हमें दिल देखते जाओ।
न देखा है न देखें वह निगाहे लुत्फ़ से हरगिज़,
कहो तुम लाख उनसे हालते दिल देखते जाओ।

—'ज़ेवर' फ़र्रुख़ाबादी

× × ×

यह माना हमने तुम्हें नफ़रत है हसरत भरे दिल से,
न देखो दिल मगर बेताबिये दिल देखते जाओ।

—'सर्दार' नजीबाबादी

× × ×

वही हम हैं वही तुम हो वही दिल है वही हसरत,
निगाहे नाज़ से फिर जानिबे दिल देखते जाओ।
सदा हर सिम्त से यह आ रही है कूये-क़ातिल[2] में,
मेरा दिल देखते जाओ मेरा दिल देखते जाओ।

—'शम्स' गयावी

× × ×

---

१—श्रीगणेश, २—माशूक़ की गली।

अलम[1] के यास[2] के हसरत के ग़म के दाग़ हैं लाखों,
यह घर का घर चराग़ां[3] है मेरा दिल देखते जाओ।
—'शमसाद' साहब

× × ×

उधर कहते हैं सब अंदाज़े क़ातिल देखते जाओ,
इधर मेरा इशारा है मेरा दिल देखते जाओ।
तग़ाफ़ुल[4] की शिकायत फिर करूँ यह ग़ैर मुमकिन है,
जो तुम तिरछी निगाहों से मेरा दिल देखते जाओ।
अगर उस शोला रू[5] के इश्क़ में यह हाल है 'शोला',
तो जलकर ख़ाक भी हो जायगा दिल देखते जाओ।
—'शोला' देहलवी

× × ×

दमें आख़िर है एक बेकस[6] की मुशकिल देखते जाओ,
मुझे देखो न देखो रुख़सते दिल देखते जाओ।
यह आलम हुस्न का फिर यह ख़िरामे-नाज़[7] मस्ताना,
नज़र हर हर क़दम पर आयेंगे दिल देखते जाओ।
अभी क्या है अभी क्यों हमपे हँसते हो जफ़ा वालो,
बनेगा एक दिन नक़्शे वफ़ा दिल देखते जाओ।
—'सरशार' फ़तेहगढ़ी

× × ×

१—दुख, २—निराशा, ३—रौशन, ४—ग़फ़लत, ५—चमकता मुखड़ा, ६—असहाय, ७—इठलाती चलती हुई चाल।

नहीं यह काम का खारे तमन्ना इसमें लाखों हैं,
न हो बावर[1] तो यह काटों भरा दिल देखते जाओ।
बुरा हो तेरा बेताबी[2] खफ़ा वह हो गये मुझ से,
यह उनसे क्यों कहा था हसरते दिल देखते जाओ।

—'सरीर' साहब

× × ×

खदंगे[3] नाज़ की आराम मंज़िल देखते जाओ,
तुम अपनी चाह में डूबा हुआ दिल देखते जाओ।
अदायें हैं तुम्हारी ज़हर कातिल की बुझी छुरियाँ,
इन्हें जो भोंक ले सीने में वह दिल देखते जाओ।
जिगर के जख्म, दिल के आबले, नासूर सीने के,
यह सब कुछ देखकर टूटा हुआ दिल देखते आओ।

—'अतीक़' हसनपुरी

× × ×

बिनाये[4] नाज़िरो[5] खल्लाके[6] कामिल देखते जाओ,
बहुत देखी है दुनिया एक मेरा दिल देखते जाओ।

—'अयाँ' मेरठी

× × ×

नहीं बिगड़ा अभी कुछ बाज़ आओ अपनी बातों से,
न लाये रंग यह टूटा हुआ दिल देखते जाओ।

---

१—यकीन, २—बेचैनी, ३—तीर, ४—बुनियाद, ५—नारा करना, ६—ईश्वर।

न देखी हो अगर जाने जहाँ उजड़ी हुई दुनिया,
तो पहलू चीर कर बरबादिये दिल देखते जाओ।
—'आलम' कश्मीरी

× × ×

सदाये[1] दिल-खराश[2] आती है हरदम मेरे सीने से,
ख़ुदा के वास्ते तुम हालते दिल देखते जाओ।
तुम्हारे नावके अन्दाज़ से जख़्मी हुए दोनों,
कलेजा देखते जाओ, मेरा दिल देखते जाओ।
—'ग़रीब' सहारनपुरी

× × ×

मेरी आहे रसा चलते हुए जादू से क्या कम है,
चले आओगे ख़ुद थामे हुए दिल देखते जाओ।
—'फ़रोग़' भरतपुरी

× × ×

अगर जाते हो जाओ शौक़ से मैं कुछ नहीं कहता,
मगर तुम एक नज़र येतावियें दिल देखते जाओ।
वह ठुकराते गये और हसरतें कहती गयीं 'क़ासिम',
ज़रा ठहरो यही है क़ब्रे बेदिल देखते जाओ।
—'क़ासिम' मुरादाबादी

× × ×

१—आवाज़, २—दिल छेदनेवाली ।

बज़ाहिर कुछ नहीं दिल में लहू की चन्द बूंदें हैं,
हक़ीक़त में बड़ी शै है मेरा दिल देखते जाओ।
—'कामिल' मेरठी

× × ×

मुझे पामाल करना है तो करना शौक़ से लेकिन,
मेरी हसरत मेरा अरमाँ मेरा दिल देखते जाओ।
—'नज़र' अम्बालवी

× × ×

तड़पता है परंगे मुर्ग़-बिस्मिल[1] देखते जाओ,
कहाँ जाते हो आओ तुम मेरा दिल देखते जाओ।
—'यूसुफ़' शाहजहांपुरी

× × ×

मेरे मरक़द[2] पर अरमानों की महफ़िल देखते जाओ,
यहीं है दफ़्न हर एक हसरते दिल देखते जाओ।
जो है मंज़ूर तुमको इमतिहाने आशिक़े शैदा,
मैं हाज़िर हूँ जिगर चीरो मेरा दिल देखते जाओ।
—'क़मर' अकबराबादी

× × ×

---

१—अधमरा पक्षी, २—क़ब्र।

तुम्हारे तीर को दिल में जगह दी किस मुहब्बत से,
मेरे पहलू में यह है दूसरा दिल देखते जाओ।
—'नकहत' शिकोहाबादी

× × ×

ग़म है क्या तुम शौक़ से हो जाओ 'बिस्मिल' से अलग,
यह समझ लो हो नहीं सकते मगर दिल से अलग।
यह तो मुमकिन है मगर यह ग़ैर मुमकिन है ज़रूर,
मैं तेरे दिल से अलग हूँ तू मेरे दिल से अलग।

× × ×

न है कोई ख्वाहिश न है कोई अरमां,
मिलो हमसे तुम हसरते दिल यही है।
तमाशा दिखाये जो दोनों जहां का,
ज़रा आप देखें तो वह दिल यही है।
वह मुट्ठी में क्या शै छुपाये हुए हैं,
दिखायें दिखायें मेरा दिल यही है।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

जिस दिल से उनकी बज़्म[1] में जाता हूँ मैं कभी,
लौटा न एक रोज़ भी वह दिल लिये हुए।

---

1—सभा।

राहे वफ़ा में लुत्फ़ तो जब है कि यों चलें,
मैं आपका दिल, आप मेरा दिल लिये हुए।

—'नश्तर' साहब

× × ×

बेख़ुदी में कह दिया है आप से राज़े नेहां[1],
आप के मुंह तक रहे यह आप के दिल में रहे।
बर्क़े[2] हुस्ने यार इतनी किसलिये है बेक़रार,
यह मेरी आंखों में ठहरे यह मेरे दिल में रहे।

—'बर्क़' देहलवी

× × ×

किस क़दर आबाद था मेरा दिले बरबाद भी,
जिसके हर ज़र्रे से पैदा एक नया दिल हो गया।
हर किसी को यों तो पहलू में मिला है दिल मगर,
जिस के दिल पर पड़ गई तेरी नज़र दिल हो गया।

—'अश्र' गनोरवी

× × ×

हां सितम कर तुझे कुछ लुत्फ़ जो हासिल हो जाए,
मुझ को मंजूर है बरबाद मेरा दिल हो जाय।
उनका अरमान कि ख़ूने दिले आशिक़ पीजे,
मेरी हसरत कि हर एक क़तरये ख़ूं दिल हो जाय।

---

१—छुपा हुआ भेद, २—बिजली।

कितना खुश हो के चला कूचये क़ातिल को 'मुईन',
जिन्दगानी से कोई इतना भी न बेदिल हो जाय।
—'मुईन' उस्मानपुरी

× × ×

है शोख़ी सी नज़र में लब पे हलका सा तबस्सुम[1] है,
कहानी सुन रहे हैं वह किसी दुखते हुए दिल की।
न कुछ सैयाद का बिगड़ा नशेमन[2] पर गिरी बिजली,
असर लेकर चली थीं अर्श से आहें मेरे दिल की।
किसी के हाथ से मस्ती में सागर[3] तो नहीं छूटा,
सदा आई है कानों में शिकस्ते शीशये दिल की।
—'फ़िराक़' गोरखपुरी

× × ×

लिप आना इसका अब पहलू से हम मुश्किल समझते हैं,
जिसे तुम तीर समझे हो उसे हम दिल समझते हैं।
चटकती है कली गुलशन[4] में लेकिन उफ़ रे नाकामी,
कि हम इस को भी आवाज़े शिकस्ते[5] दिल समझते हैं।
मुर्दे दिल के फ़िसाने[6] में भला क्या लुत्फ़ आवेगा,
यह दिल की दास्तां है इस को अपने दिल समझते हैं।
—'सूफ़ी' मेरठी

× × ×

१—मुस्कुराहट, २—घोंसला, ३—प्याला, ४—बाग़, ५—टूटना,
६—[illegible]।

मोहब्बत के सितम के नाज़ के क़ाबिल समझते हैं,
ख़ुदा का शुक्र है वह मेरे दिल को दिल समझते हैं।

—'कुप्या' रोहतकी

× × ×

जान लेता है तसव्वर में भी एक अंदोह रश्क,
ग़ैर उसके दिल में है और वह हमारे दिल में है।

—'सालिक' साहब

× × ×

चाहते हैं यों हसीनों को 'ज़की' ग़ाफ़िल कहीं,
यह भी कोई वज़ा है आंखें कहीं हैं दिल कहीं।

—'ज़की' देहलवी

× × ×

सीने से हाय यास ने सब कुछ मिटा दिया,
जिस दिल में दर्द था मेरे वह दिल नहीं रहा।

—'रशकी' साहब

× × ×

हुए जब एक दो दिल, फूट कैसी तफ़रक़ा[1] कैसा,
तुम अपना दिल समझते हो हम अपना दिल समझते हैं।

—'आज़ाद' लखनवी

× × ×

1—विभुदन।

जो दिल था मेरे पहलू में वह है अब उनकी मुट्ठी में,
इसी बायस से शायद वह मुझे बेदिल समझते हैं।
—'इन्साफ' रंगूनवी

× × ×

उन्हीं पर मरते हैं हम जिनको इस क़ाबिल समझते हैं,
उन्हीं को देते हैं दिल भी जो दिल को दिल समझते हैं।
—'अहकर' सूरती

× × ×

तोड़ना तीरे निगाहे नाज़ से मुशकिल न था,
संग दिल ईसाफ कर पत्थर किसी का दिल न था।
ले गई पहलू से दुज़दीदा निगाहें[1] किस तरह,
बेख़बर इतना तो अय 'हामिद' जिगर से दिल न था।
—'हामिद' लखनवी

× × ×

जिगर से नावके तीरे सितम खींचे तो क्या खींचे,
मज़ा जब है निकालो आरज़ू हसरत भरे दिल की।
—'रम्ज़' क़ादरी

× × ×

---

१—चुराई हुई आँखें।

मताये ज़ीस्त[1] क्या हम ज़ीस्त का हासिल समझते हैं,
जिसे सब दर्द कहते हैं उसे हम दिल समझते हैं।
—'असग़र' गोण्डवी

× × ×

आशिक़ी वे दिल तुम्हें क्या दें, किसी क़ाबिल नहीं,
दिल जो हो सब कुछ है लेकिन कुछ नहीं गर दिल नहीं।
ले गई शायद निगाहे शौक़ उनको ले गई,
आज 'वाहिद' क्या है पहलू में हमारे दिल नहीं।
—'वाहिद' बिलग्रामी

× × ×

शिद्दते, आज़ार[2] से यह फ़ैज़ हासिल हो गया,
ख़ूंगरे ग़म रफ़्तः रफ़्तः अब मेरा दिल हो गया।
लुत्फ़ कर या कहर कर इस से मुझे मतलब नहीं,
मैं ने तुझको दे दिया दिल अब तेरा दिल हो गया।
सौ अदा से जो चुभा था आपका तीरे नज़र,
रहते रहते अब वही दिल में रगे-दिल हो गया।
हुस्नो उल्फ़त ने दिखाया अब 'ज़िया' उल्टा असर,
ले के मेरा दिल वह मुझ से और बदंदिल हो गया।
—'ज़िया' देवानन्दपुरी

× × ×

---

१—ज़िन्दगी की पूंजी, २—दुख।

एक का अरमान जाने दूसरा मुमकिन नहीं,
हम से पूछो तो बतायें क्या हमारे दिल में है।
—'अज़ीज़' मिर्ज़ापुरी

× × ×

रोज़ महशर[1] क्या बताऊँ जान किस मुशकिल में है,
वह सितम गर सामने है और दिल की दिल में है।
ज़िन्दगी का लुत्फ़ इस उजड़ी हुई मंज़िल में है,
एक दुनिया इश्क़ की आबाद मेरे दिल में है।
ज़ाहिरो बातिन की एक रंगी कमाले इश्क़ है,
नाम उसी का लब पे है जिसकी मुहब्बत दिल में है।
—'क़ुदसी' जायसी

× × ×

इस ताल्लुक के मैं सदके रब्ते[2] बाहम के निसार,
आपके तीरे नज़र का दर्द मेरे दिल में है।
—'हाशमी' कानपुरी

× × ×

मैं सितम सहने को हर दम सामने मौजूद हूँ,
कह दो जो कुछ है ज़बां पर, कर लो जो कुछ दिल में है।

---

1—प्रलय का दिन, २—मेलजोल।

क़द्र इसकी और कोई जानने वाला नहीं,
ख़ाक-साराने[1] जहाँ से पूछ लो जो दिल में है।
—'बिरनू' लखनवी

× × ×

दूर हर महफ़िल से रह कर भी हर एक महफ़िल में है,
तुम को जो दिल में समझ ले तू उसी के दिल में है।
रौनके महफ़िल उसे कहता हूँ जो महफ़िल में है,
दिल से बढ़कर वह मोहब्बत है जो मेरे दिल में है।
बेवफ़ा तुम, बे सबब आज़ार तुम, बेमेहर[1] तुम,
आज सब तुमको कहेंगे जो हमारे दिल में है।
मह्न हूँ कुछ इस तरह उनके तसव्वर[2] में 'शमीम',
आँख में आंसू भरे हैं दर्द मेरे दिल में है।
—'शमीम' लखनवी

× × ×

यों तो कहने सुनने को दुनिया तेरी महफ़िल में है,
हां मगर महफ़िल में तो वह है जो मेरे दिल में है।
—'इशरत' बलरामपुरी

X X X

एक दिन कह दीजिये जो कुछ है दिल में आप के,
एक दिन सुन लीजिये जो कुछ हमारे दिल में है।
—'जिगर' बिस्वानी

X X X

१—तुच्छ, २—ध्यान।

बैठते उठते हमेशा हर घड़ी मुश्किल में है,
हसरतों की एक दुनिया क्या किसी के दिल में है।
फत्ले गाहे नाज़ में उसको नहीं मरने का ख़ौफ़,
किस कदर शौक़े-शहादत[1] अब किसी के दिल में है।
—'हुनर' गायवी

× × ×

थे बड़े शातिर[2] मगर 'शातिर' भी धोखा खा गये,
इनसे पूछे तो कोई भूल आये अपना दिल कहां।

× × ×

कभी आसां इसे समझा कभी मुश्किल समझा,
लेकिन अब तक न मोहब्बत को मेरा दिल समझा।
—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

मिटा कर मुझको समझे थे मिटा अब नाम उल्फत का,
मगर इस पर भी मेरी याद बाक़ी रह गई दिल में।
'वफ़ा' मेरी वफायें उनको जिस दिन याद आयेंगी,
तो वह अपनी जफ़ाओं पर बहुत पछतायेंगे दिल में।
—'वफ़ा' शाहजहांपुरी

× × ×

---

१—मरने का शौक, २—चालाक।

जान भी प्यारी नहीं तुमसे हमें दिल भी नहीं,
जान भी क़ुर्बान है तुम पर हमारा दिल भी है।

—'अनवर' अमरोही

× × ×

नाम जिसका ख़ल्क़[1] में ज़ालिम भी है क़ातिल भी है,
उसके क़ब्ज़े में हमारी जान भी है दिल भी है।

—'शबाब' ग्वालियारी

× × ×

लाख दिल हों आप के क़ब्ज़े में इस से क्या ग़रज़,
देखना यह है हमें इस में हमारा दिल भी है।

—'रौनक़' मेरठी

× × ×

क़यामत आज ले जाये कहीं और अपने मजमे को,
यह महफ़िल भर गई यां तो हजूमे हसरते दिल है।

—'बयां' मेरठी

× × ×

ख़ुदा वह भी घड़ी लाये ख़ुदा वह दिन भी दिखलाये,
रहो बेताब तुम मेरी तरह बेताबिये दिल से।
तुम अपनी याद समझो इसको या दीवानगी मेरी,
बहुत बातें किया करता हूँ मैं तनहाई में दिल से।

—'अबद' मेरठी

× × ×

१—संसार।

आदम[1] का जिस्म जब की अनासिर[2] से मिल बना,
कुछ आग बच रही थी सो आशिक़ का दिल बना।

—'सौदा' देहलवी

× × ×

आहो नाला मत किया कर इस तरह बेताब हो,
अय सितमकश[3] 'मीर' ज़ालिम है जिगर भी दिल के पास।

—'मीर' देहलवी

× × ×

हो चुका अब इम्तियाज़े नाक़िसो[4] कामिल मुझे,
हर क़दम पर आज धोके दे रहा है दिल मुझे।
जादये[5] सब्रो रज़ा में डगमगाते हैं क़दम,
जाने क्या समझा रहा है आज मेरा दिल मुझे।
रहम कर हां रहम कर अय यादे जानां रहम कर,
कर चुका, हाँ कर चुका बरबाद मेरा दिल मुझे।

—'कमाल' हामदी

× × ×

क्यों बतायें आप को हम आप को इससे ग़रज़,
भोली भाली प्यारी प्यारी कोई सूरत दिल में है।

—'क़ैसर' बरेलवी

× × ×

१—पुरुष, २—पंच तत्त्व, ३—ज़ालिम, ४—बुरा, ५—रास्ता।

रश्के दुश्मन का असर भी उल्फ़ते कामिल में है,
एक क़यामत है, क़यामत का यह कांटा दिल में है।
फिर किसी का सामना है जान एक मुशकिल में है,
लब पे हर्फ़े मुद्दआ है ना उम्मेदी दिल में है।
हसरते अर्ज़े तमन्ना अब बड़ी मुशकिल में है,
साफ़ चितवन कह रही है जो किसी के दिल में है।
मेरा वह मतलब नहीं मेरी तमन्ना वह नहीं,
गैर का अरमान वह, जो गैर के जो दिल में है।
मिट गये सब वलवले नाकामिये-पैहम[1] से आह,
अब न हसरत है, न हसरत की वह सूरत दिल में है।
आप शर्माये नहीं, आप इस तरह बदज़न[2] न हों,
मेरा वह मतलब नहीं है आप के जो दिल में है।
मुझ पे औ दुश्मन के होते फिर लगावट की नज़र,
फिर किसी ताज़ा सितम का शौक़ उनके दिल में है।
जान बचती अब शबे फ़ुर्क़त नज़र आती नहीं,
फिर वही वहशत, वही उनका तसव्वर[3] दिल में है।
रहम तुम करते न करते पूछ लेना था मगर,
'आरज़ू' क्यों हो परीशां क्या तमन्ना दिल में है।

—'आरज़ू' बरेलवी

× × ×

१—बार बार निराशा होना, २—बुरा ख्याल, ३—ध्यान।

मिटा कर दिल को तुम, अपने को आख़िर क्या समझ बैठे,
मेरी हर आरज़ू हो जायगी दिल देखते जाओ।
—'तायब' मेरठी

× × ×

नहीं मालूम क्या ज़िद है अदावत और उल्फ़त में,
न निकली वह तेरे दिल से न निकली यह मेरे दिल से।
जब आईं हिचकियां समझे किया है हमको याद उसने,
ख़बर मिलती है घर बैठे हमें उस शोख़ की दिल से।
ख़ुदा की शान है 'क़ालिब' जिन्हें ज़िद थी न आने की,
वह देखो आ रहे हैं खिंच के मेरे जज़्बये दिल से।
—'क़ालिब' साहब

× × ×

मंज़िले राहे तलब तक ख़ाक पहुँचेंगे नदीम,
होश हैं खोये हुए पहलू में अपने दिल नहीं।
—'अर्श' साहब

× × ×

वह चुरायें आंख अपनी जान लेकर शौक़ से,
फेर लें अपनी नज़र ऐसा हमारा दिल नहीं।
—'रयाज़' ख़ैराबादी

× × ×

यह ख़लिश मुझ में भी तो अय नावके क़ाबिल नहीं,
तीर है तिरछी नज़र का आरज़ूये दिल नहीं।

उनके तरकश में हज़ारों तीर हैं दिल के लिये,
और तीरों के लिये पहलू में मेरे दिल नहीं।
—'वसीम' खैराबादी

× × ×

काम अपना कर गई कुछ ऐसा दुज़दीदा[1] नज़र,
होश गुम हैं और पहलू में हमारा दिल नहीं।
—'इशरत' लखनवी

× × ×

अरे सब से मेरी फ़रियाद की आवाज़ आती है,
यह उस दुनिया के ज़र्रे हैं कि टुकड़े हैं मेरे दिल के।
—'बेख़ुद' मोहानी

× × ×

क्या तसल्ली हुई नज़्ज़ारये क़ातिल से मुझे,
बूये ख़ूं आती है एक एक रगे दिल से मुझे।
—'बेबाक' शाहजहांपुरी

× × ×

चमक उट्ठे शरारे[2] बन के ज़र्रे कूये क़ातिल के,
यह आहें हैं मेरे दिल की यह नाले हैं मेरे दिल के।
निकाले से न निकलेगा तेरा तीरे नज़र लेकिन,
और ऐसे तो सभी मेहमान नावक हैं मेरे दिल के।
—'क़ैसर' लखनवी

× × ×

१—चुराई हुई आंख, २—चिनगारी।

मिली कब तुमको शग्ले कसरते आज़ार से फ़ुर्सत,
जो मैं कहता मेरी बेताबिये दिल देखते जाओ।
न मुझको है खबर दिल की न दिल को है खबर मेरी,
कहूँ मैं किस तरह उनसे मेरा दिल देखते जाओ।
उधर मुंह फेर कर इस चश्मपोशी[1] का नतीजा क्या,
कभी तो मुड़ के तुम बेताबिये दिल देखते जाओ।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

उससे उल्फ़त तर्क हो सकती नहीं तेरी तरह,
'नज़्म' का दिल और है, ज़ालिम तेरा दिल और है।

—'नज़्म' लखनवी

× × ×

आइने को हुस्न की तस्वीर के क़ाबिल बना,
इश्क़ करना है तो पहले दिल को अपने दिल बना।

—'सिराज' लखनवी

× × ×

सुराग़े तीर गुमगश्ता[2] बड़ी मुश्किल से निकलेगा,
जो देखो चीर कर तो यह हमारे दिल से निकलेगा।

---

१—आंख छिपाना। २—खोया हुआ।

वक़्ते वापसीं[1] कहती हैं पथराई हुई आँखें,
कब उनके दीद का अरमां हमारे दिल से निकलेगा।
जलाकर ख़ाक कर देगा यक़ीं है अय फ़लक[2] तुमको,
किसी दिन आह का शोला जो मेरे दिल से निकलेगा।
—'शुजा' नारनौली

× × ×

न साग़र की तमन्ना है न मतलब रंगे महफ़िल से,
रहा करती है एक मस्ती मुझे कैफ़ीयते दिल से।
—'कलीम' औरई

× × ×

तुम अपने हुस्न की दाद आइने से किसलिये चाहो,
मेरी आंखों से देखो और फिर पूछो मेरे दिल से।
तसव्वर में तो 'अनवर' हम नज़ारा कर ही लेते हैं,
छुपें आंखों से वह लेकिन छुपेंगे किस तरह दिल से।
—'अनवर' साहब

× × ×

ग़लत बिल्कुल ग़लत कहना है दिल मिलता है मुशकिल से,
नज़र से जब नज़र मिलती है दिल मिलता है ख़ुद दिल से।
—'ज़हूर' उरई

× × ×

---

1—अंतिम समय, 2—आकाश।

यही दिल है तो फिर ख़ूने तमन्ना की शिकायत क्या,
यही तुम हो तो फिर निकलेगी क्यों हसरत मेरे दिल से।
किसी की याद ने फिर चुटकियां 'बेताब' लीं दिल में,
अभी फ़ुर्सत मिली थी एक ज़रा बेताबिये दिल से।
—'बेताब' कालपी

× × ×

उन्हें जब चाहता हूँ देखता हूँ,
यह आइना है मेरा दिल नहीं है।
—'एहसान' साहब

× × ×

तरीक़े[1] वफ़ा में यह ग़ाफ़िल नहीं है,
मेरा दिल कोई आपका दिल नहीं है।
तुम्हारी मोहब्बत के काबिल नहीं है,
नहीं है, नहीं, हां मेरा दिल नहीं है।
वह आयेंगे घर पर बुलायेंगे घर पर,
यक़ीं मुझको अब हज़रते दिल नहीं है।
करूँ क्या ज़माने की शिकवा शिकायत,
मेरी राय में जब मेरा दिल नहीं है।
—'शातिर' इलाहाबादी

× × ×

1—रास्ता।

ख़याल ईज़ाय[1] दुशमन का भी आ जाय नहीं मुमकिन,
कि हर सीने में हम मस्तूर[2] अपना दिल समझते हैं।

—'जिगर' बरेलवी

× × ×

याद आयेगी हमेशा आप की महफ़िल मुझे,
आप से होकर जुदा जीने न देगा दिल मुझे।

—'आज़र' जालंधरी

× × ×

खा गई है शोख़[3] चश्मों की नज़र इसको ज़रूर,
ढूँढने से वरना मिल जाना था मेरा दिल मुझे।

—'फ़ुरत' जम्मूई

× × ×

मैं और अपनी ज़िन्दगी, बरबाद कर लेना ग़लत,
तेरा अन्दाज़े-तग़ाफ़ुल[4] कर गया बददिल मुझे।

—'आरज़ू' दुबाइवी

× × ×

हम को दुनिया का पलट देना कोई मुशकिल नहीं,
जोश पर हैं जज़्बये-सादिक़[5] हमारे दिल में है।

---

१—दुख, २—छिपा हुआ, ३—चंचल नेत्र, ४—ग़ाफ़िल होने का ढंग, ५—सच्ची उमंग।

बेख़ुदी में खुल गये हैं राज़ हाये मार्फ़त[1],
एक हक़ीक़त आशना जल्वा हमारे दिल में है।

—'इर्शाद' मेरठी

× × ×

तुझ से क्यों पूंछू मैं क़ासिद हाल उस दिलदार[2] का,
वह है मेरी आंखों के पर्दों में, वह मेरे दिल में है।

—'इन्द्र' ग्वालियारी

× × ×

हसरतों को पीस डाला आसिआये-चर्ख़[3] ने,
अब तो दिल की हसरतों का ख़ून ही बस दिल में है।

—'शर्मा' मेरठी

× × ×

क्या ज़रूरत है कि जायें सैरे दुनिया के लिये,
सारे आलम का तमाशा ख़ुद हमारे दिल में है।
तू नज़र में फिर रहा है क्या मुझे दरकार है,
दोनों आलम की ख़ुशी इस वक्त मेरे दिल में है।

—'जौहर' बुलन्दशहरी

× × ×

दफ्न हैं इसमें हज़ारों रंजो, ग़म, हिरमानो[4] यास,
एक अजब हसरत भरी तुर्बत हमारे दिल में है।

—'दिलावर' साहब

× × ×

---

१—ईश्वरीभेद, २—प्रियतम, ३—आसमान की चक्की, ४—दुख।

क्यों मेरी ग़ीबत[1] में शिकवे ग़ैर से करते हो तुम,
सामने मुंह पर कहो जो कुछ तुम्हारे दिल में है।
—'रौशन' पानीपती

× × ×

मैं उसी का हूँ, उसी का हूँ, उसी का हूँ गुलाम,
हाँ वह मेरे दिल में, मेरे दिल में, मेरे दिल में है।
मुझ पर इसका कुछ असर हो या न हो सुनता हूँ मैं,
तू कहे जा शौक़ से नासेह[2] जो तेरे दिल में है।
इश्क़े सादिक़ जब से उस आइना रू से है हमें,
हम हैं उसके दिल में 'शाकिर' वह हमारे दिल में है।
—'शाकिर' ग्वालियारी

× × ×

अय मुसाफ़िर ठोकरें क्यों खा रहा मंज़िल में है,
ढूंढ़ता फिरता है जिसको वह तो तेरे दिल में है।
अब उठा दो बीच से पर्दा नियाज़ो-राज़[3] का,
है वही मेरी ज़बां पर जो तुम्हारे दिल में है।
—'मुनव्वर' लखनवी

× × ×

---

१—पीठ पीछे बुराई करना, २—नसीहत करने वाला, ३—प्रेम की भेद भरी बातें।

क्या बतायें हम कि वह किस इश्क़ की मंज़िल में है,
ढूढ़ती हैं जिसको आंखें वह हमारे दिल में है।
—'रौनक' देहलवी

× × ×

क़त्ल करके पूछते हैं क्या दिले बिस्मिल में है,
और क्या है एक हुजूमे हसरतो ग़म दिल में है।
—'नीलम' सिकन्दराबादी

× × ×

दर्द था जब तक मेरे दिल में मुझे एहसास था,
दर्द अब दिल में नहीं या यह कहूँ कि दिल नहीं।
—'अहसान' भुसावली

× × ×

हो कशिश दिल में तो आजाते हैं खिंच कर इस तरह,
गर न हो जज्बे मुहब्बत दिल में तो कुछ दिल नहीं।
—'अरोह' अमरावती

× × ×

दिल अगर जाता रहा इसका नहीं कुछ हमको ग़म,
दिल के बदले दाग़ है फिर क्या हुआ गर दिल नहीं।
—'जज्ब' साहब

× × ×

रंजो ग़म की बस्तियाँ ही बस्तियाँ आईं नज़र,
दिल की दुनिया में कहीं शक्ले निशाते[१] दिल नहीं।

—'राग़िब' बुरहानपुरी

X X X

ग़ैर का पहलू ख़दंगे नाज़ के क़ाबिल नहीं,
और की क्यों जुस्तजू है क्या मेरा दिल, दिल नहीं।

—'शरफ़' अमरावती

X X X

आरज़ू का घर नहीं उम्मीद की मंज़िल नहीं,
मदफ़ने[२] अरमां है पहलू में हमारे दिल नहीं।

—'शौक़' साहब

X X X

सदके जायें आज ही मालूम होना था हमें,
मुद्दतें गुज़रीं हैं पहलू में हमारे दिल नहीं।

—'फ़ातेह' मियांवली

X X X

एक जहाने आरज़ू आबाद होकर मिट गया,
यानी एक सहरा[३] का टुकड़ा है हमारा दिल नहीं।

—'कौसर' साहब

× × ×

---

१—आनन्द, २—दफ़्न होने की जगह, ३—जंगल।

दिल अमानत जिसकी हो उसको ही 'मक़बूल' दीजिए,
ग़ैर को देने के क़ाबिल यह तुम्हारा दिल नहीं।

—'मक़बूल' साहब

× X ×

अब उन्हीं की फ़िक्र है, इसको उन्हीं की याद है,
अब उन्हीं का दिल समझिये अब हमारा दिल नहीं।

—'नासिक़' साहब

× X ×

जो शहीदे नाज़ है मिन्नत[1] कशे क़ाबिल नहीं,
एक सीने में कहीं देखे गये दो दिल नहीं।

—'नैसां' अकोलवी

× X ×

देखकर उनकी अदाओं को हुआ यह बेक़रार,
अब मेरे बस में मेरे क़ाबू में मेरा दिल नहीं।

—'यावर' साहब

× X ×

खलिश से बेक़रारी से पड़ी है जान मुश्किल में,
किसी का तीर है या है किसी की आरज़ू दिल में।
मिटाओ शौक से इसको, जलाओ शौक से इसको,
यह रखना याद तुम आकर रहोगे फिर इसी दिल में।

---

[1]—एहसान उठाना

नज़र आये न फिर क्यों लरज़रे ग़म हर तरफ मुझको,
किसी को आरज़ू है छावनी डाले हुये दिल में।
ख़ालिश में क्या मज़ा है क्या खटक में लुत्फ है इसके,
कि ख़ारे आरज़ू को शौक से रखते हैं सब दिल में।
'ज़या' मुझको शबे-फुर्क़त[1] की तारीकी[2] का डर क्या है,
ज़ियाये हुस्न जानां की झलक है जब मेरे दिल में।

—'ज़या' देवानन्दपुरी

× X ×

क्या क्या हैं जब्र इश्क़ में क्या क्या हैं सख्तियां,
यह मुझ से पूछिये यह मेरे दिल से पूछिये।
रक्खी मुदाम[3] ख़ारे तमन्ना ने छेड़ छाड़,
इस के मज़े को आबलये दिल से पूछिये।

—'अख़्तर' नगीनवी

× X ×

आगे आगे हसरतें सब ख़ाक उड़ाती जाती हैं,
पीछे पीछे दोशे[4] हसरत पर जनाज़ा दिल का है।
अय ज़मीने कब्र थोड़ी और वसअत[5] चाहिये,
एक लाशा मेरा है और एक मेरे दिल का है।

—'नासेह' साहब

१—विरह की रात, २—अंधेरा, ३—हमेशा, ४—कंधा, ५—फैलाव।

हुआ है सामना दिल से मेरे मिज़गाने[1] क़ातिल का,
हज़ारों नश्तर हैं और एक है आबला दिल का।
किया एक वार में निगाहे नाज़ क़ातिल ने,
निकाला हौसला कैसा मेरे अरमां भरे दिल का।
तुम्हारे ग़मज़ओ अशवा[2] अदाओ नाज़ रहज़न[3] हैं,
यही चारों लुटेरे लूटते हैं काफ़ला दिल का।
तेरा तीरे नज़र आकर जिगर में रुक गया ज़ालिम,
तड़प कर रह गया सीने में मेरे हौसला दिल का।

—'नाज़िम' साहब

× X ×

कोई हसरत है न हसरत से है कुछ हासिल मुझे,
सोचता हूँ या इलाही क्यों मिला है दिल मुझे।
मैंने नाज़े हुस्न उठाया और उसने बारे इश्क़,
मैं दुआ देता हूँ दिल को कोसता है दिल मुझे।
यह वफ़ादारी ज़माने के वफ़ादारों की है,
उनका दामन थामते ही छोड़ बैठा दिल मुझे।

—'अहसन' साहब

× X X

दोआयें देते हैं दिल से समझ लो दिल में तुम भी कुछ,
हिसाबे दोस्तां दर दिल[4] फ़क़त है फ़ैसला दिल का।

---

१—बरौनी, २—बाँके अदाएँ, ३—डाकू, ४—मित्रों का हिसाब दिल में।

निकल जाये अभी अरमान क़ातिल तेरे बिस्मिल का,
पड़े गर हाथ पूरा तो हो पूरा हौसला दिल का।
शबे तारीके गेसू[1] में दिखा कर मांग कहते हैं,
इसी रस्ते में लुट जाता है देखो काफला दिल का।
तड़पने की न दी दम भर भी मोहलत मुझ को क़ातिल ने,
न निकलाहाय बाद-अज़-क़त्ल[2] भी कुछ हौसला दिल का।
बहुत फ़रहाद और मजनूं के तो किस्से सुने होंगे,
कभी बहरे-ख़ुदा[3] सुन लीजिये किस्सा मेरे दिल का।
यही ग़ोग़ा मचा है कूचये काकुल में बरसों से,
इधर से बच के बस जाने न पाये काफ़ला दिल का।
न मुंह को फेरिये बहलाइये मुझको न बातों में,
जो छाड़ा है तो कुछ सुन लीजिये किस्सा मेरे दिल का।
गले पर फेर खंजर शौक से बहरे ख़ुदा अब तो,
हुआ जाता है ख़ूं पहलू में क़ातिल हसरते दिल का।
मेरे नालों को सुन सुन कर के फरमाते हैं लोगों से,
असर होने लगा है इस की कुछ बेतावियें दिल का।
सदाये[4] नाला बरपा है रवां आंखों से आंसू हैं,
निकलता आज शायद दम है अपनी हसरते दिल का।

---

१—केश, २—क़त्ल के बाद, ३—ख़ुदा के वास्ते ४—आवाज़।

'अहद' यह तिल्मिलाती कौंधती बिजली जो है अक्सर,
उड़ाया ढंग इसने भी मेरी बेताबिये दिल का।
—'अहद' साहब

× × ×

कुछ खटकता तो है पहलू में मेरे रह रह कर,
अब ख़ुदा जाने तेरी याद है, या दिल मेरा।
—'जिगर' मुरादाबादी

× X X

इसको देंगे ग़म उठाने के लिए मुश्किल से हम,
दिल न होगा, तो तुम्हें चाहेंगे फिर किस दिल से हम।
दिल नहीं मिलता जो दिल से तो यह मिलना कुछ नहीं,
आप भी उस दिल से मिलिये, मिलते हैं जिस दिल से हम।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

ग़म है क्या मिट गया हस्ती से अगर दिल अपना,
दिल जो सच पूछिये था भी इसी क़ाबिल अपना।
याद है ख़ूब हमें गो कि ज़माना गुज़रा,
अब जहां दाग़ है पहले था वहीं दिल अपना।
ज़ीनते पहलुये ग़मर्गी[1] था मगर वाये नसीब,
वक्फ़े तीरे निगहे नाज़ हुआ दिल अपना।

---

१—दुखी।

थे अज़ल ही से मुक़द्दर[1] में ग़मो रंजो अलम,
राहतो ऐश का तालिब है अबस[2] दिल अपना।
हम ने समझाया बहुत इश्क़ का अंजाम उसे,
उस तरफ़ से न फिरा, पर न फिरा दिल अपना।
हम जिसे दोस्त समझते थे रहे उल्फ़त में,
आज दुश्मन नज़र आता है वही दिल अपना।
थी कभी सोहबते अहबाब मगर अब 'मोहसिन',
अब न वह दोस्त, न हम हैं, न वह दिल अपना।

—'मोहसिन' इलाहाबादी

× × ×

कूचये क़ातिल में ढूंढ़े से पता मिलता नहीं,
हाय वह नाज़ों का पाला है हमारा दिल कहां।
अब 'ग़नी' मैं पहले ही नज़रे मोहब्बत कर चुका,
ढूंढ़ता है दिल को वह पहलू में लेकिन दिल कहां।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

अपने जीने का सहारा तेरा बिस्मिल समझा,
तीर जो रह गया सीने में उसे दिल समझा।

---

१—भाग्य २—बेकार।

राहे उल्फ़त में क़दम रखने से पहले मैंने,
दिल को समझाया बहुत पर न मेरा दिल समझा।

—'मोहसिन' इलाहाबादी

× × ×

राह का चलना उधर दुश्वार मंज़िल ने किया,
और इधर बेताब मुझको हसरते दिल ने किया।
वार जब तलवार का बेरहम क़ातिल ने किया,
सामना फ़ौरन तड़प कर ग़म भरे दिल ने किया।
आप तो आशिक़ हुए इलज़ाम आया मेरे सर,
मुफ़्त में बदनाम मुझको हज़रते दिल ने किया।
इश्क़ दुशमन और फिर दिन रात की आहो फ़ुग़ां,
आप को रुसवाये-आलम[1] आप के दिल ने किया।
उज्र बेदादो सितम की आपको हाजत नहीं,
मैं इसे ख़ुद जानता हूँ जो किया दिल ने किया।
सब को देखा अपनी अपनी मौत से डरते हुये,
बढ़कर इस्तक़बाल[2] नावक का मेरे दिल ने किया।
जानते हैं यह भी कोई चुल्बुला माशूक़ है,
उनको गिरवीदा[3] हमारी शोख़िये दिल ने किया।

---

१—संसार में बदनाम, २—स्वागत, ३—लुभाना।

अब खुदाई भर की मुझ पर उंगलियां उठने लगीं,
किस कदर रुसवाये ग़म बेताबिये दिल ने किया।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

निगाहे शौक अपनी पड़ गई जब रूये कामिल पर,
वही नक्शा उतर आया हमारे सफ़हये दिल पर।
ज़याये-हुस्न[1] रूये दोस्त की पूछो न कैफीयत,
उधर उट्ठी नक़ाये हुस्न इधर बिजली गिरी दिल पर।
मज़ा आता है जिसको दिल के तड़पाने में अय 'मोहसिन',
उसे क्या रहम, आयेगा मेरी बेताबिये दिल पर।

—'मोहसिन' इलाहाबादी

× × ×

राहे उल्फ़त में नज़र आती नहीं मंज़िल मुझे,
अब खुदा जाने कहां ले जाय मेरा दिल मुझे।
जब से हाथ आया हज़ारों ग़म हुए हासिल मुझे,
कोई वापस कर गया यह कह के मेरा दिल मुझे।
शुक्र करता हूँ कि समझा तुमने इस क़ाबिल मुझे,
क्या कहा फिर तो कहो देदो तुम अपना दिल मुझे।
ये सबब ज़िक्रे वफ़ाओ इश्क करता है कोई,
आप चाहें या न चाहें चाहता है दिल मुझे।

---

1—सुन्दरता की रोशनी।

जान देने के अलावा कुछ नहीं दरमाने[1] इश्क़,
मशविरा[2] देता है घबरा कर यह मेरा दिल मुझे।
या खुदा मैं सख्तियां झेलूं कहां तक इश्क में,
क्या इसी के वास्ते तू ने दिया है दिल मुझे।
क्या मुहब्बत में नई कोई मुसीबत आयेगी,
आज यह कैसी सदायें[3] दे रहा है दिल मुझे।
कल तो कहते थे 'ग़नी' से कुछ ज़रूरत ही नहीं,
आज क्यों तुम कह रहे हो दे दो अपना दिल मुझे।
—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

हुस्न की तासीर ने ऐसी बदल दी फितरतें,
उनका पत्थर का जिगर फौलाद का दिल हो गया।

× X ×

कुंज-तनहाई[4] में कोई भी नहीं अपना शरीक,
दिल को मैं तस्कीन देता हूँ शबे ग़म दिल मुझे।
—'मोहसिन' इलाहाबादी

× × ×

करो इंसाफ़ नावक सीनये बिस्मिल में रहने दो,
यह जिसके दिल की हसरत है उसी के दिल में रहने दो।

---

१—दवा,२—सलाह ३—आवाज़, ४—एकान्त

कटी कैसी शबे-ग़म[1] और अज़्वे-दिल[2] से क्या गुज़री,
हम अपने दिल में रहने दें, तुम अपने दिल में रहने दो।

—'वसी' काकोरवी

× × ×

सीने पे हाथ धरते ही कुछ दम पे बन गई,
लो जान का अज़ाब हुआ दिल को थामना।

× × ×

काफ़िर है कौन हम में से 'मोमिन' फिरे है तो,
काबे के आस पास तो मैं दिल के आस पास।

× × ×

न तन हो के तेरे बिस्मिल के टुकड़े टुकड़े हैं,
है पाश-पाश[3] अगर दिल के टुकड़े टुकड़े हैं।

—'मोमिन' देहलवी

× × ×

आज़ारों ज़ख्म सहने के काबिल बना दिया,
दिल की लगी ने दिल को मेरे दिल बना दिया।
हुस्ने वफ़ा ने आशिके कामिल बना दिया,
दिलवर को भी फ़रेफ़्ये[4] दिल बना दिया।
देखे तो कोई सानये[5] कुदरत का यह कमाल,
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया।

---

१—दुख की रात, २—दिल को कशिश, ३—टुकड़े टुकड़े, ४—दीवाना, ५—कारीगरी।

तीरे निगाहे नाज़ से अब खुल गया यह राज़,
एक क़तरा खून का था जिसे दिल बना दिया।

—'ग़नी' इलाहाबादी

× × ×

निहां[1] जब हुआ माहे कामिल हमारा,
तड़पता रहा देर तक दिल हमारा।
न चौंके हुज़ूर आप सोते थे ग़ाफिल,
पुकारा किया रात भर दिल हमारा।
न थी आस फिरने की जो उस गली से,
गले मिल के रुखसत हुआ दिल हमारा।
जब आकर किसी ने उठाया तो उट्ठे,
जहां लेके बैठा हमें दिल हमारा।
तेरी गर्मियाँ जब कभी याद आईं,
दमे-सर्द[2] भरने लगा दिल हमारा।
न लें गर हसीनों को है बारे-ख़ातिर[3],
मुबारक रहे यह हमें दिल हमारा।

—'ताअश्शुक़' लखनवी

× × ×

इश्क़ के सदमे उठाने को जिगर भी चाहिये,
क्यों हुआ मेरी तरह 'आतिश' किसी का दिल कहां।

× × ×

१—छिपा, २—ठंडी साँसें, ३—दिल का बोझ।

'आतिश' उनसे नहीं नज़्ज़ारे का लपका छुटता,
मेरी आँखों को है शायद कि मेरा दिल भारी।

× × ×

शब को दम दे दे के ले जाता है कूये यार में,
मैं तो था ही मुझसे भी मुर्शिद[1] मेरा दिल होगया!

—'आतिश' लखनवी

× × ×

ता सहर[2] की है फ़ुग़ां जान के ग़ाफ़िल मुझको,
रात भर आज पुकारा है मेरा दिल मुझको।
बारे हुस्न आप का लैला से उठाया न गया,
न लिया क़ैस ने जिसको वह मिला दिल मुझको।
ग़ैर फिर ग़ैर हैं आखिर हैं फिर अपने, अपने,
याद करता है तेरे पास मेरा दिल मुझको।
यार ख़ातिर ही अगर है तो इनायत कीजै,
आप को हुस्न मुबारक हो मेरा दिल मुझको।

× × ×

हम असीरों[3] से इश्क़ कामिल है,
हर क़फ़स[4] चाक सूरते दिल है।
हँसते हो चाक हबीब पर नाहक़,
यह तक़ाज़ाये वहशते दिल है।

---

१—गुरू, २—सुबह तक, ३—क़ैदी, ४—पिंजड़ा।

मेरे लाशे पर आके वह बोले,
उस तरफ़ बैठिये जिधर दिल है।
शबे फ़ुर्क़त में कोई पास नहीं,
एक वस मैं हूँ एक मेरा दिल है।
मुझ में ताक़त कहां जो लूं करवट,
शफ़क़ते[1] बेक़रारिये दिल है।
मैं तो निकला तुम्हारे कूचे से,
आज अकेला मेरा वहां दिल है।
मिल रहे हैं तमाम जुज़्वे[2] बदन,
किस क़दर बेक़रारिये दिल है।
तुमको क्या क़द्र मेरे रोने की,
अश्क[3] हर एक पारये[4] दिल है।
फ़र्श गोया है आबगीने[5] का,
उस गली में वह मजमये दिल है।
नामावर ग़र्क़[6] है पसीने में,
ख़त में मज़मून सोज़िशे[7] दिल है।
आशिक़ों का कभी न दख़ल हुआ,
घर तेरा है कि ख़ानये दिल है।

---

१—कृपा, २—हिस्सा, ३—आंसू, ४—टुकड़ा, ५—शीशा, ६—डूबा हुआ, ७—जलन।

हूँ वह बेखुद कि जब कोई बोला,
मैं यह समझा कि नालये दिल है।
अय 'ताअश्शुक' बयान क्या कीजे,
कुछ दिनों से जो हालते दिल है।

—'ताअश्शुक' लखनवी

× × ×

अब वह दरसे[1] इश्क़ में भूलेगा मुशकिल से मुझे,
जो मिला ग़म का सबक़ दीबाचये[2] दिल से मुझे।
उन किताबों पर कि जिनमें दर्ज थे असरारे[3] इश्क़,
हाशिया लिखना पड़ा ख़ूने रगे दिल से मुझे।
जो उड़ा ज़र्रा वह पहुँचा आसमाने इश्क़ पर,
हो गई मेराजे[4] ग़म बरबादिये दिल से मुझे।
खींच कर मैं आह क्यों करता यह मेरी आह थी,
आपकी आवाज़ आई पर्दये दिल से मुझे।

—'नूह' नारवी

× × ×

काबा पहुँचा तो क्या हुआ अय शेख़[5]
सइय[6] कर टुक पहुंच किसी दिल तक।

× × ×

---

१—सबक़, २—भूमिका, ३—भेद, ४—पराकाष्ठा, ५—पंडित, ६—कोशिश।

नज़र मुतलक़ नहीं हिज्रां[1] में उसको हाल पर मेरे,
मेरा दिल उसके ग़म में गोया उसका दिल है क्या जाने।
—'मीर' देहलवी

× × ×

रफ्ता रफ्ता जज्बे उल्फ़त ने दिखाया यह असर,
उनको भी मुज़्तर[2] मेरी बेताबिये दिल ने किया।
किस का लूं मैं 'महशर' किस के सर इल्ज़ाम दूं,
मुझ को रुसवा खुद मेरी बेताबिये दिल ने किया।

× × ×

हश्र कहते हैं जिसे नक़्शा तेरी महफ़िल का है,
रश्के खुर्शीदे-क़यामत[3] दाग़ मेरे दिल का है।
शमां का आलम नज़र आता है जो वक्ते सहर[4],
बस वही आठों पहर नक़्शा हमारे दिल का है।
है निगाहे शौक़ को तो काम अपने ज़ौक से,
हाल क्या मालूम इसको क्या किसी के दिल का है।

× × ×

जिन्हें हम बेवफ़ा, बेदादगर, क़ातिल समझते हैं,
उन्हीं को बाइसे आरामे जानो दिल समझते हैं।
जिगर में जो हैं दाग़ एक मेहर्बां की मेहरबानी से,
उन्हें हम आफ़ताबे आसमाने दिल समझते हैं।

---

१—विरह, २—बेचैन, ३—सूर्य, ४—सवेरा।

वफ़ा के नाम पर क़ुर्बान होने वाले दुनियां में,
न जां को जां समझते हैं न दिल को दिल समझते हैं।
कलीसा,[१] बुतकदा,[२] काबा सब उनकी जलवा-गाहें[३] हैं,
मगर इन सब से बेहतर हम हरीमे दिल समझते हैं।
मोहब्बत में किसी पर क्यों रखें इल्ज़ाम अब 'महशर',
हम अपनी जान का दुश्मन ख़ुद अपना दिल समझते हैं।

× × ×

निगाह अहले महशर की लगी हैं मेरे क़ातिल पर,
क़यामत में क़यामत पर क़यामत है मेरे दिल पर।
निकलना वह हरीमें नाज़ से अँगड़ाइयाँ लेकर,
वह बर्के तूर का गिरना इसी के एमनें[४] दिल पर।
निगाहे नाज़ से कल्बो जिगर को छेदने वाले,
रहेंगे नक्श तेरे कारनामे सफ़हये दिल पर।
मेरी फरियाद से अर्ज़ो समा[५] क्या अर्श हिलता है,
मगर ज़ालिम असर होता नहीं कुछ भी तेरे दिल पर।

× × ×

बहार आई कली चिटकी खिले गुल ख़ुश हवा गुलचीं[६],
शिगुफ्ता देखिये कब तक हमारा गुञ्चये दिल हो।

---

१—गिरजा, २—मंदिर, ३—ज्योति-मंदिर, ४—अरब की एक घाटी का नाम है, ५—ज़मीन और आसमान, ६—माली।

यही है इश्क़ का हासिल यही उल्फ़त का मक़सद है,
की मेरा दिल तुम्हारा दिल, तुम्हारा दिल मेरा दिल हो।

—'महशर' लखनवी

× × ×

मुफ़्सा न दे ज़माने को परवरदिगार दिल,
आशुफ़्ता[1] दिल, फ़रेफ़्ता[2] दिल, बे क़रार दिल।
हर बार मांगती है नया चश्मे[3] यार दिल,
एक दिल के किस तरह से बनाऊँ हज़ार दिल।
पहले पहल की चाह का कीजे न इम्तहान,
आना तो सीख ले अभी दो चार बार दिल।
आशिक हुए वह जब से अदू[4] पर यह हाल है,
रख रख के हाथ देखते हैं बार बार दिल।

—'दाग़' देहलवी

× × ×

हम न कहते थे न जाओ 'नूह' बज़मे नाज़ में,
उनकी सूरत पर फ़िदा सौ जान से दिल होगया।

× × ×

आगये पहलू में वह जान आगई,
वह गये पहलू से मेरा दिल गया।

—'नूह' नारवी

× × ×

१—परेशान, २—दिवाना, ३—आंख, ४—दुशमन।

मज़ा दोनों तरफ़ देगी तमन्ना इश्क़ कामिल में,
इधर यह दिल से निकलेगी समायेगी उधर दिल में।
हमारा मुद्दआ[१] तुम हो हमें दुनिया से क्या मतलब,
तुम्हें हमसे ग़रज़ है तुम छुपे बैठे रहो दिल में।
सहे हैं ज़ुल्म इतने बन गया हूँ दर्द का पुतला,
जो तोड़ा फूल गुलशन[२] में तो कांटा चुभ गया दिल में।
दोआये या असर पैदा करूँगा तोड़ कर दिल को,
दवाये दर्दे दिल मिल जायेगी टूटे हुये दिल में।
शराबे नाब[३] छोड़े 'बेख़ुद' मैख़्वार[४] क्या मुमकिन,
तसव्वुर[५] भी कभी तोबा का आ सकता नहीं दिल में।

—'बेख़ुद' देहलवी

× × ×

बताती है यह अश्कों[६] में हमारे ख़ून की सुरख़ी,
यहा है टूट कर आंखों के रस्ते आबला दिल का।

—'शफ़क़' इलाहाबादी

× × ×

आपका मिलना मेरा मिलना नहीं,
जिस किसी से मैं मिला दिल से मिला।
ऐसे मिलने से न मिलना ख़ूब है,
क्या मिला गर वह बुरे दिल से मिला।

१—सब कुछ, २—बाग़, ३—ख़ालिस, ४—शराबी, ५—ख्याल, ६—आंसू।

जिसको मिलने से हमैशा उज्र[1] था,
वह मेरे हसरत भरे दिल से मिला।
चोर ऐसा, मोख़बिर[2] ऐसा चाहिए,
मुझको दिलवर[3] का दिल से मिला।
मिलने वाले को मिला कर खाक में,
दिल तुम्हारा, ग़ैर के दिल से मिला।
अब है कुछ मिलने मिलाने का मज़ा,
आपका दिल 'नूह' के दिल से मिला।

—'नूह' नारवी

× × ×

कोई दम में बुझने वाला है चिरागे ज़िन्दगी,
अब नज़र आता है कुछ हमदर्द दर्दे-दिल मुझे।

—'हामिद' इटावी

× × ×

सैकड़ों मिलते, तो करता इनको भी तुम पर निसार,
एक दिल है, और इस दिल के अलावा दिल नहीं।

—'मदनी' कलकत्तवी

× × ×

तुम हमें भूलो, मगर हम याद से ग़ाफ़िल नहीं,
जिस तरह का दिल तुम्हारा है, हमारा दिल नहीं।

—'शौक़' सहसरामी

× × ×

1—इनकार, २—भेदिया, ३—प्रियतम।

तुमने लूटी, तुमने छीनी दौलते सब्रो सुकूं[1],
क्यों नहीं लेते इसे टूटा हुआ जो दिल भी है।

× × ×

मेहरबानी की नज़र शायद तुम्हारी हो गई,
किस लिए पहला सा वह अब इज़तिराबे[2] दिल नहीं।

× × ×

ग़म का झेलना मौक़ूफ़[3] बिल्कुल हो गया,
हम बहुत हैं मुतमइन[4] पहलू में जब से दिल नहीं।

× × ×

वह क्या समझें, वह क्या जानें, वह सब बातिल[5] समझते हैं,
हमीं कुछ दिल में क़द्रे आरज़ूये दिल समझते हैं।
वही कुछ काम आयेगा जिसे क़ातिल समझते हैं,
हम अपने दिल में इसको मुद्दआये दिल समझते हैं।
तरीक़ा भी कोई होता है इज़हारे मुहब्बत का,
समझते हैं तो इसको सिर्फ़ अहले दिल समझते हैं।

× × ×

लाख चाहा यह निकल जाये मगर निकला नहीं,
तीर उनका है हमेशा से हमारे दिल के पास।
वह नहीं आते न आयें कुछ भी इसका ग़म नहीं,
हर घड़ी रहता है तस्वीरे ख़्याले दिल के पास।

१—आनन्द, २—बेक़रारी, ३—बन्द, ४—इतमीनान, ५—झूठ।

गौर करने पर भी इसका राज़[1] कुछ खुलता नहीं,
टीस उट्ठा करती है क्यों रह रह के मेरे दिल के पास।
क्यों करें चश्मे-इनायत[2] क्यों बढ़ायें रस्मो[3] राह,
दिल वह मेरा ले गये अब क्या है मुझ बेदिल के पास।

× × ×

मुझ को अरमां रह गया, मुझ को तमन्ना रह गई,
दास्ताने दर्दे दिल सुनते कभी वह दिल से कुछ।
क्यों न मेरा दिल उड़ाकर दिल में वह महज़ूज़[4] हों,
सच है मिलती है हमेशा दिल को राहत दिल से कुछ।
हमसे वह कहता है जो कुछ हम तो करते हैं नहीं,
क्या कहें मजबूरे उल्फ़त हो गये हैं दिल से कुछ।
क्या बताऊं, प्यार करता हूँ तुम्हें किस दिल से मैं,
पूछ लो इस राज़ को तुम खुद ही अपने दिल से कुछ।
क़िस्सये दर्दे अलम शब न हो क्योंकर बैसर,
दिल भी कहता है जिगर से कुछ, जिगर भी दिल से कुछ।

× × ×

नज़र अपनी जिस फूल पर मैंने डाली,
हुआ मुझको धोका मेरा दिल यही है।
नहीं सुनते वह इससे उल्फ़त[5] का क़िस्सा,
मुहब्बत में बस किस्सये दिल यही है।

× × ×

१—भेद, २—कृपा दृष्टि, ३—मेलजोल, ४—सुश, ५—प्रेम।

हो गया मालूम अब आयेंगी इस पर आफ़तें,
किस लिये वह देखते हैं मेरे ही दिल की तरफ़।
बाल अगर पड़ जाय आइने में तो किस काम का,
आप क्यों देखें मेरे टूटे हुये दिल की तरफ़।

× × ×

उम्मीद मेरी खंजरे क़ातिल में रह गई,
त्या क्या तड़प तड़प के मेरे दिल में रह गई।
गूये वफ़ा जहां में कहीं नाम को नहीं,
जो कुछ भी थी वह सिर्फ़ मेरे दिल में रह गई।
हसरत निकल सकी, न निकाले से भी 'अज़ीज़',
यों वह दबी दबाई मेरे दिल में रह गई।

× × ×

तुम पर इस को निसार[1] करता हूँ,
यह मिटाना नहीं है क्या दिल का।
मिट गया आप के मिटाने से,
यह हुआ हाल इश्क़ में दिल का।
कुछ कहा, कुछ सुना नहीं जाता,
क्या सुनूं हाल, क्या कहूँ दिल का।

× × ×

---

१—निछावर।

वह मुहब्बत में मेरा क़ातिल है,
जिस को समझा था जान है, दिल है।
क्यों उन्हें मैं निकाल कर देदूं,
मेरे पहलू में एक ही दिल है।
जो न आये, न आये उल्फ़त में,
वह कोई जान, वह कोई दिल है।
मुझ को इंकार कब हुआ इस से,
मैं तो कहता हूँ, आप का दिल है।
हाल क्या पूछते हो तुम दिल का,
दर्दे उल्फ़त में मुब्तिला[1] दिल है।

× × ×

यह कहा यह कह के फिर पामाल[2] क़ातिल ने किया,
सारे आलम में मुझे रुसवा मेरे दिल ने किया।

× × ×

रंजो ग़म पाते न उल्फ़त में अगर क़ातिल से हम,
अपने दिल को थाम कर क्यों आह करते दिल से हम।
अब न आयेंगे पलट कर कूचये क़ातिल से हम,
मशविरा[2] यह पेशतर ही कर चुके हैं दिल से हम।
खुद बख़ुद अब तुम चले आये तो अब यह क्या कहें,
कर रहे थे याद फ़ुर्क़त[3] में तुम्हें किस दिल से हम।

१—दशा में पड़ जाना, २—पाँव से मलना, ३—विरह।

अब तक औरों पर ख़फ़ा होते कभी देखा नहीं,
है ख़ता दिल की, उन्हें जो चाहते हैं दिल से हम।
कैसे बतायें क्या बतायें क्यों मुहब्बत हो गई,
दिल यह हमसे पूछता है, पूछते हैं दिल से हम।
मर चुके मरना था जिस पर ख़त्म झगड़ा हो गया,
हाथ उठा बैठे ग़मे उल्फ़त में अपने दिल से हम।
क्यों सताया इस क़दर इश्को मोहब्बत ने 'अज़ीज़,
दिल अगर ठहरे तो इतनी बात पूछें दिल से हम।

—'अज़ीज़' मिर्ज़ापुरी

× × ×

देख कर गिरियां[1] निकाला अपनी महफ़िल से मुझे,
अश्कों[2] की सूरत गिराया आप ने दिल से मुझे।
उम्र भर अपना शरीके ग़म रहा है अय अजल[3],
नज़ाअ[4] में रुख़सत ज़रा हो लेने दे दिल से मुझे।
ज़ब्त गो दिल ने किया, लेकिन न आई दक सर्फ़ी,
दर्दे दिल ने उठ के शर्मिंदा किया दिल से मुझे।
वह मुक़द्दर[5] हैं मेरे दिल से, नहीं हैं दिल से साफ़,
दिल को है उनसे शिकायत, है गिला दिल से मुझे।

---

१—रोना, २—आंसू, ३—मौत, ४—अंतिम समय ५—भाग्य।

मेरी ख़ातिर तो वही था एक ठिकाना चैन का,
आप ने नाहक़ निकाला गोशये[1] दिल से मुझे।
—'सादिक़' इलाहाबादी

× × ×

हुई मालूम वजहे इज़्तिराबो शोरिशे-आलम[2],
यहां दिल है हर एक ज़र्रा, हर एक ज़र्रे में एक दिल है।
वह आईना हो, या हो फूल, तारा हो कि पैमाना[3],
कहीं जो कुछ भी टूटा, मैं यही समझा मेरा दिल है।
वह दिल लेकर हमें बेदिल न समझें उनसे कह देना,
जो हैं मारे हुए नज़रों के उनकी हर नज़र दिल है।
—'सीमाब' अकबराबादी

× × ×

तुम कभी आकर जो देखो तो कभी मालूम हो,
अब वह दुनियाये तमन्ना क्या मेरे दिल में नहीं।
कल यह रोना था कि लाखों आरज़ूयें दिल में हैं,
आज यह रोना है कोई आरज़ू दिल में नहीं।
—'बिस्मिल' इलाहाबादी

× × ×

१—कोना, २—सांसारिक हलचल, ३—प्याला।

बैठ कर उठना पड़ा है कूये[१] क़ातिल से मुझे,
है गिला इसका मेरी बेवाफ़िये दिल से मुझे।
किस अदा से कह दिया उसने, मेरा दिल फेर कर,
सख़्त नफ़रत हो गई, हसरत भरे दिल से मुझे।
बैठकर पहलू में लीं उसने ग़ज़ब की चुटकियां,
चैन अब मिलता नहीं बेवाफ़िये दिल से मुझे।
वह यह कहते हैं मेरा टूटा हुआ दिल देख कर,
"ऐश" साहब चाहते हैं आप इसी दिल से मुझे।

—"ऐश" इलाहाबादी

× × ×

फँसाया हुस्ने-आलमगीर[२] ने उनको भी मुशकिल में,
कि दिल एक एक के पहलू में वह एक एक के दिल में।
मदद अब इश्क़ सादिक़[३] फंस गये हम सख़्त मुशकिल में,
कि इतने नश्तरे ग़म हैं, रगें जितनी नहीं दिल में।
असर कुछ आप ने देखा हमारे जज़्बे कामिल का,
उधर छूटे कमां से और इधर तीर आ गये दिल में।
इधर आ कर ज़रा आँखों में आँखें डालने वाले,
वह लटका तो बता दे, जिससे दिल हम डाल दें दिल में।
ख़याले ज़ुल्फ़े-जानां[४] को जगह किस वास्ते दे दी,
मेरी उलझी हुई तक़दीर ने सुलझे हुये दिल

१—गली, २—संसार भर में सुन्दर, ३—उचा, ४—माशूक़ की

यह प्यारे नाज़, यह बांकी अदा, यह मोहनी सूरत,
समां सकते तो रख लेता, उठा कर मैं तुम्हें दिल में।
क्या अंधेर है, यह क्या ग़ज़ब है, क्या तमाशा है,
मिटाओ भी उसी दिल को, रहो भी तुम उसी दिल में।
तरीक़ा इस से आसाँ और क्या है घर बनाने का,
मेरी आग़ोश में आ कर जगह कर लीजिये दिल में।

—"नूह" नारवी

× × ×

अपनी मुट्ठी में मसल कर नाज़ से कहते हैं वह,
आ रही है बू मुहब्बत की तेरे दिल से मुझे।

—'वसीह' इलाहाबादी

× × ×

ग़ैर वाक़िफ़ हूँ क्या जब आप से वाक़िफ़ नहीं,
कौन है जो आशना[1] कर दे मेरे दिल से मुझे।

—'मंसव' बरेलवी

× × ×

पहले तो लेकर दिले पुर दाग़ कुछ देखा बग़ौर,
फिर यह पूछा प्यार करते थे इसी दिल से मुझे।

—'महशर' मिर्ज़ापुरी

× × ×

१—मित्र।

मुद्आये[1] ज़िन्दगी क्या पूछते हो बार बार,
सब तुम्हें मालूम है, जो कुछ हमारे दिल में है।
—'ज़ख्मी' लखनवी

× × ×

है क़वी उम्मीद[2] अपने इश्क़ कामिल से मुझे,
वह भी दिन आयेगा, वह चाहेंगे जब दिल से मुझे।
तुम ने अपना दिल तो वक्फ़े इश्के दुश्मन कर दिया,
लो यह मेरा दिल है, अब चाहो मेरे दिल से मुझे।
मंज़िले मक़सूद[3] तक क्या ख़ाक ले जाती उमीद,
हो चली थी यास[4] कुछ कुछ पहले ही दिल से मुझे।
हश्र[5] ही में जाकर इसका होगा "शैदा" फैसला,
मुझ से पहुँची है अज़ीयत[6] दिल को, या दिल से मुझे।
—'शैदा' जेवरी

× × ×

इश्को वफ़ा में काम के क़ाबिल बना दिया,
नाकामियों[7] ने दिल को मेरे दिल बना दिया।
यानी मुझे न हो किसी पहलू सुकूने इश्क़,
पहलू में ग़म ने दर्द भरा दिल बना दिया।
आख़िर को रंगे इश्क़ से ज़ाहिर हुआ यह राज़,
क़तरा था वह लहू का जिसे दिल बना दिया।

× × ×

१—सारांश २—पूरी आशा, ३—ठीक मंज़िल, ४—[illegible] ५—प्रलय, ६—दुख, ७—निराशा।

ज़ाहिरी लुत्फ़ो इनायात[1] का हासिल क्या है,
दिल से देखो तो खुले दर्द भरा दिल क्या है।
आप कह दें तो अभी सब को तसद्दक[2] कर दूं,
यह मेरी जान है क्या, और मेरा दिल क्या है।
नाम को इस में कुदूरत[3] रहे मुमकिन ही नहीं,
आइना है तेरी उल्फ़त का मेरा दिल क्या है।
दिल से जब क़द्र करो दिल की तो दिल है सब कुछ,
दिल से जब क़द्र नहीं दिल की तो फिर दिल क्या है।

× × ×

मोयस्सर लज़्ज़ते दर्दे जिगर मुश्किल से होती है,
मगर यह बात ऐसी है, कि पैदा दिल से होती है।
जो सच पूछो तो दुनियाये वफ़ाओ इश्क़ की रौनक़,
किसी से भी नहीं होती है लेकिन दिल से होती है।
नहीं पहलू में दिल तो किस तरह दिल में मोहब्बत हो,
मुहब्बत दिल में होती है तो पैदा दिल से होती है।
समझते हैं इसे अच्छी तरह हम भी समझते हैं,
इनायत दिल पे होती है, मगर किस दिल से होती है।
जो दिल की बात है वह दिल से लब पर आ नहीं सकती,
हमारी याद होती है, मगर किस दिल से होती है।

× × ×

---

१—कृपा, २—निछावर, ३—मैल।

हुआ जीना बहुत मुशकिल हमारा,
न वह हम हैं न अब वह दिल हमारा।
नहीं दिल अब किसी क़ाबिल हमारा,
कभी था सब के क़ाबिल दिल हमारा।
बतायें क्या, बस इतना जानते हैं,
किसी ने हम से छीना दिल हमारा।
उठाये किस तरह कोहे[1] मुसीबत,
कि नन्हा सा अभी है दिल हमारा।
यह पुतला है वफ़ा का या नहीं है,
ज़रा जाचें वह लेकर दिल हमारा।

× × ×

पड़ी है फूट मक़तल[2] में पसे-क़त्ल[3],
कहीं सर है कहीं है दिल हमारा।
वफ़ाओ इश्क़ से क्या हाथ उठायें,
तुम्हारे हाथ में है दिल हमारा।
कोई पूछे तेरी नीची नज़र से,
मिला मिट्टी में क्यों कर दिल हमारा।
वह कहते हैं मुहब्बत दिल्लगी है,
अभी तक देखते हैं दिल हमारा।

---

1—पहाड़, २—बलिवेदी, ३—क़त्ल के बाद।

मिलाओ दिल को मिट्टी में समझ कर,
हर एक ज़र्रा बनेगा दिल हमारा।
करें सब अहले-दिल[1] इस दिल की तौक़ीर[2],
नहीं है ऐसा वैसा दिल हमारा।
न देंगे दिल तुम्हें तो किस को देंगे,
तुम्हारे वास्ते है दिल हमारा।
कोई ख्वाहां[3], कोई इसका तलबगार[4],
तमाशा बन गया है दिल हमारा।
कहां दिल है यह क्या तुम पूछते हो,
जहां तुम हो वहीं है दिल हमारा।
मुहब्बत में हुई यह बात मालूम,
हमारा दिल नहीं है दिल हमारा।
हम अपनी बेकसी[5] पर रो दिये हैं,
हमें जब याद आया दिल हमारा।
दमे[6] बिस्मिल जो अय 'बिस्मिल' न तड़पे,
वही है, हां वही है, दिल हमारा।

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

॥ समाप्त ॥

---

१—दिलवाले, २—आदर, ३—चाहनेवाला, ४—ग्राहक, ५—मजबूरी, ६—तड़पते समय।

## सरस्वती-सदन की कुछ उतमोतम पुस्तकें

### १—विवाह समस्या अर्थात् स्त्री जीवन

[ लेखक—महात्मा गांधी ]

हिन्दू समाज का कोई भी स्त्री पुरुष इस पुस्तक को पढ़कर अपने दाम्पत्य जीवन को सफल बना सकता है और एक दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यों को समझ सकता है। महात्मा जी ने प्रत्येक लेख के एक एक शब्द में जादू का सा असर भर दिया है। पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) बारह आना।

### २—स्त्रियों के खेल और व्यायाम

तन्दुरुस्त रहने के उपाय, बिगड़ी हुई तन्दुरुस्ती सुधारने के उपाय, विवाह और सन्तान होने के बाद भी स्त्रियाँ तन्दुरुस्त और खूबसूरत कैसे रह सकती हैं, स्त्रियों के स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण और उसके सुधारने के भिन्न भिन्न तरीके, तन्दुरुस्ती बढ़ाने-वाली कसरतें इत्यादि कितने ही विषय हैं। पचीसों उपयोगी चित्र दिए गए हैं। मूल्य सजिल्द का २) दो रुपया।

### ३—सचित्र दाम्पत्य शास्त्र

स्त्री पुरुषों के दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी कोई ऐसा विषय इसमें नहीं छोड़ा गया है जिसके प्रत्येक पहलू पर गंभीरतापूर्वक विचार न किया गया हो। हिन्दी संसार विशेषकर नवयुवतियों के लिए जिन्होंने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया है यह पुस्तक पथ और सच्चे साथी का काम देगी। सजिल्द का २) दो

## ४—बिहारी-सतसई

प्रसिद्ध महाकवि बिहारी की सतसई पर सरल सरस टीका, टिप्पणी सहित सचित्र, सजिल्द मूल्य २।) सवा दो रुपये।

## ५—बिस्मिल की शायरी

हैरत में है कोई तो कोई पढ़ के दंग है।
'बिस्मिल' की शायरी में जो 'अकबर' का रंग है॥

आज सभी पत्रों में पाठक आँख फाड़ फाड़ कर बिस्मिल की रचनाएँ खोजा करते हैं। व्यंग कविताओं में इस समय 'बिस्मिल' अपना सानी नहीं रखते। उनकी वही दिल को फड़काने वाली पुरलुत्फ़, मज़ेदार कहकहे लगाने वाली सभी विषयों पर चुनी हुई कविताएँ इस पुस्तक में दी गई हैं। मूल्य सिर्फ १।।) रुपया

## ६—दर्दे-दिल

पुस्तक आपके हाथ में है।

## ७—बलिवेदी पर

इस पुस्तक में लाड़ले राजपूत-सपूतों की वीर गाथा कहानियों के रूप में दी गई हैं। एक एक बहादुर की वीरता और साहसपूर्ण कहानी पढ़कर हृदय में साहस, और बल पैदा होता है। जीवन में जागृति आती है उन वीर स्त्री पुरुषों के प्रति श्रद्धा और भक्ति से मस्तक झुक जाता है। सचित्र पुस्तक का मूल्य दस आने।

## ८—हमारे हरिजन

इस पुस्तक में हरिजन जातियों की गणना, उनकी संख्या और उनकी कठिनाइयों का वर्णन बड़ी खूबी से किया गया है। सचित्र पुस्तक का मूल्य सिर्फ ।≡) सात आना।

### ९—लाठी शिक्षक

हिन्दू जाति की जागृति के समय, प्रत्येक हिन्दू बालक को स्वस्थ, हृष्ट पुष्ट और लाठी आदि चलाने में दक्ष होना चाहिये। लाठी चलाना सिखाने वाली अबतक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये यह सचित्र अद्वितीय पुस्तक प्रकाशित की गई है मूल्य ।।।) बारहआना।

### १०—अछूत भक्त

चित्त में शान्ति और परमेश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न करने वाली भगवद्भक्त अछूतों की प्रेममयी, सरस, पावन, कथायें। सचित्र पुस्तक का मूल्य ।।) आठ आना।

### ११—पौराणिक कथायें

इस पुस्तक में जगह जगह चित्र देते हुए बड़े रोचक ढङ्ग से सरल, शिक्षाप्रद पौराणिक कथायें लिखी गई हैं। मूल्य ।≈)

### १२—ऐतिहासिक कहानियाँ दो भाग

यह पुस्तक दो भागों में है। पुस्तक में रोचक और सरल भाषा में भारत के महापुरुषों के संक्षिप्त में जीवन चरित्र और उनके जीवन की वे रोचक घटनाएं दी गई हैं जिनसे वे महापुरुष हो गये हैं। सचित्र पुस्तक मूल्य प्रत्येक भाग का ।≈)

### १३—भारत के मशहूर स्थान

इस पुस्तक में भारत के मुख्य २ ऐतिहासिक, दर्शनीय स्थानों का उनकी विशेषताओं सहित वर्णन दिया गया है। मूल्य ।=)

### १४—जमीन आसमान की बातें

इस शिक्षाप्रद सचित्र पुस्तक को बच्चे बड़े अचरज और कौतूहल से पढ़ते हैं। मूल्य सिर्फ ।=)।। साढ़े छै आने

## १५—बालगीत

इस छोटी सी पुस्तक में बालकों के लायक, याद करने योग्य अच्छे चुने हुए उपदेश प्रद भजन कविताएं हैं। मूल्य ≡)

## १६—ग्राम्य अर्थमेटिक

यह हिसाब की पुस्तक प्राइवेट स्कूलों के बहुत काम की चीज है बड़े सरल ढंग से लिखी गई है। मूल्य सिर्फ ।) आना

## १७—अछूत के पत्र

प्रत्येक व्यक्ति के पढ़ने और मनन करने योग्य हिन्दू समाज के कलंक की करुण कहानी। बड़ी ही रोचक भाषा में पत्रों के रूप में लिखी गई है। मूल्य ।॥)

## १८—वे चारों

एक सामाजिक मौलिक सरस और रोचक प्रत्येक स्त्री पुरुष के पढ़ने योग्य उपन्यास। मू० ॥=)

## १९—एक रात

प्रत्येक स्त्री पुरुष के पढ़ने लायक पुरलुत्फ दिल में गुदगुदी पैदा करने वाला मजेदार एक मौलिक उपन्यास। पढ़ते ही तबियत फड़क उठती है। मूल्य ॥=) दस आना

## ये पुस्तकें बहुत शीघ्र प्रकाशित होंगी

१—तीरे नज़र २—महाकवि दाग की शायरी ३—तूफाने नूह ४—अकबर ५—चकबस्त ६—ज़ौक ७—गालिब ८—ज़ज़्बाते बिस्मिल।

इनके सम्पादक व लेखक प्रसिद्ध कवि 'बिस्मिल' इलाहाबादी होंगे। जिनकी 'बिस्मिल की शायरी' ने धूम मचा रखी है।